वर्ष : 35, अंक : 137, (जनवरी–मार्च, 2013)

राजभाषा भारती

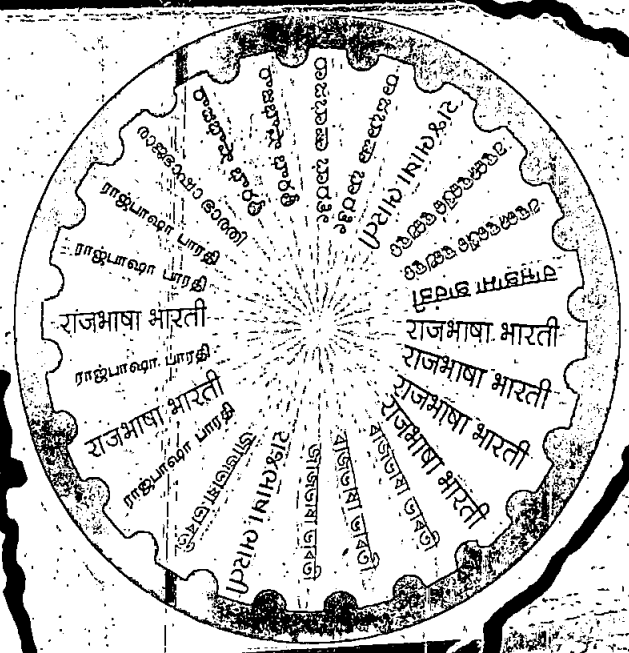

राजभाषा विभाग,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार,
नई दिल्ली

जन जन की भाषा है हिंदी

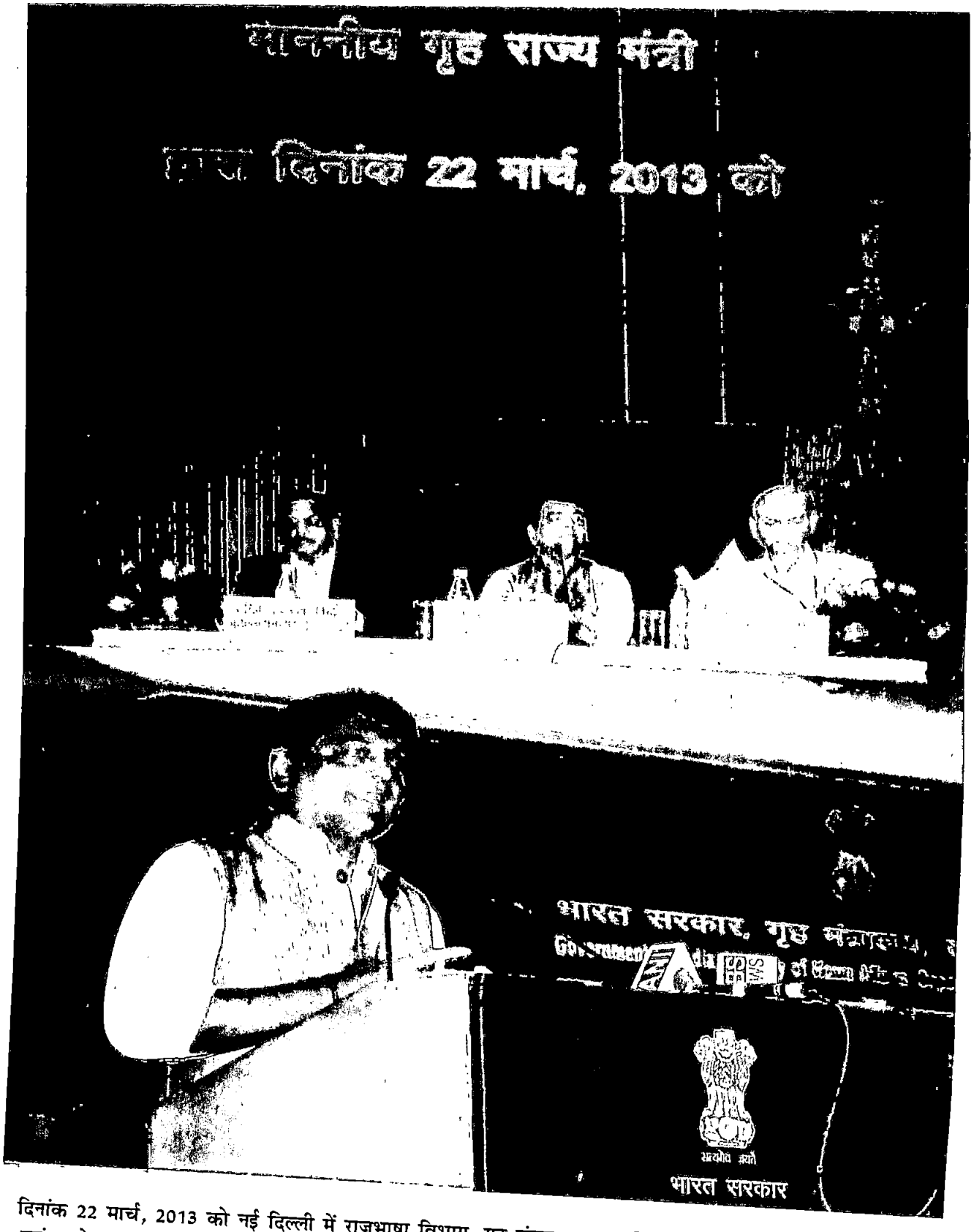

दिनांक 22 मार्च, 2013 को नई दिल्ली में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी रिपोर्ट के प्रबंधन हेतु आन लाइन सूचना प्रबंधन प्रणाली का प्रमोचन माननीय गृह राज्य मंत्री श्री रतनजीत प्रताप नारायण सिंह जी द्वारा किया गया । इस अवसर पर मंच पर हैं (ऊपर) सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, श्री अरुण कुमार जैन जी, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री आर एन पी सिंह जी तथा संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग श्री डी के पाण्डेय, जी । (नीचे) माननीय गृह राज्य मंत्री अपना आशीर्वाद देते हुए ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे

—निराला

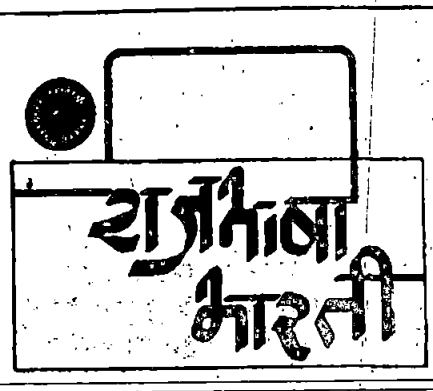

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 35

अंक : 137

(जनवरी–मार्च, 2013)

❑ संरक्षक :
अरुण कुमार जैन आई.ए.एस.
सचिव, राजभाषा विभाग

❑ परामर्शदाता :
डी.के. पाण्डेय
संयुक्त सचिव (रा.भा.)

❑ संपादक :
हरिन्द्र कुमार
निदेशक कार्यान्वयन
दूरभाष : 011-23438129

❑ सहायक संपादक :
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 011-23438137

❑ निःशुल्क वितरण के लिए :
पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

❑ अपना लेख एवं सुझाव भेजें :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
एन डी सी सी-II भवन, चौथा तल,
बी विंग, जय सिंह रोड,
नई दिल्ली-110001
ईमेल–patrika–ol@.nic.in
पोर्टल—www.rajbhasha.gov.in.

विषय-सूची

			पृष्ठ
❑	संपादकीय		(iii)
❑	चिंतन		
	1. आज के बदले परिवेश में राजभाषा हिंदी	–राज बहादुर गुप्ता	1
	2. शब्दकोष निर्माण	–डॉ. आरसु नेहरा	6
	3. भाषा सुसंस्कारों की जननी	–डॉ. दिनेश कुमार	11
	4. भाषा का सरलीकरण	–इरफान अहमद खान	13
	5. पश्चिम तथा पूर्वी हिंदी में अंतर	–रीता भट्टाचार्य	16
❑	साहित्यिकी		
	6. सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति चित्रण	–प्रा. रुपाली संपत दलवी	18
❑	संस्कृति		
	7. इंडो-पोर्चुगीज गोअन साहित्य	–मनीषा पाल	20
❑	कृषि		
	8. मैट्रीकेरिया कैमोमाइल की खेती है लाभकारी	–डॉ. आर. एस. सेंगर एवं अमित कुमार	22
❑	सूचना प्रौद्योगिकी		
	9. इंटरनेट पर हिंदी ब्लागिंग का दशक : विविध आयाम	–आकांक्षा यादव	25
❑	पर्यावरण		
	10. वर्षा जल संधारण से समृद्धि	–डॉ. बदरीलाल गुप्ता	31
	11. भूमंडल पर्यावरण संरक्षण में उपकरणों की भूमिका	–नीरू	34
❑	राजभाषा संबंधी गतिविधियां		
	(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें		39

'ग' क्षेत्र : हिंदुस्तान पेपर कार्पोरेशन लि. कोलकाता; पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लि. जम्मू; आकाशवाणी विशाखापत्तनम; आकाशवाणी अनंतपुर; पूर्व रेलवे कोलकाता; पूर्व रेलवे मालदा; फरक्का बांध परियोजना फरक्का; आकाशवाणी कड़पा; आकाशवाणी कटक; आकाशवाणी गान्तोक;

1855 HA/2013 - 1

'ख' क्षेत्र : आकाशवाणी अहमदाबाद; सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क सेवाकर आयुक्तालय गोवा;

'क' क्षेत्र : केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क भोपाल; दूरदर्शन केंद्र लखनऊ; पूर्वोत्तर रेलवे गोरखपुर; कदन्न विकास निदेशालय जयपुर;

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें 44

'क' क्षेत्र : चेन्नै; शिलचर;

'ख' क्षेत्र : नाशिक; दाहोद; चंडीगढ़

'क' क्षेत्र : अंबाला छावनी;

(ग) कार्यशालाएं 47

'ग' क्षेत्र : नरकास (उपक्रम) बेंगलूर; मुख्य नियंत्रण सुबिधा हासन; एम एस एम इ-विकास संस्थान, त्रिश्शुर; खादी और ग्रामोद्योग गुवाहाटी; राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान कोलकाता; भारतीय खाद्य निगम कोलकाता; केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान विट्ठल; कार्पोरेशन बैंक मंगलूर; आकाशवाणी भवानीपाटना; आकाशवाणी कोलकाता;

'ख' क्षेत्र : केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला खडकवासला; भारतीय सर्वेक्षण, पशुपालन गोवा; राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अहमदाबाद; आकाशवाणी अहमदाबाद; आकाशवाणी पणजी;

'क' क्षेत्र : आयकर आयुक्त भोपाल; कर्मचारी राज्य बीमा निगम नई दिल्ली; एन एच पी सी लि. फरीदाबाद; भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण जयपुर; क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र देहरादून; आकाशवाणी इंदौर;

(घ) हिंदी दिवस 55

'ग' क्षेत्र : एम एस एम इ-विकास संस्थान, त्रिश्शुर; आयकर आयुक्त गुवाहाटी; आयकर आयुक्त शिलांग; वैमानिक गुणता आश्वासन हैदराबाद; महालेखाकार भुवनेश्वर; सेवक परियोजना 99 सेना डाकघर; ग्रेफ 99 सेना डाकघर; अरुणांक परियोजना 99 सेना डाकघर; सम्पर्क परियोजना 56 सेना डाकघर; यूको बैंक कोलकाता; असम राइफल शिलांग; केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान मैसूर; ज्वार अनुसंधान निदेशालय हैदराबाद; कोलकाता डाक लेबर बोर्ड कोलकाता; हिन्दुस्तान पेपर कोर्पोरेशन लि. पंचग्राम; हिन्दुस्तान पेपर कार्पोरेशन लि; कोलकाता; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन दिसपुर; आकाशवाणी धारवाड़; आकाशवाणी विशाखापत्तनम; दूरदर्शन केंद्र तिरुवनन्तपुरम; आकाशवाणी कड़पा; दूरदर्शन केंद्र गान्तोक; आकाशवाणी अनन्तपुर; सिंडीकेट बैंक मणिपाल; केनरा बैंक बेंगलूर;

'ख' क्षेत्र : इलेक्ट्रानिकी परीक्षण तथा विकास केंद्र मोहाली; भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय नाशिक रोड; राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद; आकाशवाणी नागपुर; आकाशवाणी राजकोट; आकाशवाणी अहमदाबाद; आकाशवाणी अहमदनगर;

'क' क्षेत्र : पूर्व रेलवे हाजीपुर; कोयला खान भविष्य निधि धनवाद; भारतीय खान ब्यूरो रांची; भारत मौसम विज्ञान विभाग नई दिल्ली; पोस्टमास्टर जनरल; पटना; कर्मचारी चयन आयोग नई दिल्ली; एम एस एम ई विकास संस्थान इलाहाबाद; बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र भंडारा; क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र रांची; क्षेत्रीय केंद्रीय रेशम बोर्ड नई दिल्ली; बी एस एन एल अंबाला छावनी; भारतीय पेट्रोलियम संस्थान देहरादून; हिंदुस्तान एनसेक्टीसाइड्स लि. नई दिल्ली; दी ओरिएंटल इंश्योरेंस कं. लि. नई दिल्ली; दूरदर्शन केंद्र मुजफ्फरपुर; आकाशवाणी पटना; आकाशवाणी बीकानेर; आकाशवाणी इंदौर; बैंकऑफ इंडिया नई दिल्ली

❑ संगोष्ठी/सम्मेलन 72

मध्य तथा पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन अहमदाबाद; दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन बेंगलूर; स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय: एन एम डी सी लि भोपाल; इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जन जातीय विश्व विद्यालय अमरकंटक; भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून;

❑ प्रतियोगिता/पुरस्कार 78

नराकास चेन्नई; एन एम डी सी लि हैदराबाद; पावर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इंडिया जम्मू; नाबार्ड जयपुर; कोयला खान निधि संगठन

❑ प्रशिक्षण 80

❑ कार्यालय-ज्ञापन 83

❑ पाठकों के पत्र 84

संपादकीय

आज के युग में भाषा का विकास, भाषा को तकनीकी से जोड़े बिना संभव नहीं है । खासतौर से नई पीढ़ी मोबाइल व कंप्यूटर से ज्यादा जुड़ी है और इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि हिंदी को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ा जाए । राजभाषा विभाग इस ओर हमेशा से प्रयास करता रहा है। हाल में ही राजभाषा संबंधी रिपोर्टों को आनलाइन मंगवाने हेतु एक साफ्टवेयर का माननीय गृह राज्य मंत्री जी ने प्रमोचन किया । इस साफ्टवेयर से बनी नई सूचना प्रबंधन प्रणाली से जहां एक ओर विभाग को अपने कार्य करने में सुविधा होगी, वहीं दूसरी ओर इससे राजभाषा की सेवा में जुड़े अधिकारी सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ेंगे ।

किसी भी भाषा का पूर्ण विकास तभी संभव है जब उसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाए और अधिकाधिक प्रयोग तभी संभव है जब हम उसका आदर करें, उसे स्वीकार करें, साहित्य के प्रति हमारी रुचि हो और उसे आज की तकनीक और जरूरतों से जोड़ा जाए ।

'राजभाषा भारती' सदैव की तरह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अग्रसर रहते हुए प्रस्तुत अंक में 'चिंतन' स्तंभ के अंतर्गत 'आज के बदले परिवेश में राजभाषा हिंदी' की सर्वाधिक प्रासंगिकता पर बल दिया गया है । 'शब्दकोश निर्माण' में परिभाषिक शब्दावली के संदर्भ में व्याख्या की है । 'भाषा संस्कारों की जननी' में संस्कृति के माध्यम से विचारों को प्रस्तुत किया है । 'भाषा का सरलीकरण' में मध्यकाल से वर्तमान काल तक उदाहरणों सहित सारगर्भित लेख प्रस्तुत किया है । 'पश्चिम तथा पूर्वी हिंदी में अन्तर' में भाषा संबंधी प्रयोग बताए गए हैं । 'साहित्यिकी' स्तंभ के अंतर्गत 'सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति चित्रण' पर प्रकाश डाला गया है । 'संस्कृति' स्तंभ के अंतर्गत 'इंडो-पोर्चुगीज़ गोअन साहित्य' में गोवा के पोर्तुगाली अधिशासन में हिंदु संस्कृति पर एक शोध लेख दिया गया है । इसी तरह 'कृषि', 'सूचना प्रौद्योगिकी' तथा 'पर्यावरण' स्तंभ के अंतर्गत लेखों में महत्वपूर्ण जानकारियां देने का प्रयास किया गया है ।

इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा भारती की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं । कुछ कार्यालयों द्वारा मनाए गए 'हिंदी दिवस' रिपोर्ट को भी अधिकाधिक स्थान देने का प्रयास किया गया है ।

पाठकों के लिए विविध प्रकार की उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है । आशा है पाठकों को यह अंक पसंद आएगा । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

—हरिन्द्र कुमार

चिंतन

आज के बदले परिवेश में राजभाषा हिंदी

–राज बहादुर गुप्ता*

भूमिका :

समय परिवर्तनशील है । काल-चक्र अपनी द्रुतगति से चलता रहता है । समय की परिवर्तनशीलता का प्रभाव वैयक्तिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पड़ना स्वाभाविक और अवश्यम्भावी है । ''भारत-भारती'' काव्य-कृति में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने सत्य ही लिखा है –

संसार में किसका समय है एक सा रहता सदा ।
है निशि-दिवा सी घूमती सर्वत्र विपदा सम्पदा ॥
जो आज तक अनाथ है, नरनाथ कल होता वही ।
जो आज उत्सव-मग्न है कल शोक से रोता वही ।

आधुनिक युग विज्ञान, भूमण्डलीकरण एवं लोकतंत्र का है । इन क्षेत्रों में सतत विकास हो रहा है । ''अशोक महान'' महाकाव्य के प्रणेता का कथन है –

आवश्यकता ही जननी है, जगती में आविष्कारों की ।
कर रहा आज मानव-यात्रा अम्बर के चाँद सितारों की ॥
कोई कितना भी दूर रहे स्वर पास सुनाई पड़ता है ।
हो कहीं उपस्थित जन कोई,सम्मुख दिखलाई पड़ता है ।

अत: बदलते परिवेश में राजभाषा हिंदी के उज्जवल भविष्य और उसकी सम्यक् प्रतिष्ठा के लिए आवश्यकतानुसार शब्द-सरंचना कर सतत् प्रयत्न वांछनीय है । परिवर्तन परिस्थितियो में हिंदी के भविष्य का प्रश्न विचारणीय है ।

1. वैज्ञानिक परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में हिंदी

हिंदी में ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए तथा विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण माध्यम के रूप में हिंदी विकास के लिए भारत सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन सन् 1961 ई. में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की । आयोग को विभिन्न विषयों की तकनीकी शब्दावली, अखिल भारतीय शब्दावली, पारिभाषिक, कोशों, चयनिकाओं, पाठ्यसंग्रहों तथा विश्वविद्यालय स्तर की हिंदी पुस्तकों के निर्माण का कार्य सौंपा गया था । आयोग अब तक अनेक पारिभाषिक शब्द संग्रह और विभिन्न विषयों पर शब्दावलियों तथा परिभाषा-कोश प्रकाशित कर चुका है ।

आयोग तथा प्रदेशों की हिंदी ग्रंथ अकादमियों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे - अर्थशास्त्र, वाणिज्य, आयुर्विज्ञान, इंजीनियरी, कम्प्यूटर विज्ञान, गणित, दर्शन, गृह विज्ञान, पत्रकारिता, भूविज्ञान, मनोविज्ञान, रसायन विज्ञान, सैन्य विज्ञान आदि विषयों पर विश्वविद्यालय स्तर की सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं । पुस्तकों के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि पुस्तकों की विषय सामग्री अपयोगी अद्यतन हो तथा भाषा सरल और सुबोध हो ताकि अध्यापक भी हिंदी माध्यम से विभिन्न विषयों को पढ़ाने में इन पुस्तकों को उपयोगी समझें ।

हिंदी के विकास और संवर्द्धन की दिशा में मानव संसाधन मंत्रालय के अधीन केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा भारतीय भाषाओं के कोश तथा वार्तालाप पुस्तिकाएँ तैयार करने की योजनाएँ आरम्भ की गई हैं । निदेशालय ने अनेक बहुभाषा, त्रिभाषा और द्विभाषा कोश प्रकाशित किए हैं ।

2. भूमण्डलीकरण और हिंदी

भूमण्डलीकरण एक अर्थ में बड़ी पुरानी प्रक्रिया है । सदियों से दुनिया के अनेक देश आपस में व्यापार करते

* सहायक महाप्रबंधक, रिफ्रैक्टरी विभाग, राउरकेला इस्पात संयंत्र (सेल), राउरकेला-769011

आए हैं । वह भी एक प्रकार भूमण्डलीकरण था । परन्तु आधुनिक भूमण्डलीकरण उससे बहुत भिन्न है । अब अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार के साथ-साथ उत्पादन का भूमण्डलीकरण हो रहा है । आर्थिक स्वामित्व का भूमण्डलीकरण हो रहा है ।

सामाजिक और आर्थिक संबंधों में विस्तार, भाषा और साहित्य के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है । वस्तुओं, सेवाओं तथा संसाधनों का आदान-प्रदान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश भाषा के विकास का अवसर प्रदान करता है ।

अब भारत में बहुराष्ट्रीय निगमों के उत्पाद का विज्ञापन हिंदी माध्यम से हो रहा है । यह आम जन-सामान्य उपभोक्ता की भाषा है । सौदा तय करने की भाषा है । लेन-देन का माध्यम बन गई है । इसीलिए सीमित आकार में ही सही इसकी अन्तर्राष्ट्रीय पैठ बढ़ी है ।

भूमण्डलीकरण का प्रभाव प्रस्तुत नीतियों के परिवर्तन में परिलक्षित होता प्रतीत होगा –

1. विदेश व्यापार नीति, 2. औद्योगिक नीति, 3. सार्वजनिक क्षेत्रनीति, 4. उत्पादन कारक नीति (क) भूमि से सम्बन्धित नीति, (ख) श्रम से सम्बन्धित नीति, (ग) पूंजी/शेयर बाजार से सम्बन्धित नीति, 5. प्रशासित मूल्य नीति, 6. तटकर नीति, 7. सेवा एवं पेटेंट नीति ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भाषा के प्रसार एवं विकास की बड़ी संभावनाएँ है । भारतीयता को आगे बढ़ाने का अवसर है क्योंकि भाषा केवल विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं है यह देश की अस्मिता की पहचान है । हिंदी भारतीय संस्कृति की पहचान है ।

भारतीय अर्थव्यवस्था का भूमण्डलीकरण न केवल भारत की राजभाषा हिंदी बल्कि समस्त भारतीय भाषाओं के विकास एवं विस्तार का मार्ग प्रशस्त करता है । भूमण्डलीकरण से पर्यटकों, व्यापारियों, उत्पादकों एवं सामान्य व्यक्तियों के आवागमन में वृद्धि हुई है । भाषा व्यवहार की भी पहचान है । अपनेपन और आत्मीयता का बोध कराती है । इसलिए इस अवसर से भरपूर लाभ उठाने की आवश्यकता है ।

भूमण्डलीकरण के साथ एक ओर जहाँ अर्थव्यवस्था को प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है वहीं दूसरी ओर भाषा को भी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ेगी । विदेशी बैंक, विदेशी पूंजीगत एवं वाणिज्यिक कम्पनियाँ, उत्पादन फर्म निरन्तर देश में प्रवेश कर रही है । आर्थिक विकास के साथ-साथ हिंदी को भी प्रौढ़ावस्था में आना होगा जिससे वह अन्य भाषाओं से स्वतंत्र प्रतियोगिता में ठहर सके ।

उच्च शिक्षा का भी भूमण्डलीकरण हो रहा है, व्यवसायीकरण हो रहा है । अन्य क्षेत्रों के साथ इसका भी निजीकरण हो रहा है । स्ववित्त पोषित कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेक पाठयक्रम चलाए जा रहे हैं । यहाँ भी हिंदी को प्रतिस्पर्धा करनी होगी । भूमण्डलीकरण के दौर में भाषायी दृष्टिकोण से एक ऐसे वातावरण बनाने की आवश्यकता है जिससे हिंदी स्थानीय संरक्षण से निकलकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में ठहर सके ।

3. सूचना प्रौद्योगिकी और कंप्यूटर का विकास

आज कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी का युग है । सभी क्षेत्रों के कामकाज में यांत्रिक और इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है । इसे देखते हुए राजभाषा विभाग ने इन उपकरणों द्वारा हिंदी में काम करने की सुविधाएँ जुटाने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य किया है । जिसके दूरगामी परिणाम होंगें । विभाग ने अग्रेंजी से हिंदी अनुवाद करने के लिए कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के विकास में पहल की जिसकी मदद से स्वत: कंप्यूटर ही अनुवाद करने में सक्षम होगा । व्यावहारिक दृष्टि से यह अत्यन्त लाभप्रद होगा । इसकी सहायता से प्रशासकीय क्षेत्र में प्रयोग में आने वाले अग्रेंजी के पत्र, प्रपत्र, आदेश और ज्ञापन आदि का अनुवाद स्वत: सुलभ हो जाएगा । सी-डेक पुणे के माध्यम से यह सॉफ्टवेयर तैयार किया गया है ।

हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए और भी अनेक विभिन्न सॉफ्टवेयर तैयार किए जा चुके हैं । यांत्रिक उपकरणों में ''लीप ऑफिस'' विशेष उल्लेखनीय है । इसे पुणे स्थित सी-डेक संस्थान ने तैयार किया है । इस सॉफ्टवेयर से देवनागारी के अलावा असमी, बंगला, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु इन दस लिपियों में काम किया जा सकता है । इसके अतिरिक्त लिप्यंतरण की सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं । लिखित सामग्री को किसी दूसरी लिपि में भी परिवर्तित किया जा सकता है ।

सी-डेक के अलावा और कई प्रतिष्ठानों ने भी यांत्रिक और इलेक्ट्रोनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराने की दिशा में

उल्लेखनीय कार्य किया "गुरू" हिंदी सिखाने के लिए मल्टीमीडिया सी-डेक रोम एक ऐसा ही उपकरण है । "गुरू" वास्तविक और व्यावहारिक स्थितियों के आधार प्रशिक्षणार्थियों का मार्ग निर्देशन करता है । इससे प्रशिक्षणार्थी की प्रगति का मूल्यांकन भी किया जा सकता है । इंदिरा गांधी नेशनल ओपन युनिवर्सिटी ने दिल्ली में एक हिंदी कंप्यूटर साक्षरता केन्द्र खोला है । राजभाषा विभाग और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र भी कंप्यूटर के प्रारम्भिक ज्ञान तथा हिंदी में शब्द संसाधन के प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चला रहे हैं । कुछ बैकों और सार्वजनिक उपक्रमों ने भी अपनी व्यवस्था अलग से की है ।

कई प्रकार की सुविधाएँ अब सर्वसुलभ हो गई हैं । जो लोग अंग्रेजी (कुंजी पटल-की बोर्ड) के अभ्यासी है अब वे कंप्यूटर पर रोमन में ही हिंदी या किसी और भाषा में टाइप कर सकते हैं । मगर स्वगत: उसे देवनागारी या अन्य किसी भारतीय लिपि में लिख देगा । कंप्यूटर की सहायता से हिंदी सिखाने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग में "प्रवोध" "प्रवीण" "प्राज्ञ" पाठयक्रमों के स्तर के कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार कराए हैं ।

यदि बदलते राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश को घ्यान में रखकर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार, प्रयोग और उसकी सम्यक् प्रतिष्ठा के लिए सतत् प्रयास किया जाता रहेगा तो राजभाषा हिंदी के उज्जवल भविष्य के प्रति चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं हैं । यदि सभी का हिंदी के अधिकाधिक प्रयुक्त और प्रचलित होने में सक्रिय और समवेत योगदान प्राप्त होता रहेगा तो निराश होने की आवश्यकता नहीं अपितु आशावादी दृष्टिकोण अपनाना उचित होगा ।

4. आधुनिक व्यवसाय और हिंदी

विदेशी पूँजी का निवेश आधुनिक व्यवसाय में तीव्र गति से बढ़ रहा है । इस कारण देश की प्रौद्योगिकी के तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा तीव्रतम गति और तीव्रतम कार्यक्षमता से नित दिनों बेतहासा नए-नए माल का उत्पादन हो रहा है । उपभोक्तावादी संस्कृति का निर्माण हो रहा है । उत्पादित माल की अधिक से अधिक माँग उपभोक्ताओं से उत्पन्न हो इसके लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ अपनी अच्छी भूमिका का निर्वाह कर रही हैं । बिना देशी भाषा के व्यवसाय पनप ही नहीं सकता । इतिहास में उर्दू भाषा इसका सबसे बड़ा उदाहरण है । व्यवसायिक कम्पनियों ने हिंदी में अनुभूति अभिव्यक्तिकरण की विलक्षण क्षमता को अच्छी तरह पहचान लिया है तथा हिंदी में सूचना प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर, सभी प्रकार की समर्थ प्रकार की भूमिका को निर्वाह करने की क्षमता को सभी व्यवसायिक प्रतिष्ठानों ने लगता है मान लिया है । इसलिए व्यवसाय बाजार में अपने उत्पादों को जानकारी तथा माँग में वृद्धि के लिए विज्ञापन के नए-नए हथकंडे विकसित किए जा रहे हैं । भाषा विज्ञापन का सबसे सबल माध्यम है । विज्ञापन के विकसित नए हथकंडो में साथ देने के लिए भाषा को भी व्यवसाय अपने तद्नरूप ढाल रहा है । आज के आधुनिक व्यवसायिक परिवेश में हिंदी एवं अन्य भारतीय विज्ञापन की दुनियाँ के पूरी तरह छा गई हैं । कारण यदि लोगों तक अपने उत्पादों को पहुँचाना है तो देशी भाषाओं में ही बात-चीत करनी होगी । देशी भाषाओं में ही विज्ञापन देने होंगे । यहाँ सबसे चौंका देनेवाला तथ्य यह है कि विज्ञापन व्यवसाय में कुल खर्च का 85 प्रतिशत हिस्सा तथा अन्य भारतीय भाषाओं का है ।

वेबसाइट के आँकड़ों के मुताबिक पिछले साल देश की दस सबसे बड़ी कंपनियाँ जैसे हिन्दुस्तान लीवर, महिन्द्रा एवं महिन्द्रा, इस्पात उद्योग आदि ने अपने कुल विज्ञापन खर्चे का 80 प्रतिशत हिस्सा हिंदी के विज्ञापनों पर खर्च किया । नोकिया तथा रिलायन्स ने सबसे पहले हिंदी में एस. एम.एस. करने वाले उपकरणों को बाजार में उतारकर जन मानस को अपने व्यवसाय से जोड़कर लाभ कमाया । इतना ही नहीं शिव खेड़ा जैसे प्रबंधन गुरू भी अब हिंदी का सहारा ले रहे हैं । वे कहते हैं, अब मुझे भाषण देने के लिए अंग्रेजी के बजाय हिंदी ज्यादा प्रेरित करती है क्योंकि आज सब व्यवसायी यह मान रहे हैं कि संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा एवं जन-जन की भाषा हिंदी में संवाद या संप्रेषण से ही जन मानस से जुड़ा जा सकता है और व्यवसाय को सफल बनाया जा सकता है । कुछ निम्न विज्ञापन इस बात के गवाह हैं ।

i. लाईफ हो तो ऐसी, ii. खाओ ब्रिटानियाँ 50-50, iii. ये दिल माँगे मोर, iv. हो जाये कुछ मीठा, v. आज पहली तारीख है भाई पहली तारीख है, vi. पेट में परेशानी-डाबर पोदीन हरा ।

चर्चित चेहरों द्वारा हिंदी में विज्ञापन –

vii. महाकोला, से ठंडा मतलब कोका कोला, यारों का टशन आदि आज विश्व के पटल पर हिंदी का बोल-बाला होने जा रहा है । एक मशहूर ब्रितानी भाषाविद् डेविड ग्राडेल के कथन पर ध्यान दें तो वे कहते हैं कि इक्कीसवीं सदी के माध्यम में भारत की हिंदी भाषा अंग्रेजी को पीछे छोड़ देगी और अंग्रेजी विश्व के भाषायी परिदृश्य में चौथे नंबर से भी नीचे आ जाएगी । पूर्व राष्ट्रपति जार्ज बुश ने भी हिंदी के महत्व को स्वीकारते हुए यह बात कही है कि आतंकवाद से निपटने के लिए हिंदी की जानकारी बहुत जरूरी है ।

5. मोबाइल संस्कृति में हिंदी और प्रादेशिक भाषाएँ

मोबाइल की भाषा है तो अग्रेंजी, किन्तु यह केवल लिपि ही, क्योंकि मोबाइल में आते एम.एम.एस सूत्रात्मक-शैली में आते-दौड़ते रहते हैं, वे सब अग्रेंजी लिपि में और बातें आती हैं हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं में जैसा कि गुजरात प्रदेश में एम.एम.एस आते हैं Kem chho, Majma to choone अथति केम छो, मझामाँ तो छोने ने । अत: लिपि अंग्रेजी और कहा गया है हिंदी में और गुजराती में । इस प्रयोगवाद ने हिंदी भाषा को आगे बढ़ाने में मठाधीशों से कहीं अधिक योगदान दिया है, जो काम हिंदी के मठाधीश आज तक नहीं कर पाए, औद्योगिक हिंदी ने यह कुल अल्य समय में ही कर दिखाया । मोबाइल संस्कृति, जो आज एक अनपढ़ आदमी भी मोबाइल रखता है, जो अंग्रेजी नहीं जानता, फिर भी अंग्रेजी लिपि को हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषा में अपनी अभिव्यक्ति करने लगता है । यह अपने आप में एक-एक बहुत बड़ी क्रान्ति हैं ।

इस क्रान्ति को सबसे ज्यादा बल मिला बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ, बहुराष्ट्रीय बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंक, सरकारी क्षेत्र के उपक्रम जैसे सेल, भेल, ओ.एन.जी.सी आदि तथा ऐसा होना स्वंभाविक है क्योंकि देश के जितने बड़े नगर, शहर के साथ देश के कई हजार गाँव, वहाँ रास्तों पर, इमारतों पर, चौराहों पर विज्ञापन अधिकांश अंग्रेजी जो कभी दिखाई देते थे, आज उसका हिंदी अथवा लिप्यंतरण हिंदी ने ले लिया है; क्योंकि विज्ञानकर्ता अपनी बात को आम जनता तक बहुत कम समय में रोमांचक तथा आकर्षक रूप में पहुँचाना चाहता है तथा परिणाम यथाशीघ्र चाहता है । इसलिए हिंदी क्षेत्रों में शुद्ध हिंदी में तथा इसके साथ-साथ अग्रेंजी लिपि में हिंदी और प्रादेशिक कथनादि प्रयुक्त करते देखे गए हैं । यानी लिपि कुछ भी हो, कोई भी उसे पढ़े इसलिए हिंदी तथा प्रादेशिक भाषा शैली व्यवहार में लाना चाहते हैं, जो आज हम देख रहे हैं ।

6. हिंदी-अजर-अमर एवं स्वाभिमान की भाषा

अब हिंदी उद्योग की भाषा से हट कर थोड़ा अन्य बात करते हैं । सबसे पहले में आप को बतला दूँ कि हिंदी कभी मर नहीं सकती, क्योंकि हिंदी केवल भाषा का नाम नहीं बल्कि वह जीवन-दर्शन है, जिसे शाश्वत अमरता प्राप्त है । चेतना का वह महाकुम्भ है हिंदी, जहाँ के संगम में अनेक भाषाओं के आरती-थाल तैरते रहते हैं । हिंदी में ही तो एक साथ मिलेंगे बुद्ध और बोधिवृक्ष भी । हिंदी विष्णु भी है, नारद की वीणा भी, हिंदी भाव है, स्वभाव भी । भाषा के सामासिक फैलाने में सदियों लग जाती हैं । वह क्षण, मुहूर्त, दिवस, मास, संवत्, शताब्दी की सीमा से बाहर चली जाती है । कवि दिनकर जी ने कहा था, वह इस संदर्भ में अति सटीक बैठता है ।

कितनी धीमी प्रगति-विकास कितना अदृश्य हो चलता है इस महावृक्ष पर एक पत्र, सदियों के बाद निकलता है । हिंदी को किसी बैशाखी की जरूरत नहीं है, बैशाखियों के सौजन्य से भाषा का संवर्द्धन नहीं होता । खेतों, खलिहानों, सड़कों एवं अलावों के चारों और भाषा के विकास के पत्थर गड़ते हैं । एक बात और कहना चाहूँगा हिंदी भारतीयता का पर्याय है । जैसे भारत को चिर अमरता प्राप्त है वैसे ही हिंदी भी अमर है । हिंदी तीनों कालों का महागान है । वह संज्ञा भी है, सर्वनाम भी, वह नेह भी है, स्नेह भी ।

हिंदी केवल एक भाषा का नाम नहीं है । हिंदी खेत से गाँव लौटते बैलों की घंटी का स्वर है, जिसे सुनकर धनिया घर से देहरी पर आ जाती है और अपने सामनें अपने होरी को पाकर सब कुछ पा लेने की गरिमा से भर जाती है । हिंदी तुलसी का वह बिरवा है, जिसके पत्ते-पत्ते से आशीर्वचन के स्वर मुखरित होते रहते हैं । हिंदी बेल-पत्र की वह टहनी, जिसे अपने इष्टदेव के चरणों में अर्पित करके हम भक्ति एवं श्रद्धा के शिखर की ओर बढ़ने का प्रयास करते हैं । हिंदी पालने में झूलते राम की वह छवि है, जिसे देखकर कौशल का आँचल दूध से भर जाता है । हिंदी कदम्ब के पेड़ से गुंजरित बाँसुरी की वह पावन निनाद है जिसे सुनते ही

गोपियाँ घर का सारा काम-काज छोड़कर उसी कदम्ब के पेड़ की ओर दौड़ती चली जाती हैं । हिंदी सबरी की तपस्या है, सुहाग की बिंदी है, आम्रपाली की थिरकन एवं चित्रलेखा की प्रतूलिका है । हिंदी मीराबाई की लगन, तुकाराम का भजन एवं रश्मि का गान है । हिंदी सत्य है, शिव है, सुन्दरम् है । इसमें तुलसी की तरूणाई एवं सुर-सिन्धु की गहराई है । इसमें विद्यापति की पुरवाई, चन्द्रबरदाई का टंकार एवं जगनिक का उद्‌धोष है । इसमें पद्‌मावती का विरहगान एवं सीता की दिव्यता है । उद्धव का उपदेश एवं गोपियों का अट्‌टहास है । कृष्ण की माखन-रचित मुखाकृति है और पुरुबा उर्वशी के प्रेम की आध्यात्मिक अभिव्यंजना, इसी में तो हैं ''धर्मादर्थो, अथति: काम कामाद् धर्म फलोदय:'' की वेदना एवं स्वाभिमान का अनुगूँज-सखी वह मुझसे कह कर जाते, इसी में है । यह मानस की सीता है, जो साकेत की उर्मिला भी तो यही है ।

हिंदी स्वाभाविक संवर्द्धन की भाषा है । जब जब इसके ऊपर राजकीय अनाचारों का शिकंजा कसा, तब-तब महत्तम महाकाव्यों की रचना हुई । इसके उदाहरण है पृथ्वीराज रासों, आल्हा खण्ड, पद्‌मावत, मानस, सूर का भ्रमरगीत और कबीर का दोहा । रीतिकाल की विरूदावली द्विवेदी-युग का इतिवृत्तात्मक साहित्य और भारत-भारती का प्रलाप और छायावाद की अमूर्त चेतना । यह छायावाद, जो जीवन तथा जगत की जड़ता इतिवृत्तात्मकता तथा स्थूलता के विरुद्ध भाव के स्तर पर व्यक्ति-स्वातंत्र्य एवं आत्मनिष्ठता का उद्‌धोष करती है ।

हिंदी हमेशा संघर्षों से खेलनेवाली भाषा रही है । वह नहीं जानती हार मानना । यह केवल जन की नहीं, जन जन की भाषा है इसीलिए भारतीय उद्योग की समग्र-समर्थ भाषा भी आज हिंदी ही है क्योंकि हिंदी को अपने प्रोत्रयन के लिए किसी प्रकार के प्रलेप की जरूरत नहीं है । यह स्वंय चिनगारी है । हिंदी का विकास इसकी विशिष्ट जिजीविषा का वह प्रलेख है, जो दूसरी भाषाओं के सामने धनघोर तिमिर के बीच एक ज्योतिकलश बन कर उपस्थित हो जाती है ।

सारांश

यह कहना समीचीन होगा कि अब इक्कीसवीं सदी में भारत की हिंदी भाषा अपनी प्रतिभा व अपने बूते पर बड़े धमाके के साथ आगे बढ़ती जा रही है और यह बहुत ही जल्दी मठाधीशों की गुलामी मुक्त होकर समस्त भारत को एकता के सूत्र में बाँधने वाली साबित होगी । यह भारत के संसद भवन में, भारत के संविधान में हिंदी का गौरव की राष्ट्रभाषा की हैसियत प्रशासकीय तौर पर मिले या ना मिले कोई गम नहीं, लेकिन राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में भारत में और विदेशों में गंगा के गौरव के समान ही राष्ट्रीय गौरव बनकर भारती की हिंदी भाषा की राष्ट्रीय बुलन्दी के साथ अभिवृद्धि होती जा रही है, यह भी क्या कम है ।

जय-भारत, जय देवनागरी

कर्मचारियों के हिंदी का कार्य साधक ज्ञान प्राप्त कर लेने पर राजभाषा नियम 1976, 10(4), पर उस कार्यालय में केवल हिंदी में पत्राचार किया जा सकेगा ।

धारा 3(3) के तहत (1) केंद्र सरकार आदि के संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन या प्रेस विज्ञाप्तियां (2) संसद के सदनों में रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदन और राजकीय कागजात (3) केंद्र सरकार आदि की संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा पत्र, सूचना, निविदा प्रपत्र हिंदी और अंग्रेजी में जारी होंगे ।

धारा 3(4) में यह प्रावधान है कि केवल हिंदी या अंग्रेजी जानने वाले कर्मचारियों का इसी कारण अहित नहीं होगा कि वे दूसरी भाषा नहीं जानते ।

1855 HA/13—3A

शब्दकोश निर्माण

–डॉ आरसु*

(पारिभाषिक शब्दावली के सन्दर्भ में)

ज्ञान-विज्ञान के विकास को सुगम बनाने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । ज्ञान संवर्धन के लक्ष्य की पूर्ति के साथ भाषा पीढ़ियों को जोड़ती है । युगों को आपस में जोड़ने का काम भी इससे संभव होता है । प्राचीन काल से ही शब्द को आचार्यों ने बड़ा मान सम्मान दिया था । शब्द को ब्रह्म मानने का सदुपदेश प्राचीन ऋषि-मुनियों ने शिष्यों को दिया था । वेदोपनिषद् के प्रणेता ऋषियों ने कहा था कि शब्द का उच्चारण गलत हो जाना घोर अपराध है । ऐसे अपराधियों को कुंभीपाक नरक में भेजकर दण्ड देने का संकेत उधर मिलता है ।

शब्दों का संबंध अर्थ से होता है । उन अर्थों की सही-सही समझा देना शब्दकोश का मुख्य उद्देश्य होता है । भाषा अनेक शब्दों का अक्षय खजाना है । उनका अर्थ, विषय, प्रसंग और देश काल के अनुरूप समझने में जिज्ञासु व्यक्तियों को सहायता पहुँचाना शब्दकोश का ध्येय है । शब्दकोष बनाने की अलग प्रक्रिया और प्रविधि है ।

प्राचीन काल में शब्दकोश के लिए अमरकोश, शब्दार्णव, अभिधान रत्नमाला, वैजयंती, शब्दसागर जैसे शब्द प्रयुक्त होते थे । विभिन्न भाषाओं में उसके लिए अलग शब्द प्रयुक्त होते हैं । दक्षिण भारतीय भाषाओं में निघंटु शब्द को व्यापक प्रचार मिला है । शब्दकोश के अनेक प्रकार होते हैं । आरंभ में एकभाषीय शब्दकोश ही प्रणीत होते थे । फिर द्विभाषिक शब्दकोशों का प्रचलन शुरू हो गया था । ईसाई मिशनरियों ने धर्मप्रचार के लिए भारत में योजनाएँ बनायी थीं । उस साध्य तक पहुँचने के लिए उन्होंने शब्दकोश को एक साधन के रूप में अपनाया था । कई भारतीय भाषाओं के आरंभिक शब्दकोशकार ईसाई पादरी ही थे । हेरमन गुंडर्ट (मलयालम), कॉल्डवेल (तमिल), किट्टल (कन्नड़), ब्राऊन (तेलुगु), केरी (बांगला) मोनियर विल्यमस (संस्कृत), कामिल बुल्के (हिंदी) ऐसे विद्वानों में अग्रणी बने थे ।

बाद में उनके शब्दकोशों को आधार के रूप में अपनाकर भारतीय पंडितों ने इस पथ पर आगे बढ़ने की योजनाएँ बनाई थीं । सरकारी, गैर-सरकारी भाषाई संस्थाओं ने विराट योजनाएँ बनाकर इस क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ली हैं । इससे विभिन्न क्षेत्रों के लोग लाभान्वित होते रहे। यह प्रक्रिया आज भी अनस्यूत है ।

सामान्य शब्दकोश और पारिभाषिक शब्दकोशों के निर्माण समान ढंग से नहीं होता । उनके उद्देश्य अलग-अलग हैं । इसलिए उनकी प्रविधि में अन्तर होना सहज-स्वाभाविक है । इन दोनों कोशों के हिताग्रही अलग-अलग श्रेणी के लोग होंगे । सामान्य शब्दकोश में अर्थ का वैविध्य प्रतिपादित होता है एक शब्द के अनेक अर्थ होंगे । पर्यायावाची शब्दों का प्रतिपादन उधर मुख्य काम बन जाता है । एक भाषा में ही एक शब्द भिन्न अर्थ रखते हैं । दु:ख शब्द का अर्थ बताते समय पहले मिलने वाला संकेत यह होगा कि वह मूलत: संस्कृत का शब्द है । विषाद, कातरता, पीड़ा, खेद, रज, अवसाद, वेदना आदि शब्द इसके समानार्थी शब्द के रूप में दिए जाते हैं । वह मानसिक अवस्था को द्योतित करने वाला शब्द है ।

पारिभाषिक शब्द के लिए अर्थ की बहुलता, बहुरूपता और विविधता बाधा बन जाएगी । वह विषय केंद्रित है, विषयी केंद्रित नहीं है । भौतिक स्थिति को प्रकट करना उसका मुख्य उद्देश्य होता है । विज्ञान की विविध विधाओं में प्रयुक्त शब्दों के लिए भिन्नार्थ वाले शब्द प्रयुक्त जाए जो अर्थ ग्रहण में बाधा आएगी । संप्रेषणीयता में गतिरोध आएगा । भारतीय संदर्भ में बहुत सारे शब्द ऐसे मिलेंगे जो

* सकित, पो. चेलेबरा, जिला: मालापुरम, केरल-673634

एक ही समय एकाधिक भाषाओं के लिए लागू हो जाएंगे । संस्कृत के शब्द उस दृष्टि से अधिक समीचीन होंगे । लेकिन भारतीय भाषाओं के लिए ऐसे शब्दों के आत्मसातीकरण में परहेज की भावना नहीं होनी चाहिए । भाषाई पागलपन खतरनाक है । भाषाई विवेक ही हमारे लिए मंगलकारी बन जाएगा ।

शब्द साम्य होने पर भी अर्थांतर रखने वाले कई शब्द हैं । उनके संबंध में ख्याल रखना होगा । 'शिक्षा' का अर्थ विद्या से जुड़ा हुआ है । मलयालम में शिक्षा का अर्थ 'दंड या सज़ा' है । लेकिन सर्वशिक्षा अभियान के व्यापक प्रभाव को ध्यान में रखकर मलयालम ने अब उसको स्वीकार किया है । 'संप्रेषण' शब्द Communication के अर्थ में प्रयुक्त होता है । लेकिन दूरदर्शन के व्यापक प्रभाव से उसका अर्थ बदल गया है । सीधा संप्रेषण का अर्थ Live Telecast के रूप में आता है । Official शब्द का अर्थ मलयालम में 'औद्योगिक' है । हिंदी में औद्योगिक का अर्थ Industrial है । हिंदी भारत की औद्योगिक भाषा है - यों कहें तो अर्थ Industrial Language बन जाएगा ।

आज विज्ञान और तकनीकी का वर्चस्व हम क्षेत्रों में देख रहे हैं । शुद्ध साहित्य के सहारे इस प्रगति से हम लाभान्वित नहीं हो पाएंगे । वैज्ञानिक साहित्य की शाखा को भी समृद्ध और संपन्न बनाना है । वैज्ञानिक क्षेत्र के जागरण के अनुरूप हमें वैज्ञानिक साहित्य की ज़रूरत भी पड़ेगी । भाषा का सशक्तिकरण ही इसका एकमात्र विकल्प है । सूचना प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, प्रबंधन-जैसे विषयों में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने का अवसर भारतीयों को भी मिलना अनिवार्य हो गया है । सूचना क्रांति के युग में हम उसे मुँह मोड़ लेंगे तो हमारा भारी नुकसान होगा । हमारी भाषाओं को विकासशील बनाने की योजनाएँ अधिक बनावें । तकनीकी शब्दावली आयोग इस अभियान को क्रमबद्ध और अद्यतन बनाने के लिए प्रयत्नशील है । आयोग को विषय विशेषज्ञ तथा विशेषज्ञों का सहयोग मिलने पर ही यह यज्ञ सफल बन जाएगा । ऐसे वैचारिक आदान-प्रदान से भाषा का क्षितिज भी विकसित बन जाएगा । भाषाई मिथ्याभिमान से यह काम ढ़ीला बन जाएगा । संस्कृत का सहारा लेकर भारतीय पारिभाषिक शब्दावली को विकसित करने का सुझाव भाषाशास्त्रियों ने पहले दिया था । इसका अर्थ सहोदर भाषाओं को दबाना या गौण बनाना नहीं है ।

अखिल भारतीय वैज्ञानिक शब्दावली को सार्वजनिक बनाने का काम संस्कृत का सहारा लेकर करते समय हिंदी ही उसकी मुख्य कड़ी बन सकती है । सन् 1986 में विधि-न्याय मंत्रालय ने बहुभाषी संविधान शब्दावली प्रकाशित कर ली थी । उसके आमुख में मंत्रालय के संयुक्त सचिव व्रजकिशोर शर्मा ने पारिभाषिक शब्दावली बनाते समय ध्यान रखने योग्य कुछ बातों पर प्रकाश डाला था । जहाँ तक हो सके, पारिभाषिक शब्दों की अभिव्यक्ति में एकरूपता हो । भारतीय भाषाओं की विभिन्नता के कारण इस लक्ष्य की पूर्ति एक सीमा तक ही हो सकती है । विभिन्न भाषाओं में पारिभाषिक शब्द संकलित करके प्रकाशित किये जाएं तो भारतीय भाषाओं में एकता का जो सूत्र है वह उसमें पूरी तरह परिलक्षित होगा । यह राय भिन्न विषयों के लिए लागू हो सकती है । शब्दकोश की प्रविधि पर सोचते समय इस अभिमत से हमें एक रूपरेखा मिल जायेगी ।

विषय के मूल भाव को अक्षुण्ण रखना परम आवश्यक है । अर्थ की अनंत संभावनाओं से बचना जरूरी है । शब्द मानक, प्रामाणिक और परिनिष्ठित लगें । बोधगम्यता भी एक अनिवार्य शर्त है । अक्सर लोग कहते हैं कि पारिभाषिक शब्द सरल, सुबोध और सहज बनें । सुनते समय यह राय आकर्षक और गंभीर लगेगी । लेकिन कार्यान्वयन के अवसर पर वह एकदम मुश्किल लगेगा । 'राष्ट्रभाषा की समस्याएं' शीर्षक ग्रंथ में आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने इस राय पर आपत्ति उठाई थी । उनके कहने का निचोड़ यही है । पारिभाषिक शब्द विषय के सामान्य अध्येताओं के लक्ष्य करके नहीं गढ़े जाते हैं । वह गहन अध्येताओं के लिए है । विषय की प्रामाणिकता, वस्तुनिष्ठता और बारीकी वहाँ प्रधान तत्व है । इसलिए पारिभाषिक शब्दों को सर्वजनसुलभ बनाने की जरूरत नहीं है । विषय के गहन अध्येताओं को सही स्तरीय और मानक शब्द से परिचित होने का अवसर देना ही उधर की प्राथमिकता है ।

एक शब्द से अनेक शब्द बनाने की क्षमता पारिभाषिक शब्द की खूबी है । पंजी, पंजीयन, पंजीयक, पंजीकरण शब्दों में इस प्रकार की कड़ी बनी रहती है । ऐसा तालमेल पारिभाषिक शब्दों के लिए जरूरी है । संस्कृत से यह सुविधा अनायास मिल जाती है । डॉ. रघुवीर ने इस पहलू पर सोच-विचार किया था । सभी भाषाओं के पारिभाषिक शब्द एक जैसा हो तो वह संस्कृत से ही हो सकते हैं ।

Election के लिए चुनाव शब्द का प्रयोग तो अन्य भाषा भाषी समझ नहीं पाएंगे । निर्वाचन शब्द अपनाएंगे तो अधिक सुविधा मिलेगी । उससे निर्वाचक, निर्वाचित, निर्वाचन क्षेत्र भी मिल सकेंगे । विधि से जुड़े कई शब्द हैं – जैसे–विधान सभा, विधायक, वैध क्षेत्र, अवैध, विधिवेत, विधेयक । कानून शब्द से इस ढ़ंग का अर्थ निष्पादन मुश्किल होगा ।

पारिभाषिक शब्दकोश निर्माण की अपनी अलग प्रविधि अपनानी होगी । कलासिकल और आधुनिक शब्दकोश के निर्माण में काफी अंतर है । आधुनिक शब्दकोश सामान्य पाठकों को लक्ष्य करके बनाए जाते हैं । उसमें भी पारिभाषिक शब्दों का समावेश जरूरी है । सामान्य पाठक भी कुछ पारिभाषिक शब्दों से अवगत होने के कारण उत्सुक होंगे । कलासिकल शब्दकोश में विषय पूर्वनिर्धारित है । इसलिए उसकी सीमा में आने वाले शब्दों पर ही इधर विशेष बल दिया जाता है । सामान्य शब्दों को समझने के लिए इसका सहारा नहीं लेंगे । पारिभाषिक शब्दकोश बनाने के लिए कुछ उपकरणों (tools) का प्रयोग करना पड़ेगा । इस विषय पर केंद्रित अब तक उपलब्ध शब्दकोशों को इकट्टा करना होगा । विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, अनुसंधान केंद्र आदि के लिए निर्धारित विषय केंद्रित पुस्तकों में कई शब्द प्रयुक्त होते हैं । उनके समानार्थी पारिभाषिक शब्दों की विस्तृत सूची बनाना जरूरी है । कार्ड और चार्ट बनाकर पहले यह सूची बनाई गई थी । आज के संदर्भ में कंप्यूटर की मद्द से यह वर्गीकरण और श्रेणीकरण सुगम बन जाते हैं । कुछ पारिभाषिक शब्दों के अर्थ पूर्वसंदर्भ की तुलना में आज अपर्याप्त लगेंगे । कुछ शब्दों के अर्थ अलग बन गए होंगे । उनकी बारीकियों की सही समझ अवश्यक होगी । कहीं–कहीं अंग्रेजी या फ्रेंच या लैटिन के बहुप्रचलित शब्दों को अपनाना पड़ेगा । वहाँ भी ध्वन्यानुकूलन करना पड़ेगा। जैसे Hospital अस्पताल Report रपट Academy-अकादमी, Interim- अंतरिम आदि । नए शब्दों की गढ़न की स्थिति भी आएगी ।

इस प्रविधि में भाषा की कुलीनता को बनाए रखने का मोह छोड़ना पड़ेगा । उपसर्ग और प्रत्यय जोड़ने की स्थिति में शब्द का सौष्ठव कुछ फीका पड़ेगा । बहुप्रचलित शब्दों का प्रयोग करते समय निजभाषा उन्नति निज शब्द द्वारा का ख्याल छोड़ना पड़ेगा । Guaranteed by the Reserve Bank के लिए रिज़र्व बैंक द्वारा प्रत्याभूत शब्द का प्रयोग आज चलता है । Infra structure facilities के लिए ढाँचागत सुविधाएँ – कहने पर काम चलेगा । Operation के लिए वैज्ञानिक संदर्भ में परिचालन शब्द प्रयुक्त होता है ।

शब्दों का मानकीकरण इस प्रविधि का प्रमुख सोपान है । अर्थ की सीमा को परिसीमित करने पर ही मानकीकरण संभव होगा । अनेकार्थता को एकार्थता में सीमित करना अनिवार्य है । वक्ता और श्रोता को एक ही अर्थ को आत्मसात करने की स्थिति आनी चाहिए । शून्य शब्द को गणित विशेषज्ञ Zero के अर्थ में लेंगे । अंतरिक्ष विज्ञान का विशेषज्ञ उसको space के अर्थ में लेंगे । अध्यात्मवादी के लिए उसका अर्थ माया होगा ।

पारिभाषिक शब्दकोश निर्माण व्यक्ति की एकान्त साधना के आधार पर आज आगे नहीं बढ़ेगा । उसको संस्थागत अभियान बनाना अनिवार्य है । विषय के सारे पहलुओं के जानकार तथा भाषा के विशेषज्ञ इन दोनों वर्गों के प्रतिनिधि एक साथ बैठें । अर्थ की समग्रता और प्रामाणिकता पर वहाँ चर्चा सुगम बन जायेगी । Paleolithic age, Neolithic age — इतिहास के प्रकरण हैं । प्राचीन पाषण युग, नया पाषण युग के रूप में लेते हैं । पाषण शब्द हिंदी के लिए शिला और मलयालम के लिए विष या ज़हर है । ऐसे अन्तरों को विषय विशेषज्ञ और भाषा विशेषज्ञ एक साथ बैठकर तय कर सकेंगे । पारिभाषिक शब्द के निर्धारण में भाषा निश्चित काम के लिए है । साहित्यिक प्रसंग में शब्द के लिए काम होगा । कनक–कनक ते मादकता अधिकाय–भावना कौशल और भाषा कौशल का नमूना हैं ।

उच्चशिक्षा के क्षेत्र में कई पारिभाषिक शब्द आज प्रयुक्त होने लगे हैं । पाठ्यक्रम में निर्धारित विज्ञान तथा मानविकी विषयों के प्रतिपादन में तकनीकी शब्दों का प्रयोग विषयानुकूल ढ़ंग से करने के लिए योजनाएँ बनाई गई हैं, अंग्रेजी के बहुप्रचलित शब्दों का प्रयोग करना मानसिक गुलामी का लक्षण है – ऐसा मानना ठीक नहीं जंचता ।

विश्वविद्यालय के प्रशासन से जुड़ी कई सभा समितियाँ तथा पदनाम हैं । हिंदी ने इनके लिए समकक्ष शब्द तलाश कर लिए हैं । कुलपति शब्द Vice chancellor के लिए प्रयुक्त होता है । Vice भाग को रखकर पहले उपकुलपति शब्द का प्रयोग हुआ था । आज कुलाधिपति chancellor कुलपति Vice chancellor समकुलपति Pro Vice

chancellor कुलसचिव Registrar के लिए प्रयुक्त होते हैं । मलयालम ने इन पदनामों का अनुवाद नहीं किया है । अंग्रेजी शब्दों का उसी रूप में अपनाया है । पाठ्यक्रम syllabus तथा course दोनों के लिए प्रयुक्त होते हैं । certificate के लिए हिंदी ने प्रमाणपत्र शब्द अपनाया है । मलयालम में वह साक्ष्यपत्र है । Academic council के लिए विद्यापरिषद शब्द हिंदी ने स्वीकार किया है । Faculty के लिए संकाय शब्द हिंदी में प्रचलित है । मलयालम ने अंग्रेजी शब्द को नहीं बदला है । संविधान शब्द हिंदी में Constitution के अर्थ में प्रयुक्त होता है मलयालम में वह भरणघटना बन गया है । प्रबंध, इन्तज़ाम, व्यवस्था - इन अर्थों में मलयालम में 'संविधान' शब्द व्यवहृद हो रहा है ।

संस्था और संघटनों की हिंदी मलयालम पारिभाषिक शब्दावली बनाने में भी विशेषज्ञों का ध्यान केंद्रित हो गया है ।

कुछ उदाहरण पेश है –

अंग्रेजी	–	Indian council for Historical Research.
मलयालम	–	भारतीय चरित्र गवेषण कौंसिल
हिंदी	–	भारतीय इतिहास - अनुसंधान परिषद्
अंग्रेजी	–	Food corporation of India
मलयालम	–	भारतीय भक्ष्य धान्य कोर्पोरेशन
हिंदी	–	भारतीय खाद्य निगम
अंग्रेजी	–	Central Bureau of investigation
मलयालम	–	केन्द्र कुट्टान्वेषण ब्यूरो
हिंदी	–	केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो

भाषा में दो प्रकार के शब्द होंगे । नैसर्गिक शब्द और कृत्रिम शब्द । भावनाप्रधान साहित्य में नैसर्गिक शब्द मिलेंगे । लेकिन उन शब्दों के बल पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी के काम निभा नहीं पाएंगे । उनके शब्द विषयानुकूल बनें । वहाँ कृत्रिमता आ जाएगी । इसको कमज़ोरी नहीं माननी है । आवश्यकता अलग होने की स्थिति में भाषा प्रयोग में भी उसका असर पड़ेगा । पारिभाषिक शब्दकोश निर्माण के अवसर पर शब्द की सुकुमारता या सौष्ठव पर अधिक बल दे नहीं पाएंगे ।

विषय और प्रसंग का ख्याल करके पारिभाषिक शब्दों का निर्माण करना पड़ेगा । आरंभ में कुछ शब्द जनता के लिए अटपटा लगेंगे । लगातार प्रयोग करते रहने पर शब्दों की कृत्रिमता धीरे-धीरे कम हो जाएगी । राष्ट्रीय आन्दोलन के अवसर पर स्वराज्य, सत्याग्रह, स्वावलंबन जैसे शब्द पूरे भारतीयों के लिए स्वीकार्य बन गए थे ।

आज नए विषय उभर रहे हैं । या प्राचीन विषयों में अध्ययन की नई विधाएं उभर रही हैं । उसके अनुसार नए शब्दों के भी प्रयोग चल् रहे हैं । Self Financing Institution के लिए स्ववित्त पोषित संस्थाएं शब्द चालू हो गया है ।

कुछ ऐसे उदाहरण देखिए –

Infra Structure facilities	–	ढाँचागत सुविधाएँ
Executive, Legislative and Judiciary	–	कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका
Single Bench, Division Bench and Full Bench	–	एकल पीठ खण्ड पीठ और पूर्ण पीठ
Autonomous Institution	–	स्वायत्त शासिक संस्था

विज्ञान से जुड़े शब्दों को अंग्रेजी से अपनाते समय उपसर्ग और प्रत्यय हिंदी के अनुरूप कैसे जोड़ना है – यह भी कोश निर्माताओं का विचार विषय बनेगा । ऐसे शब्द कृत्रिम बनेंगे तो भी हमें स्वीकारना पड़ेगा ।

Oxidized	–	ऑक्सीकृत
Mercurixed	–	मरकुरीकृत
Sulfurized	–	सल्फरीकृत
Hydroganisation	–	हाइट्रोजनीकरण
Nitrogonisation	–	नाइट्रोजनीकरण

आदि इसके कुछ नमूने हैं ।

परंपरागत, नवागत और नवनिर्मित शब्दों की पहचान और परख कोश निर्माण प्रविधि में अत्यंत आवश्यक है ।

परंपरागत शब्द अगर लुप्त हो गए हैं तो अर्थपुष्टि देकर उन्हें पुनरुज्जीवित करने के बारे में सोचना उचित होगा । Concept के लिए संकल्पना का प्रयोग इसका नमूना है । Record (श्रेय के अर्थ में) के लिए कीर्तिमान शब्द सर्वथा अनुकूल लगता है । Temperature के लिए तापमान । Memorandum of understanding के लिए सहमति पत्र, Delegation के लिए शिष्टमंडल, Administration के लिए प्रशासन, Technology के लिए प्रौद्योगिकी, Investment के लिए निवेश भी इस श्रेणी में आते हैं ।

कुछ पारिभाषिक शब्दों में आधा अंश हिंदी का और आधा अंश अंग्रेजी का रहे तो पारिभाषिक संदर्भ में आपत्ति उठाने की जरूरत नहीं है । दूसरा विकल्प न होने की स्थिति में कोश में ऐसे शब्दों को शामिल करना उचित है ।

Postal stamp – डाक टिकट,

Consumer help line – उपभोक्ता हेल्पलाइन

Translation Bureau – अनुवाद ब्यूरो ।

सूचना क्रांति की उपज के रूप में कई नए पारिभाषिक शब्दों को विश्वभाषाओं में जगह मिली है । भारतीय भाषाओं ने भी उनका स्वागत किया है । अब कोशनिर्माण के अवसर पर इनका भी उल्लेख उसी रूप में करना समय की संख्त मांग बन गई है । वेबसाइट, डाउनलोड, इंटरनेट, फेसबुक, वीडियों कॉनफ्रेंस जैसे शब्द इनके नमूने हैं । भारत संचार निगम, विदेश संचार निगम जैसे प्रयोग आज भारत ने गढ़ लिया है । इनको भारतीय संदर्भ में स्वीकृति मिली है ।

आज ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पल-पल में विस्मयजनक परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं । उसके अनुरूप भाषा का विकास भी अनिवार्य हो रहा है । भाषा रूपी चिड़िया को अपनी चोंच से नए विषय रूपी दाने को चुगना चाहिए । कोश निर्माताओं को भी उनसे अवगत होना है । भाषा का विकास केवल शुद्ध साहित्य के बलबूते संभव नहीं होगा । वैज्ञानिक साहित्य को समेटना भाषा का दायित्व है । नए विषयों के अनुरूप विश्वभाषाओं में शब्दों का गढ़न हो रहा है । उनका अनुवाद क्षिप्रगति से करना मुश्किल होगा । बहुप्रचलित शब्दों का अर्थग्रहण विषय के अध्येताओं के लिए आसान होगा । वीडियो कॉनफ्रेन्स, सोफ्टवेयर जैसे शब्दों को अन्य भाषाओं ने अपनाया है तो हमें उसमें हिचक नहीं होनी चाहिए । भाषा को कूपजल मानना विवेद संगत नहीं होगा । वह बहता नीर है । पारिभाषिक शब्दकोश के निर्माण इस यथार्थ को मानकर आगे बढ़ेंगे । पुरातन पंथियों के कट्टर दृष्टिकोण में भी उसके अनुरूप परिवर्तन आना युग की मांग है । ■

— 27 अप्रैल, 1960 के आदेश राजभाषा आयोग की सिफारिशों पर विचार के लिए गठित समिति द्वारा लिए गए निर्णय पर राष्ट्रपति जी के आदेशों से संबंधित हैं । इन आदेशों में शब्दावली तैयार करने, अनुवाद व्यवस्था, हिंदी प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार-प्रसार, कर्मचारियों की भर्ती में हिंदी, प्रशिक्षण संस्थानों में हिंदी पाठ्यक्रम, अखिल भारतीय सेवाओं की भर्ती में हिंदी, देवनागरी अंकों का प्रयोग, अधिनियमों आदि की भाषा, उच्चतम/उच्च न्यायालय की भाषा, विधि क्षेत्र में हिंदी कार्य करने के लिए कदम तथा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी कार्यक्रम के लिए समुचित निर्देश दिए गए थे ।

— राजभाषा अधिनियम 1963, 10 मई, 1965 को बना ।

— 26 जनवरी, 1965 से हिंदी पूरी तरह सरकारी कार्य में प्रयोग होनी थी और अंग्रेजी का प्रयोग समाप्त होना था । परंतु 1967 के संशोधन के द्वारा अधिनियम की धारा 3 के तहत हिंदी के साथ ही अंग्रेजी भी भविष्य में संघ के काम में और संसद के काम में भी लाई जाती रहेगी ।

भाषा सुसंस्कारों की जननी

–डॉ नरेश कुमार*

समाज की रीति-नीति, परस्पराओं, आचार-विचार, नैतिक मूल्यों का संबंध संस्कृति से होता है । भाषा के माध्यम से साहित्य का निर्माण किया जाता है, जो सांस्कृतिक विकास का आधार होता है । व्यक्ति जिन विचारों को सुनता है अथवा जिन भावनात्मक विचारों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है, वे सभी वार्तालाप भावात्मक विकास में सहायक होते हैं । शिष्ट भाषा का प्रयोग हमारी कार्य-संस्कृति को भी प्रभावित करती है । जहाँ शिष्ट भाषा के प्रयोग से कोई व्यक्ति कार्य करने के लिए प्रेरित होता है, वहाँ उसमें आत्म-सम्मान की भावना भी सुदृढ़ होती है ।

वस्तुत: भाषा सम्पूर्ण संस्कृति के आचरण एवं संस्कारों का आधार है । भाषा का परिष्कृत, शिष्ट एवं शालीन प्रयोग हमारी संस्कृति पर आधारित होता है । शिष्ट व्यक्ति की पहचान उसके द्वारा व्यवहृत भाषा से होती है । जहाँ व्यक्ति का मानसिक विकास साहित्य से होता है, वहाँ उसके सांस्कृतिक विकास की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से प्रकट होती है । भाषा एक माध्यम है जिसके द्वारा संस्कृति के विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है । व्यक्ति अपनी अनुभूतियों को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त करता है, उसके आदर्श आचरण की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है, जो सुसंस्कारों को जन्म देते हैं । इस प्रकार भाषा व्यक्ति के आचरण का आधार है ।

मनुष्य को भाषा (वाणी) का वरदान प्रकृति से मिला है । जहाँ उसकी मधुर, उदार, ममतामयी, करुणापूर्ण भाषा दूसरों को प्रभावित करती है, वहाँ उसकी प्रेममयी, ज्ञानमय, गरिमामय भाषा राष्ट्रीय एकता एवं भावनात्मक एकता का आधार बनती है । जो व्यक्ति अमर्यादित एवं अशिष्ट भाषा का प्रयोग करेगा, उसको समाज कभी भी सम्मान प्रदान नहीं करेगा । वही साहित्य कालजयी बनेगा जो भावी पीढ़ी को अच्छे संस्कार देने वाला हो, उसी नेता का नेतृत्व चिरस्मरणीय होगा, जिसकी भाषा में माधुर्य, शालीनता हो और जो भाषा सामाजिक सौहार्द, सद्भाव से पूर्ति हो । वस्तुत: व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त भाषा से उसका व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होता है । गम्भीर व्यक्ति की भाषा में गाम्भीर्य एवं सारगर्मिता पाई जाती है ।

भाषा के माध्यम से समाज के केवल व्यापार और उद्योग ही सम्पन्न नहीं होते अपितु उसकी संस्कृति भी स्थायी रूप से प्रभावी रहती है । अच्छी सुसंस्कृत भाषा ही समाज को जोड़ने का कार्य करेगी, शिष्ट भाषा ही समाज की प्रगति में सहायक होगी और सामाजिक जीवन की प्रगति का आधार बनेगी, शिष्ट भाषा के प्रयोग से ही विभिन्न जातियों के लोग मिलजुलकर साथ रह सकेंगे । कहने का भाव यह है कि मानव भाषा के प्रयोग से ही किसी परिवार, कार्यालय एवं किसी संस्था के स्तर एवं प्रगति का बोध हो सकेगा । वस्तुत: भाषा से किसी स्थान-विशेष के व्यक्तियों की संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है । घरेलू जीवन से लेकर सामाजिक संबंधों को प्रसार देने में प्रयुक्त भाषा का बड़ा योगदान होगा । जिन परिवारों में शिक्षा का प्रसार होता है, वहाँ सांस्कृतिक दृष्टि से उनका व्यवहार भी शिष्ट होता है, उनके बच्चों के अच्छे संस्कार होने का कारण उनका व्यवहार शिष्टता-सूचक होता है । वे भाषा के अशिष्टता सूचक प्रयोग जैसे 'खाना डाल दो' और शिष्टता सूचक प्रयोग - 'खाना परोस दो' के अंतर को समझ कर भाषा का प्रयोग करेंगे । वस्तुत: शिष्टता सूचक शब्दों का प्रयोग हमारे संस्कारों पर निर्भर करता है । उदाहरण के लिए यदि यह कहा जाए 'रोटी पड़ी है, खा लो' अशुभ का सूचक है, 'रोटी परोस दीजिए' शिष्टता सूचक है । भारतीय सांस्कृतिक परस्परा- 'हड्डियों को प्रवाहित करने' के प्रयोग की अनुमति देती है । अत: 'हड्डियों को फेंकना' वाक्यांश का प्रयोग अवांछनीय होगा । 'यज्ञ की आग जला दो' के स्थान पर 'यज्ञ की अग्नि प्रज्जलित कर दीजिए' कहना ही संस्कृति-संम्पन्न होगा । 'चर्चा करो' के स्थान पर 'कृपया चर्चा कीजिएगा' का प्रयोग हमारी विनम्रता का परिचायक होगा । यदि परिवारिक स्तर पर हम अंग्रेजी के अधिक मोह में पड़े होंगे तो हमारी बोलचाल की भाषा का

* जे-235, पटेल नगर प्रथम गाजियाबाद, उ. प्र.

स्वरूप इस प्रकार होगा (1) डैड, मैं सॉरी फील करता हूँ, (2) डैडी, मैं ट्राई करूँगा। अंग्रेजी भाषा बोलने के संस्कार हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगे और हम अपनी भाषा के विशुद्ध रूप को छोड़कर इंग्लिस्तानी हिंदी के खिचड़ी रूप को बोलने के अभ्यस्त होंगे और हमारी भाषा का स्तर परिवार की संस्कृति से निर्धारित होगा। पारिवारिक माहौल के अनुसार हम भाषा का प्रयोग करने लगते है और मुख-सुख के कारण अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग करने में अपनी शान समझने लगते हैं। परिवारिक परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए हमें यह सोचना होगा कि अपनी संतान को हम किस प्रकार के संस्कार दे रहे हैं? क्या वे संस्कार हमें अपनी पहचान एवं गौरव को भुलाने में सहायक तो नहीं होंगे? क्या वे संस्कार हमारी मातृभाषा की अस्मिता पर चोट तो नहीं करेंगे? क्या वे संस्कार हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को क्षति तो नहीं पहुँचाएगे? बच्चे अनुकरण द्वारा भाषा सीखते हैं। माता-पिता एवं शिक्षक के बोलने, लिखने एवं उच्चारण का अनुकरण करके वैसा ही सीखने का प्रयत्न करते हैं। यदि अभिभावक एवं शिक्षक शुद्ध शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं तो बच्चों में वैसी ही भाषा के बोलने के संस्कार स्वत: पड़ जाते हैं। यदि अध्यापक छात्रों के लिए अपशब्द अथवा हीनता सूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं तो जहाँ छात्रों में मनोवैज्ञानिक रूप से हीनता की भावना विकसित होगी, वहाँ वे गालियों या अश्लील शब्दों का प्रयोग करने में तनिक भी संकोच नहीं करेंगे क्योंकि वे जिस माहौल में रह रहे हैं उसका प्रभाव उन पर संस्कारों के रूप में पड़ना स्वाभाविक है। यदि वे आयु में बड़े व्यक्ति अपने बड़ों का अभिवादन 'नमस्कार', 'प्रणाम' या नमस्ते करके कहेंगे वे छोटे बच्चे भी अपने घर में अतिथि के पधारने पर उनका स्वागत भारतीय संस्कृति के अनुसार करेंगे। यदि परिवार का मुखिया नौकरों के लिए सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करके विनम्र भाषा का प्रयोग करेगा तो बच्चों पर उनके संस्कारों का प्रभाव निश्चय ही पड़ेगा। वस्तुत: भाषा केवल शिक्षण विषय ही नहीं, बल्कि जीवन में संस्कारों का आधार है। भाषा के माध्यम से हम हर्ष, शोक, सहानुभूति, प्रेम, ममता आदि के उद्‌गारों को व्यक्त करते हैं। मातृभाषा के माध्यम से बालक का सामाजीकरण होता है और वह समाज की सभ्यता तथा संस्कृति से परिचित होता है। वस्तुत: भाषा विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त करने का केवल अवसर ही नहीं देती बल्कि बालक को भावी जीवन को दीक्षित करने का अवसर भी प्रदान करती है और यह दीक्षा संस्कारों की जननी है। वस्तुत: भाषा का महत्व केवल बौद्धिक विकास में ही नहीं अपितु नागरिकों में अच्छे संस्कार डालने का मार्ग प्रशस्त भी करती है।

भाषा विचारों की संवाहिका होती है। राष्ट्रवादी भावनाओं की पुष्टि एवं आज़ादी का संघर्ष का इतिहास मातृभाषा की ताकत से बढ़ा। जीवन में संस्कार तथा जीवन-मूल्य हमें भाषा से ही सीखने को मिलते हैं। जब हम वैदिक मंत्रों में 'सब के कल्याण, सब के सुखी होने' की सद्‌भावना से परिचित होते हैं तो उससे हमारी उदार संस्कृति का बोध होता है।

शब्द संस्कृति के वाहक होते हैं, शब्द हमारी चेतना का बोध कराते हैं और हमारे भावनात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं। यह सम्भव है कि व्यक्ति सब कुछ जानता हुआ भी अपने विचार को प्रभावशाली ढंग से प्रकट करने में भी असमर्थ हो। अत: जहाँ भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने विचारों को प्रकट करता है, वहाँ भाषा वहां भाषा के माध्सम से ही व्यक्ति समाज में दूसरों की संस्कृति से परिचित होता है। भारतीय संस्कृति हमें व्यवहार करना सिखाती है। किसी व्यक्ति को मृत्यु उपरांत 'स्वर्गवासी या सिधारना' कहा जाता है, दुकान बंद करना न कहकर 'दुकान बढ़ा दी' कहा जाता है।

इसका दूसरा पक्ष है संस्कार भाषा के जनक होते हैं संस्कार भाषा में बोलते हैं। संस्कार से प्रभावित होकर हम अभिवादन हेतु शब्दों, जैसे-'राम-राम', 'राधे-राधे', 'जय श्री राम' या 'जय श्री कृष्ण' कहते हैं, अंग्रेजी सभ्यता से प्रवाहित व्यक्ति 'गुड मॉर्निंग' कहकर अभिवादन करने के अभ्यस्त हो जाते हैं। संस्कारों के प्रभाव के कारण ही हम एक वाक्य में अनेक अनावश्यक अंग्रेजी शब्दों का बोलचाल में प्रयोग करते हैं।

भाषा मानवता की बड़ी शक्ति है। यदि हम कोई गलती करते हैं तो शिष्टाचारवश 'सॉरी (Sorry) या 'खेद', अफसोस है' आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं और कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु 'सधन्यवाद', 'सादर' पत्र-व्यवहार में तथा बोलचाल में 'धन्यवाद, शुक्रिया' (Thanks) का प्रयोग करते हैं। भाषा से हमें व्यक्ति की शालीनता, शिष्टता, भाषा पर अधिकार आदि का बोध होता है।

अत: जहाँ भाषा-ज्ञान संयत भाषा का प्रयोग जीवन में उत्थान एवं उत्कर्ष, को बढ़ाने वाला होता है वहाँ इससे किसी संस्था/कार्यालय की कार्य-संस्कृति (Work-Culture) का बोध होता है। ■

भाषा का सरलीकरण

–इरफ़ान अहमद खान*

मध्य साम्राज्य के दौर में हिंदी की प्रमुख बोलियां-ब्रज, अवधि आदि में फारसी-उर्दू की जो शब्दावली समाहित हुई उसकी व्याकरणिक कोटियों में अधिकांश में संज्ञाएं और विशेषण थीं। उपसर्ग, प्रत्यय तथा अवयय जैसी व्याकरणिक कोटियों का समाहार भी बहुत कम था। सर्वनाम, क्रियाएं व्याकरणिक कोटियों का समाहार बहुत कम था। सर्वनाम, क्रियाएं तथा सहायक क्रियाएं वहीं की वहीं रहीं। किसी भी भाषा का मेरुदंड वाक्य-रचना होती हैं और वाक्य की प्राणवता का अनिवार्य बिंदु 'क्रिया पद' होता है।

मध्यकाल में मुगल राजसत्ता के फारसी उर्दू परक दबाव से हिंदी भाषा की अस्मिता को इन क्रिया पदों ने ही बचाया था। बाबर के द्वारा स्थापित सलतनत की राजभाषा को तुर्की, फारसी और बाद में उर्दू का भाषिक बल प्राप्त था और हिंदी समानांतर लोक बल पर जीवित और सुरक्षित बनी हुई थी।

मुगल काल के आगमन के बाद जमीन की खरीद-बिक्री, माप तोल की व्यवस्था, जमीन की सीमा निर्धारण की व्यवस्था हुई। आज की अदालतों में जमीन की बिक्री के समय दस्तावेज की लिपि देवनागरी होते हुए भी इसकी भाषा अरबी-फारसी मिश्रित रही है। अदालत में अभी भी हाकिम, मुंशी, मुहर्रिल्ल, वकील, मुख्तार, पेशकार, दस्तावेज, तमसुक, दाखिल-खारिज, खतियान, कचहरी, अमीन, जुर्माना, करार इकरारनाम, सुलहनामा, नक्शा आदि शब्द प्रचलित हैं। अदालत की भाषा दफ्तरी अथवा कार्यालयीन होने के कारण इसे स्वीकार कर लिया गया है। पहनावे के लिए अरबी-फारसी के शब्द गंजी, कुर्ता, पायजामा, लुंगी, बनियान, गमछा, चादर, तकिया, तोशक, लिहाफ, मच्छरदानी आदि प्रचालित इस्तेमाल हो रहे हैं।

ब्रिटिश शासन काल में भारतीय समाज में मध्य वर्ग ने नौकरी के लिए अंग्रेजी भाषा सीखी। इस अंग्रेजी का दौर अब तक चल रहा है। धीरे-धीरे शिक्षा और राजनीति दोनों ने भाषिक क्षेत्र में हस्तक्षेप किया। हिंदी के सम्मुख भाषिक संक्रमण उर्दू-हिंदी अंग्रेजी त्रिकोणीय हो गया। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्द पैंट, शर्ट, कोट, टाई आदि सभी शब्द हमारे शब्द हो गए हैं। इन शब्दों को सामान्य से सामान्य जनता समझती है।

स्वतंत्रता उपरांत भारतीय संविधान में भारत की बहुभाषिकता सतह पर उभर आई। इस बीच हिंदी भाषा के सभी अंगों-ध्वनी, रूप, वाक्य, अर्थ के साथ-साथ लिपि में भी परिवर्तन हुए।

वर्तमान बहुराष्ट्रीय व्यापारिक प्रतिष्ठानों के वर्चस्व का काल है। हिंदी भाषा का वर्तमान व्यावसायिकता के विरुद्ध टकराने, अनुकूलित करने और उससे अपनी अस्मिता को सुरक्षित बचाए रखने का काल है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण, उदार-आधुनिकतावाद तथा नव-उपनिवेशवाद अपनी प्रचंडता के चरम पर है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हिंदी को विज्ञापन तथा बाजार वृद्धि के साधन के रूप में स्वीकार किया है। विदेशी कंपनियां विज्ञापनों में हिंदी का धड़ल्ले से प्रयोग कर रही हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ-साथ आज की युवा पीढ़ी को भी ऐसी हिंदी के बढ़ते क्रेज से कोई परहेज/नहीं है। हिंदी की यह धारा ही अब हिंदी का मानक स्वरूप बनती जा रही है। दूरदर्शन पर सैकड़ों चैनलों ने हिंदी को व्यावसायिक स्तर पर स्वीकार किया है।

सूचना प्रौद्योगिकी ने प्रादेशिक भाषा देश को भी समृद्ध किया है। विभिन्न संचार-माध्यम विविध क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग करते हैं। सूचना एवं संचार तकनीकी में हिंदी भाषा ने अपने अस्तित्व एवं आवश्यकता को सिद्ध कर दिया है। आज दुनिया भर के विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई, विदेशी हिंदी विद्वानों का हिंदी के प्रति बढ़ता आकर्षण और प्रौद्योगिकी एवं कंप्यूटर आदि के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग

*2-बी/696, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012

बढ़ रहा है । प्रिंट माध्यम एवं इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के केंद्र में हिंदी ने अपनी पहचान बना ली है । कंप्यूटर तथा इंटरनेट पर हिंदी ने अपनी जड़ें जमा ली हैं ।

किसी भी भाषा का समृद्ध होना उसके शब्द भंडार पर निर्भर करता है । शब्द चाहे किसी भी भाषा से आ रहे हों, वे हिंदी के शब्द कोश को ही समृद्ध बना रहे हैं । अंग्रेजी भाषा ने अपनी समृद्धि के लिए अनेक भाषाओं से शब्द लिए हैं और वह निरंतर ले रही हैं । इसी कारण शायद यह भाषा दुनिया में संपर्क भाषा का रूप ले रही है । अंग्रेजी भाषा की लोकप्रियता और उसकी प्रसिद्धि बढ़ने का राज इसके शब्द-भंडार में मानते हैं । अंग्रेजी भाषा में फ्रेंच, स्पेनिश, जर्मन, उर्दू, हिंदी और न जाने कितनी ही भाषाओं से लिए गए सैकड़ों हजारों शब्द शामिल हैं ।

हिंदी में अनेक भाषाओं से आगत शब्दावली है । फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के साथ-साथ अनेक भारतीय भाषाओं से भी हिंदी में शब्द-समूह आया है । भारतीय भाषाओं के शब्द अब बर्मा, मलेशिया, इंडोनेशिया, श्रीलंका, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, सुडान, फिजी तक की भाषाओं में दिखाई देते हैं ।

भारतीय भाषाओं के शब्द भी बड़े ही सहज रूप में हिंदी में चले आ रहे हैं । दक्षिण की भाषाओं, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, बंगाली, गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि भाषाओं के बहुत सारे शब्द शामिल हो रहे हैं । भाषा विज्ञान और व्याकरण की दृष्टि से भी भारतीय भाषाओं में बहुत समानता है । लोग अब इन्हें आसानी से समझ लेते हैं ।

आज हिंदी में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से हो रहा है । यदि हम राष्ट्रीय स्तर के समाचार-पत्र नवभारत टाइम्स को देखें तो पाएंगे कि हर पंक्ति में एक अंग्रेजी शब्द होगा । जबकि उस अंग्रेजी शब्द को हिंदी के प्रचलित शब्द आसानी से प्रयोग किया जा सकता है । हम हिंदी के शब्दों को अपने मन में खोज नहीं करते और शायद इस खोज के श्रम से बचने के लिए हम अंग्रेजी के शब्दों का झट से इस्तेमाल कर देते हैं । दूसरा मध्य वर्ग की मानसिकता स्वयं को उच्च वर्ग में स्थापित करने की रहती है । चेशभूषा, रहन-सहन के साथ-साथ भाषा का सहारा इस काम के लिए जाता है । हम स्वयं को अभिजात, उच्चवर्गीय, उच्च-शिक्षा प्राप्त तथा नगर निवासी जताने के लिए अंग्रेजी के शब्दों/वाक्यांशों/वाक्यों तथा पंक्तियों का प्रयोग हिंदी के भाषा-प्रवाह के बीच करने लगते हैं ।

स्वतंत्रता उपरांत शुरू के वर्षों में राजभाषा हिंदी में एक मानक स्वरूप का अभाव रहा और कार्यालयीन प्रयुक्तियों के अंग्रेजी वाक्यांशों के समतुल्यों एवं परिभाषित शब्दों के समुचित पर्याय चयन में असमंजसपूर्ण स्थिति थी । इस स्थिति में सुधार के लिए सरकारी एवं विभागीय स्तरों पर एक रूपता के लिए पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावलियों का निर्माण किया गया । इसके साथ-साथ कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी सीखने के लिए हिंदी कार्याशालाएं आयोजित की जा रही हैं । हिंदी पत्राचार, कार्य प्रगति के लिए छपे-छपाएं फार्मों, निर्धारित प्रारूपों, कोडों, पर्चियों आदि को हिंदी में लिखने/भरने पर अधिक बल दिया जाता है ।

कामकाजी हिंदी का ध्येय दफ्तरी अथवा कार्यालयीन होता है । कार्यालय में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी कार्यालयीन कार्य का संपादन होता है । कार्यालयीन कार्य की भाषा का मूल स्रोत अंग्रेजी भाषा का रहा है । भारतीय संविधान ने अंग्रेजी को हिंदी की सहयोगी भाषा से अविहित किया है । कार्यालयीन भाषा में व्यक्ति की अपेक्षा पदनाम प्रमुख होता है । इसमें व्यक्ति अपने उपर दायित्व नहीं लेना चाहता है । सभी कार्य आदेश, स्वीकृति एवं अनुदेश के आधार पर किए जाते हैं । हिंदी में भी कार्यालयीन भाषा में इसी संरचना को ध्यान में रखकर कार्यालयीन कार्य किया जाता है । कार्यालयीन हिंदी में आदेशात्मक सुझावात्मक, कथनात्मक वाक्यों का प्रयोग किया जाता है ।

राजभाषा के रूप में प्रशासन के कार्य में एक स्वभाविक भाषा का नहीं, बल्कि एक तरह की निष्प्राण अनुदित भाषा का प्रयोग ज्यादा हुआ है । हिंदी के नाम पर अनचाहे कठिन शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है । ऐसी भाषा आम आदमी की भाषा नहीं हो सकती है । सरकारी कार्यालयों में कामकाजी हिंदी में कई बार इस प्रकार के शब्द इस्तेमाल किए जाते हैं कि पाठक की समझ के बाहर होता है ।

गांधी जी ने कहा था - 'भारत वर्ष में 70 प्रतिशत जनता देहात में रहती है । सारा कार्य देहातों पर निर्भर है । इसलिए जिसे वे लोग समझ सकें, ऐसी भाषा का प्रयोग

करने की आवश्यकता है । आम आदमी की समझ में आने लायक भाषा को गांधी जी ने न हिंदी बताई और न उर्दू । उसे 'हिंदुस्तानी' की संज्ञा दी है । ऐसी हिंदुस्तानी का ही प्रचार कराने के वह पक्षपाती थे ।

हिंदी का महत्व राष्ट्रभाषा के साथ-साथ वह एक जन भाषा है । जनता की ओर से हिंदी की स्वीकृति है । जन सामान्य हिंदी जानती है, हिंदी से प्रेम करती है और अपना काम चलाती है । जन साधारण के लिए हिंदी की कोई समस्या नहीं है । आम जनता को राजभाषा का वर्तमान रूप नहीं, बल्कि जनभाषा का सरल स्वरूप ही हिंदी के नजदीक लाएगा ।

हिंदी के इस वर्तमान में हिंदी के स्वरूप के सामने हिंदी को सरल बनाने की मागें उठ रही हैं । प्रत्येक भाषा का स्वभाव सरलीकरण का होता है । भाषा के सरलीकरण की पहचान तदभव और देशज रूपों से होती है । उस भाषा के कहावतों और मुहावरों से होती है । जनता की भाषा के शब्दों से होती है । आज दुनिया के कई देशों ने हिंदी को अपनेपन से या आवश्यकतानुरूप भी स्वीकार किया है । यह भाषा का गौरव माना जा सकता है ।

हिंदी की लोकप्रियता में दिनोंदिन वृद्धि हो रही है । राजभाषा के रूप में इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने की आवश्यकता है । इसके लिए इसे एक सरल भाषिक स्वरूप और सहज शैली का असली जामा पहनाने का प्रयास किया जाना जरूरी है । हिंदी की सरलता के लिए शब्दों का चयन इस प्रकार किया जाए कि वह विषय को अर्थध्वनि देने, शब्दावली की एक रूपता और स्पष्ट अभिव्यक्ति की दृष्टि से सक्षम हैं । अन्य भाषाओं के वे शब्द जो आम प्रचलन में हैं, उन्हें ज्यों का त्यों अपना लिया जाना चाहिए । शब्द का चयन करते समय भाषिक बोझ कम करने की दृष्टि होनी चाहिए । हिंदी शब्दों का भाषिक स्वरूप कामकाज की भाषिक जरूरतों को पूरा करने वाला होना चाहिए । शब्द का चयन करते समय भाषिक बोझ कम करने की दृष्टि होनी चाहिए । हिंदी शब्दों का भाषिक स्वरूप कामकाज की भाषिक जरूरतों को पूरा करने वाला होना चाहिए । तकनीकी शब्द यानि विभिन्न उपक्रमों, मशीनों, व्यवस्थाओं आदि के अंग्रेजी शब्दों को ज्यों का त्यों ले लिया जाए । हिंदी शब्द की जानकारी होने पर अंग्रेजी शब्दों को कोष्ठक में लिख दिया जाए ।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(5) में अन्य बातों के साथ ही यह प्रावधान है कि जब तक वे सभी राज्य अपने विधान मंडलों में अंग्रेजी भाषा की समाप्ति संबंधी संकल्प पारित नहीं कर देते जिनकी राजभाषा हिंदी नहीं है और इन संकल्पों पर विचार के बाद संसद द्वारा अंग्रेजी समाप्त करने संबंधी संकल्प पारित नहीं किया जाता, तब तक हिंदी के साथ अंग्रेजी भी प्रयोग होती रहेगी ।

राजभाषा अधिनियम की धारा 4 के तहत 30 सदस्यीय संसदीय राजभाषा समिति बनाई गई । इस समिति की रिपोर्ट पर राज्य सरकारों की राय जानने के बाद राष्ट्रपति जी आदेश जारी किए जाते हैं । अब तक इस समिति ने अपनी सिफारिश के सात खंड राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत कर दिए हैं ।

अधिनियम की धारा 5 में प्रावधान है कि केंद्रीय अधिनियम या अध्यादेश का हिंदी पाठ प्राधिकृत माना जाएगा । संसद में विधेयक और संशोधन आदि अंग्रेजी और हिंदी दोनों में प्रस्तुत करने होंगे । धारा 6 के अनुरूप यदि किसी राज्य द्वारा अपने अधिनियमों आदि के लिए हिंदी को छोड़कर कोई अन्य भाषा निर्धारित की है तो उन्हें उस अधिनियम का हिंदी और अंग्रेजी पाठ भी अपने राजपत्र में प्रकाशित करना होगा । यह जम्मू कश्मीर पर लागू नहीं है ।

पश्चिमी तथा पूर्वी हिंदी में अन्तर

–रीता भट्टाचार्य*

भौगोलिक दृष्टि से हिंदी का क्षेत्र उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक है। डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार यह समस्त भू-भाग पश्चिमी तथा पूर्वी हिंदी क्षेत्रों में विभाजित है। पश्चिमी हिंदी के अन्तर्गत-खड़ी बोली हिंदी, बांगरू, ब्रजभाषा, कन्नौजी तथा बुन्देली बोलियां आती हैं। पूर्वी हिंदी के अन्तर्गत- अवधी, बघेली तथा छत्तीसढ़ी का समावेश है।

इनमें अवधी और खड़ी बोली हिंदी को क्रमशः पूर्वी और पश्चिमी हिंदी का प्रतिनिधि भाषा के रूप में स्वीकार करते हुए दोनों में उपलब्ध होने वाले भाषागत अन्तर को प्रस्तुत रूप में निर्देशित किया जा सकता है—

पूर्वी हिंदी में 'अ' स्वर संवृत्त स्वर ध्वनि है और पश्चिमी हिंदी में 'अ' विवृत्त ध्वनि (open vowel) है।

पूर्वी हिंदी में संयुक्त-स्वर 'अइ, अउ' है, जैसे-कहइ, सुनई, चलई आदि। पश्चिमी हिंदी में अइ, अउ मूल स्वर के रूप में प्राप्त होते हैं (यथा-ए, ओ) न कि संयुक्त स्वर के रूप में, जैसे-चले, सुने, कहे। 'ए' यहां मूल स्वर है।

पूर्वी हिंदी में पश्चिमी हिंदी की ड़, ढ़, मूर्धन्य ध्वनियां 'र' तथा 'रह' में परिणत हो जाती हैं—

यथा पश्चिमी हिंदी तोड़े > पूर्वी हिंदी तोरे।

इसी प्रकार पश्चिमी तथा पूर्वी हिंदी में र, ल के परिवर्तन में पर्याप्त भेद है, पश्चिमी हिंदी में जहां 'ल' ध्वनि प्राप्त है वहां पूर्वी हिंदी में 'र' ध्वनि प्राप्त है।

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी
हल	हर
फल	फर
जलै	जरै

पश्चिमी हिंदी में शब्द के मध्य के 'ह' का प्रायः लोप हो जाता है किंतु पूर्वी हिंदी में यह सन्ध्यक्षर रूप में आता है। यथा-पश्चिमी हिंदी में जो शब्द हैं दियां वह पूर्वी हिंदी में 'देहेसि' रूप में प्राप्त है।

पश्चिमी हिंदी में शब्द के आदि में 'य' तथा 'व' आता है किंतु पूर्वी हिंदी में यह 'ए' तथा 'ओ' में परिणत हो जाता है और कभी-कभी सन्ध्यक्षर रूप में 'ह' भी प्रयुक्त होता है, यथा—

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी
यामें	एमें, एहमें
वामें	ओमें, ओहमें

पश्चिमी हिंदी के आकारान्त शब्द पूर्वी हिंदी में अकारान्त अथवा व्यंजनान्त हो जाते है, यथा

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी
बड़ा	बड़
भला	भल

शब्द रूपों तथा ध्वनि रूपों के अतिरिक्त कारकीय रूपों में निम्नलिखित अन्तरगत विशेषताएं मिलती हैं—

पश्चिमी हिंदी में आकारान्त, शब्द का रूप कर्ता में सुरक्षित रहता है किन्तु तिर्यक में 'आ' 'ए' में परिवर्तित हो जाता है परन्तु पूर्वी हिंदी में कर्ता तथा तिर्यक दोनों में आकारान्त रूप सुरक्षित रहता है और इसमें परिवर्तन नहीं होता है, जैसे—

पश्चिमी हिंदी	पूर्वी हिंदी
कर्ता एक वचन-घोड़ा	कर्ता एक वचन-घौड़ा
तिर्यक एक वचन-घोड़े	तिर्यक एक वचन-घोड़ा

इसके अतिरिक्त पश्चिमी हिंदी में अकारान्त पुल्लिग कर्ता कारक एकवचन में 'आ' रूप (घोड़ा), आकारान्त पुल्लिग कर्त्ताकारक बहुवचन में 'ए' रूप (घोड़े) अन्य कारक एक वचन में 'ए' रूप (घोड़े) और अन्यकारक बहुवचन में 'ओ' रूप (घोड़ों) मिलते हैं। परंतु इस प्रकार का विभाजन पूर्वी हिंदी में नहीं मिलता।

सर्वनाम रूपों की दृष्टि से दोनों में निम्नलिखित अन्तर है।

* 194 ए, एन.एस.सी. बोस रोड, फ्लैट नं. 2ए, मंदार अपार्टमेंट कोलकाता-700047

पश्चिमी हिंदी में सम्बन्धवाचक सर्वनामों के रूप 'जो'; सौं तथा प्रश्नवाचक के रूप 'कौन' होते हैं, किंतु पूर्वी हिंदी तथा भोजपुरी में ये क्रमशः 'जे', 'जवन', से, 'तवन' तथा कवन हो जाते हैं ।

पश्चिमी हिंदी में अधिकार वाचक सर्वनाम के रूप में 'ए' रहता है यथा 'मेरा', किंतु पूर्वी हिंदी में यह 'ओ' रूप में प्राप्त है यथा 'मोर' ।

पश्चिमी हिंदी के पुरूषवाचक सर्वनाम के एकवचन तथा बहुवचन के रूप में 'हम' प्राप्त है किंतु पूर्वी हिंदी में 'हम' वस्तुतः एकवचन में ही प्रयुक्त होता है और इसके बहुवचन का रूप 'लोग' संयुक्त करने से सिद्ध होता है ।

अनुसर्ग और परसर्ग की दृष्टि से भी पश्चिमी तथा पूर्वी हिंदी में अन्तर है—

पश्चिमी हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता है 'ने' परसर्ग का प्रयोग, इसका पूर्वी हिंदी में सर्वथा अभाव है, उदाहरणार्थ—

पश्चिमी हिंदी	**पूर्वी हिंदी**
खड़ी बोली-उसने किया	उ कहिसि

इतना ही नहीं क्रियारूप की दृष्टि से भी पूर्वी तथा पश्चिमी हिंदी में पर्याप्त अन्तर मिलता है ।

सहायक क्रिया के रूप में पश्चिमी हिंदी के 'है', 'हूं' के स्थान पर पूर्वी हिंदी में हहै, आहे, आहह, अहई रूप मिलते हैं, यथा पश्चिमी हिंदी में हूं पूर्वी हिंदी में-अहे उं, आहे उं रूप में प्राप्त है ।

पश्चिमी तथा पूर्वी हिंदी क्रियाओं के भूतकाल के रूपों में पर्याप्त अन्तर है ।

पश्चिमी हिंदी में समर्थक भूतकालिक क्रियाओं के कर्माणि प्रयोग मिलते हैं अर्थात् सकर्मक भूतकालिक क्रियाओं के साथ 'ने' परसर्ग का प्रयोग नियमित रूप में एक प्रमुख विशेषता के रूप में उपलब्ध है, परंतु पूर्वी हिंदी में इस प्रकार से प्रयोग नहीं मिलते, यहां सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूपों में भी कर्तरि प्रयोग ही मिलता है ।

भूतकालिक क्रिया का सम्पादन पश्चिमी हिंदी में 'आ' से होता है-चला किया । किंतु पूर्वी हिंदी में भूतकालिक क्रिया का सम्पादन 'स' या 'न्ह' से होता है-स-कहिस, सुनिस, न्ह-कीन्ह, कीन्हा'

भविष्य काल के लिए पश्चिमी हिंदी में 'गा' रूप मिलता है और ब्रजभाषा में 'ह' भविष्य वाला रूप मिलता है परंतु पूर्वी हिंदी में 'ब' भविष्य के रूप मिलते हैं । ■

लेखक कृपया ध्यान दें

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा विभाग' में प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं ।

हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किया जाएगा ।

लेख ए-4 आकार के कागज पर दो प्रतियों में टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यतः तीन हजार शब्दों से अधिक का न हो ।

लेख के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक कृति है ।

लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है ।

यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा ।

कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजें ।

—संपादक
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय
चौथा तल, बी विंग, एन डी सी सी-II भवन,
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23438137

सुमित्रानंदन पंत के काव्य में प्रकृति चित्रण

–प्रा. रूपाली संपत दलवी*

सुमित्रानंदन पंत छायावाद के आधार स्तंभों में से एक हैं । प्रकृति-चित्रण छायावादी काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है । छायावाद के सभी कवियों ने अपने काव्य में प्रकृति का सुंदर चित्रण किया है । पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है । चिंतन की विविध भावभंगिमाओं को पंत ने अत्यंत सुंदरता के साथ आधोरेखित किया है । भाव चाहे किसी भी प्रकार का हो उसे वह प्रकृति के माध्यम से स्पष्ट करते हैं । पंत के काव्य में प्रकृति-चित्रण का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है । यह कह सकते है कि प्रकृति ही उनके काव्य की प्रेरण स्रोत रही । पंत बचपन में ही मातृस्नेह से वंचित हो गए इसके पश्चात प्रकृति की गोद में वह पले-बढ़े प्रकृति को निकटता से देखने का अवसर पंत को मिला । उनके मानस में प्रकृति भिन्न रूपों में बसी जिससे प्रेरित होकर प्रकृति के जीवंत और कोमल रूपों का अत्यंतिधक सुंदर वर्णन उन्होंने अपने काव्य में किया । प्रकृति के लगभग सभी तत्व पर्वत, समुद्र; वन, उपवन, फूल, पत्ते, मिट्टी आदि एक-एक तत्व को पंत ने सुंदरता के साथ रेखांकित किया ।

प्रकृति की तरफ देखने का पंत का दृष्टिकोण भले ही बदला हो लेकिन प्रकृति जैसा-तत्व उनके काव्य में अटल रहा । प्रकृति के प्रति पंत की रागात्मक रुची कभी मानवीय सुख-दुख में कभी नारी के सौंदर्य में तो कभी आध्यात्मिक रूप में प्रतिफलित होती रही । पंत को प्रकृति और सौंदर्य का जबरदस्त आकर्षण था ।

पंत की आरंभिक रचनाओं में प्रकृति के प्रति बाल-सुलभ भाव नजर आता हैं । इस जिज्ञासा भाव के प्रति उनका मोह इतना जबरदस्त है कि उन्हें हर प्रकार का आकर्षण भी तुच्छ प्रतित होता है । प्रकृति के प्रति पंत का यह बाल-सुलभ आकर्षण "मौन निमंत्रण" जैसी कविता में अत्यंत स्पष्ट रूप में उभर आता है

"न जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन ।
न जाने, तपक तड़ित में कौन
मुझे इंगित करता तब मौन ।
न जाने सौरभ के मिस कौन
संदेशा मुझे भेजता मौन ।

पंत ने निसर्ग सुषमा के साथ बाहों में बाहें डालकर मनोविनोद किया, हिमाद्री ने आदर्श निर्धारित किए हरी-भरी उपत्कीओं ने उनके हृदय पर इतने गहरे संस्कार किए कि उनका मन और आत्मा सृष्टि सौंदर्य से पवित्र एवम् पावन होने लगे । इसलिए अपने "खिलौना" उपन्यास में पंत लिखते है-"संसार में सौंदर्य कहा कम है ? कोई वस्तु तो दृष्टिपथ में सौंदर्य हीन विचरती ही नहीं ।"

प्रकृति के प्रति पंत के चिंतन और भाव-जगत के विकास क्रम को देखे तो लगता है-"वीणा का कति प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध है —

"सिखा दो ना हे मधुप कुमारि !
मुझे भी अपने मीठे गान ।
कुसुम के चुने कहोरों में
करा दो ना कुछ-कुछ मधुपान ।

"ग्रंथी" में प्रकृति का चित्रण तो अवश्य है लेकिन वह नारी सौंदर्य के अंकन का पूरक बनकर उभरा है । प्रकृति की अपेक्षा नारी का सौंदर्य उन्हें आकृष्ट कर रहा है । "गुंजन" में भी प्रकृति के विविध अपादानों पर नारी भावनाओं का आरोप किया है—

"दिन की आभा दुल्हिन बन
आई निशि निभृत शयन पर
वह छबि भूई सी,"

* संदिपनगर मार्केट यार्ड के पीछे, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

"पल्लव" में पंत वास्तव में प्रकृति की ओर आकर्षित दिखते पंछी, झरने, बादल, पवन, वसंत आदि उन्हें आकर्षित d j jgsgs—

"आज पल्लवित हुई है डाल
झुकेगा कल गुंजित मधुमास
मुग्ध होंगे लघू से मुधु बाल
सुरभि से अस्थिर मरुताकाश ।"

पंत ने अपने छायावादी काव्य में प्रकृति के कोमलतम रुपों को चित्रित किया है । "युगांत" युगवाणी", "ग्राम्या" "जैसी रचनाओं में कवि का प्रगतिवादी रूप दिखाई देता है । इन रचनाओं में भी पंत ने प्रकृति-चित्रण किया है लेकिन प्रकृति के सौंदर्य की उपेक्षा उसके उपादेय पक्ष को अधिक महत्व दिया हैं —

सुमनों से स्मिति, विहगों से स्तर
सुंदरता से छवि: मधु से यौवन वर,
सुंदरता आनंद प्रेम का
भू पर विचार-करो नव उत्सव ।

काव्य लेखन के इस पडाव में उन्होंने "ताज" जैसे तत्व को भी उपयोगिता हीन बताया है । तो प्रकृति की उपयोगिता के पक्ष पर कैसे बल न देते । प्रकृति का उन्होंने इस पडाव पर अत्यंत सुंदर चित्रण किया है । वे प्राचीनता को हटाकर नवीनता के लिए जगह बनाने का आदेश प्रकृति के माध्यम से ही संसार को देते है —

"द्रुत झरों जगत के जीर्ण पत्र
हे स्रस्त-ध्वस्त हे शुष्क, शीर्ण ।
हिम ताप-पीत, मधुवात-भीत
तुम वीत-राग-जड पुराचीन । ।"

काव्य लेखन के अंतिम पडाव पर कवि पंत ने "स्वर्ण किरण", 'स्वर्णधुली', 'लोकीयतन' जैसी रचनाएँ रची इनमें वे स्थुल जगत को छोड़कर प्रैढरूप में आत्मचिंतन करने के लिए प्रकृति का ही सहारा लेते है । सृष्टि को सत्य, शिवम, सुंदरम, रूप में विकसित करना ही पंत की दृष्टि में ब्रम्हराधना है—

"शिव नित शिवतर में होता विकसित,
श्री सुंदरता बनती सुंदरतम,
सत्य महत्तर बन कृतार्थ होता
निखिल सृष्टि में स्वर्णिम संगतिक्रम ।

जीवन की भयंकरता को परिवर्तन जैसे अटल सत्य को वे प्रकृति का रौद्र रसात्मक चित्रण करके ही समझाते हैं और परिवर्तन का सकारात्मक पक्ष भी प्रकृति-चित्रण के माध्यम से ही समझाते है—

"पुष्पवृष्टि हो,
नव-जीवन सौंदर्य सृष्टि हो
जो प्रकाश वर्षिणी दृष्टि हो ।
. . . . . .
खिले धरा पर जीवन शतदल
कूक उठे फिर कोयल ।"

पंत के द्वारा चित्रित प्रकृति के रूप अलग-अलग है लेकिन ये बात सच है कि उनके साहित्य में प्रकृति आदि से लेकर अंत तक छाई हुई है । पंत ने आलंबनात्मक, उद्दीपनात्मक आदि घिसे-पिटे रूप में प्रकृति-चित्रण करने की अपेक्षा प्रकृति का मानवीकरण करने पर अधिक बल दिया है । पंत के प्रकृति चित्रण की प्रधान दो विशेषताएं हैं पहली यह कि पंत प्रकृति के विविधरूप इतने साक्षात अंकित करते है कि वे जीवंत बनकर आँखों के सामने आते है और प्रकृति संगीत और चित्र का त्रिवेणी संगम मुर्तिमंत हो उठता है ।

प्रकृति के गद्यात्मक सौंदर्य को भी पंत ने अत्यंत सुंदरता से चित्रित किया है । उदाहरण स्वरूप उनकी "नौकी विहार" कविता को देखा जा सकता है । पंत का काव्य प्रकृति चित्रण की समस्त विशेषताओं से भरपूर है । उनकी काव्य प्रकृति के मधुर-मधुर चित्रों से सजा है । प्रकृति के सौंदर्यपूर्ण उपकरणों का अलंकरण के साथ उपयोग संभवत : पंत के काव्य से ही शुरू हुआ ।

पंत का सौंदर्य चित्रण उनका प्रकृति प्रेम एक सीमा के साथ इतना बढ़ा हुआ है कि अनायास ही ऐंदिकता से ऊपर उठ चुका है । अंतत: पंत के प्रकृति प्रेम को लेकर नगेंद्र का यह कथन—

"पंत जी प्रकृति के साथ ऐसे घुलमिल गए हैं कि उसके प्रत्येक स्वरूप का उनके निर्मल हृदय पर स्पष्ट चित्र उतर आया है ।" शतप्रतिशत सत्य लगता है । कहने की-आवश्यकता नहीं कि-पंत ने और उनकी प्रकृति ने पाठकों को सदा आनंद प्रदान किया है । ■

संस्कृति

इंडो-पोर्चुगीज़ गोअन साहित्य:

—मनिशा पाल*

गोअन साहित्य में पूर्वदेशीयता पोतुगली भाषा में; मेरीयानो ग्रसियस और नस्सिमेंतो मेंदोन्सा

हमारी हिन्दू संस्कृति सनातन संस्कृति मानी जाती रही है, गोंअन सभ्यता में भी हमें यह प्राचीन संस्कृति की झलक गोंअन साहित्य में देखने को मिलती है, अंतोनियो गल्वाओ (1556) को इंडो-पोर्चुगीज़ साहित्य का आरंभकर्ता माना जाता है. क्रिस्तोवं एरेस (1853-1930). मरिअनों ग्रासिअस (1871-1931), मनुएल संसस फेर्नान्देस (1886-1915), फ्लोरिअनो बर्रेतो (1877-1905), पुलिनो दिअस (1974-1919), नस्सिमेंतो मेंदोंसा (1884-1926), हिपोलितो मनसे रोद्रिगुएस (1902-1947) और अएओदतो बर्रेतो (1905-1937). इस साहित्य के प्रमुख कवियों में से है. इन कवियों ने हमें बहुत सी सुंदर कविताएं दी है जैसे:

मोगा बाई, निर्वाण, अहित्यआ, भिस्मसुर, सीता बाई, छोटी देव् दासी वत्सला, आदि... सभी कविताएं पोर्तुगाली भाषा में ही लिखी गयी हैं.

मेरीयानों ग्रसियस और नॅसैमेंटो मेंदोन्सा दोनों ही कवियों की कविताओं में भी यह हिन्दू संस्कृति मुख्य रूप से पाई जाती है.

"Oracao ao Surya" (सूर्य उपासना) मरिअनो ग्रासिअस की प्रसिद्ध कविताओं में से एक है. इसमें कवि अपने भारतीय होने की महिमा का वर्णन करता है और अपने इश कृष्ण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा और अनंता ब्रह्मा को श्रद्धा से प्रणाम करता है और इस भारतीय संस्कृति से निर्मित सभी वस्तुओं को पूज्यनीय मानता है, जैसे:

«Oração ao Surya
Surya! Meu lindo sol esplendido do Oriente
Oh grande Surya, eu te saudo reverente!
Eu te ergo, meu bom Sol, e de brucos no chao
Na fé dos meus Avós, a minha saudação.
Arya do Antigo rito, Arya de velha lenda,
Aqui te ergo do humbral da minha pobre tenda
Como ao meu deus Krishna, Vishnu, Shiva ou Brahma
O' Ananta Supremo, o meu alto Salama.

O' fecundante Sol! O' Creador sublime
Embaixador de Deus que em todo o ser imprime
A chancela de luz ! tu que doiras e aquces
O homem, a fera, a flor, pedra, a planta, as messes,
A miseria, a velhice, agasalhando os nús

Bendito sejas tu, Ó grande deus de Luz.

Surya ! Ó minha alegria e meu velho brazeiro
O teu ardente beijo é que me fez trigueiro,
Da tua luz, do teu calor, da tua graca
E' feito o meu Paiz, é feita a minha Raca
E a minha amada, e a minha irmã, e minha mae
Foram feitas por ti trigueirinhas também.»!

(सूर्य ! मेरे सुंदर उत्साही पूर्वी सूर्य

ओ महान सूर्य ! मैं आपको आदर से प्रणाम करता हूँ

* ए-23/जी-4, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095

हमारी वंश परंपरा के अनुसार मैं आपको साष्टांग प्रणाम करता हूं
मैं अर्यावंशी ऋषिकुल का बालक अपने तहेदिल से अपना सर्वस्य अर्पण करता हूं,

ओ श्रेष्ठ अनंत, आपको मेरा प्रणाम उसी प्रकार है जिस तरह मैं भगवान कृष्ण, विष्णु, शिव और ब्रह्मा को प्रणाम करता हूं.

ओ जीवन दाता सूर्य ! ओ अवर्णनीय रचियता
आप भगवान के राजदूत जो अत्यंत प्रशंसनीय है
ओ उर्जा के स्रोत ! आप ही सबसे चमकीले और उष्णता प्रदान करने वाले हैं
इंसान, जानवर, फूल, पत्थर, पौधा, फसल, गरीब, अमीर, नंगे और बूढ़े, आप सभी पर समान रूप से कृपा करने बरसाने वाले हो.

ओ सूर्य मेरे परम आनंद ! ओ प्राचीनतम !
आपकी उत्साह पूर्ण चुम्बन ने मुझे जैसे कांसे के रंग सा कर दिया है
आपकी रोशनी ने ही तो मेरे देश को, मेरे वंश को, मेरी प्रियसी को, मेरी बहिन को और मेरी माँ को और
हाँ हम सभी को अपने ही अपने ही रंग में रंग कर कांसे के रंग सा बना कर पूर्ण रूप से पूर्वी बना दिया हैं)

नस्सिमेंतो मेंदोंसा भी बहुत लोकप्रिय लेखको में से हैं, जो कल्पनात्मक, सृजनात्मक, रहस्यसत्मक, ब्रह्माण्डोत्पत्ति संबंधी और आध्यात्मिक रचनाओं से सभी को आश्चर्य चकित कर देती है. उदाहरण के तौर पर 'A Morta' (एक मृतक, राम जो सीता के वियोग में तरप रहे हैं) एक अत्युत्तम रचना है तो कि भारतीय संस्कृति के रामायण महाकाव्य पर आधारित है उसमें मेंदोंसा, बोठो (Botho) की सूर्य उपासना को कुछ इस तरह रचते हैं :

«**Oração do Botho ao Surya**
Surya divino e respendente!
O Sol, doirada mistica urna
Sejas bendito eternamente
Surya que beijas docemente
Minha alma, triste flor nocturna.

O tu que a beijas e a fecundas!
O' luz que es pão,ó luz que es sangue!
Sol que de amor e luz inundas
As almas simples e prefundas,
Volve-me em luz est'alma exangue.

Arraanca, O Sol,dos corações,
Toda a ruim e rasteria herva
Engr'nalda-os de astros e illusoes ;
Enche-os de flor's de clarões
E nela só a luz conserva.»[2]

(ओ पवित्र और दमकते सूर्य !
ओ सूर्य, चमकीले और रहस्यमयी गोल आकृति बाले
आप अनन्तकाल तक वरदान देने वाले हैं,
ओ सूर्य, वो आप हैं जिसने मेरी आत्मा, जो एक रात्रिकालीन पुष्प के समान है
उसे प्यार भरा चुम्बन किया.
और वो आप हीं हैं जिसके स्पर्श से यह भूमि उपजाऊ हो जाती है
आपकी ही रोशनी से रोटी नसीब होती है,
और सूर्य वो आप हैं जो प्यार भरी रोशनी और अनंत कृपा बरसाते है उन साधारण और शुद्ध आत्माओं पर.
उसी रोशनी में मेरी भी थकी हुई आत्मा उत्साहित हो जाती है.

उखाड़ दीजिए ओ सूर्य, सभी दिलों से
सभी अनर्थकारी और अपकारी खर-पतवार को;
पहना दीजिए उसे अब नए सपनो और सितारों का ताज,
भर दीजिए उसमें अब फूल और चमक
और बस उसमें रहे रोशनी सदा के लिए)

निष्कर्ष:

हम कह सकते हैं की भले ही गोवा में पोर्तुगाली अधिशासन चार सौ पचास साल तक रहा हो (1510-1961) और उस दोरान चाहे गोवा के वासियों ने बहुत जुल्म सहा हो जिसमें धरम परिवर्तन का एक बड़ा ही उग्र रूप सामने आता है जिसमें गोवा (हिन्दू) वासियों को ईसाई बनाया गया और उन पर पश्चिमी सभ्यता के तौर तरीके, रहन सहन, पोर्तुगाली नाम और पोर्तुगाली भाषा को बलपूर्वक थोपा गया मगर यह ईसाई धर्म, भारत में प्रचलित जाति प्रथा को नहीं समाप्त कर सका और इससे एक नए धर्म की स्थापना हुई जिसे कहा जा सकता है : हिन्दु-क्रिस्टियन संकरित धर्म जिसका प्रमाण स्वरूप हमें मिला एक नया *इंडो-पोर्चुगीज़: गोंअन साहित्य*, जिसमें भावनाएं और विचार भारतीय हिन्दु संस्कृति की है लेकिन भाषा पोर्तुगाली है।

* [1]पोप, एठेल म इंडिया इन .पोर्चुगीज़ लिटरेचरएशियन अयेदुकश्रल सर्विसेस .नयी दिल्ली., 1989 पृष्ठ 247
[2]पोप, एठेल म इंडिया इन .पोर्चुगीज़ लिटरेचरएशियन अयेदुकश्रल सर्विसेस .नयी दिल्ली., 1989 पृष्ठ 269

मैट्रीकेरिया कैमोमाइल की खेती है लाभकारी

–डॉ. आर.एस. सेंगर एवं अमित कुमार*

यह मूलतः दक्षिणी व पूर्वी यूरोप मूल का पौधा है। यह सूरजमुखी कुल एस्ट्रेसी का सदस्य है इसका वनस्पतिक नाम मैट्रीकेरिया कैमोमाइल है। व्यावसायिक रूप से बहुत बड़े क्षेत्रफल पर इसकी खेती यूरोपीय देशों में की जाती है जिसमें जर्मनी, हंगरी, रूस और यूगोस्लाविया इत्यादि प्रमुख है। इसको हिंदी में बाबुन फूल, अंग्रेजी में वाइल्ड कैमीमिल के नाम से जाना जाता है। भारत में इसका आगमन मध्य यूरोप से हुआ था। इस समय से इसकी खेती भारत में उत्तर प्रदेश में मैदानी क्षेत्रों तथा हिमाचल प्रदेश में की जा रही है।

यह शाकीय पौधा है इसका पौधा एक वर्षीय, 60-90 से.मी. तक ऊंचाई वाला एवं बहुशाखाओं से मुक्त होता है। इनके पत्ते छोटे बारिक और कुछ लम्बे होते हैं शाखाएं हरी बारीक एवं नाजुक होती है। इसके फूल जीभकाकार एवं इकहरी और दोहरी धुड़िया होती है। शाखाओं के अग्र भाग पर पुष्प उत्पन्न होते हैं जिनका रंग सफेद होता है तथा जिनसे लगभग 40-50 बीज, जो वजन में अत्यधिक हल्के होते है, उत्पन्न होते है

भौगोलिक विवरण

यह पौधा सम्पूर्ण भारत में सुगमता से पाया जाता है। भारत के अतिरिक्त यह पौधा जर्मनी, फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, बेलजियम, स्पेन, रूमानिया, रूस, मिश्र, जापान, स्विटजरलैण्ड,अर्जेन्टाइना आदि देशों में भी पाया जाता है।

औषधीय उपयोग

मैट्रीकेरिया कैमोमाइल (जर्मन चमोली) के सूखे पुष्पों से तेल निकाला जाता है। पुष्पों से निकले गए गहरे नीले रंग के तेल का प्रयोग शोध रोधी, कामोदीपक, मूत्रल आक्षेपरोधी, आइसक्रीम, कैन्डीज, च्यूइंगम आदि पदार्थों को सुगन्धित बनाने के लिए किया जाता है। इसके फूलों से तैयार की गई चाय यरोप में सर्दी दूर करने तथा खांसी के इलाज में सहायता प्रदान करने के साथ-साथ पाचन विकारों को ठीक करने में इस्तेमाल की जाती है। इसके फूल एवं पौधे औषधी के रूप में भूख बढ़ाने, पेट के अलसर, ताकत बढ़ाने, सर्दी जुकाम आदि के निवारण में प्रयुक्त होती है। साथ ही बालों के लिए डाई बनाने के काम आते हैं। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग अनेकों सौन्दर्य प्रसाधानों, एन्टीसेप्टिक लोशन, उच्च कोटि के साबुन, त्वचा सम्बन्धी रोगों के निवारण में तथा टूथपेस्ट आदि बनाने में भी किया जाता है।

सक्रिय घटक

मैट्रीकेरिया कैमोमाइल के तेल एजुलनीन प्रमुख तत्व होता है। इसके अतिरिक्त तेल में फ़ेरिल एल्कोहल, ट्राइ-कोनलोनए एवं कैडेलीन अर्शरी एल्कोह पाये जाते है।

जलवायु

मैट्रीकेरिया (जर्मन चमेली) को उष्ण तथा उपोष्ण, दोंनों प्रकार की जलवायु में, समुद्रतल से 1500 मीटर की ऊंचाई तक सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। बीजों के अच्छे अंकुरण के लिए 18-20 डिग्री सेंटीग्रेट तापमाप उपयुक्त रहता है। मैदानी क्षेत्रों में इसे शीत, ऋतु की फसल के रूप में तथा पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रीष्म ऋतु की फसल के रूप में उगाया जाता है।

मृदा

मैट्रिकेरिया के पौधों को विभिन्न प्रकार की मृदा में आसानी से उगाया जा सकता हे। इसके लिए अनुकूलतम

*सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय मेरठ-250110

पी.एच.मान. 7.0 है, परन्तु इसकी खेती सीमांत उसर भूमि, जिसका पी.एच.मान. 8.0-9.5 तक हो, में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है । इसके लिए अच्छी मृदा एवं उचित जल निकास का होना अत्यन्त आवश्यक है ।

प्रर्वधन

मैट्रिकेरिया कैमोमाइल का प्रवर्धन बीजों द्वारा होता है । इसलिए इसको आसानी से उगाया जा सकता है तथा इसको एक स्थान से दूसरे स्थान पर बीजों की सहायता से आसानी से पहुंचाया जा सकता है ।

रोपणी (नर्सरी) की तैयारी एवं रोपाई

नर्सरी तैयार करने के लिए खेत में 1-1.5 सें.मी. चौड़ी, 7.5 सें. मी. ऊँची एवं 6-7 मीटर लम्बी क्यारियां बनाकर उनमें पर्याप्त मात्रा में सड़ी हुई गोबर की खाद मिला देते हैं । एक हैक्टर क्षेत्र में रोपण हेतु लगभग 1 से 1.25 कि.ग्रा. बीज, जिसके लिए 500 वर्गमीटर स्थान की आवश्यकता होती है । नर्सरी में बीज को बालू में मिलाकर, सितम्बर-अक्तूबर माह में लगभग एक सें.मी. की गहराई पर एवं 10-15 सें.मी. की दूरी पर पंक्तियों में बोते है । अच्छी पैदावार के लिए वैलारी प्रजाति को बुआई में प्रयोग करते हैं ।

बीजों के अच्छे जमाव के लिए नर्सरी में हजारे से हल्की सिंचाई के द्वारा नमी को बनाये रखते हैं । बीज अंकुरित होने में 15-20 दिन का समय लगता है । जब पौध 7-8 सप्ताह के हो जाएं, तब उसे मुख्य खेत में 30x30 सें. मी. की दूरी पर लगाकर हल्की सिंचाई कर देते हैं ।

खेत की तैयारी एवं खाद तथा उर्वरक

मैट्रिकेरिया कैमोमाइल की अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए खेत को सर्वप्रथम एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में तीन-चार बार देशी हल से जोतकर एवं पाटा लगाकर भुरभुरा बना देते हैं । खेत की अन्तिम जोताई के समय 25-30 टन सड़ी हुई गोबर की खाद डालकर अच्छी तरह मिला देते हैं । इसके अतिरिक्त फसल में 70 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 80 कि.ग्रा. फासफोरस तथा 50 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हैक्टर भी देते हैं ।

नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के समय डालते हैं । नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा को खड़ी फसल में छिड़काव के द्वारा दो बार में डालते हैं ।

सिंचाई

मैट्रिकेरिया कैमोमाइल की जड़ें उथली होने के कारण गहरी सतह से पानी नहीं ले पाती हैं, इसलिये इस फसल में पानी देने की बारम्बारता अधिक रखनी पड़ती है । सिंचाई 8-10 दिन के अन्तराल पर करते रहते हैं ।

निराई-गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण

खेत में पौधे लगाने के 15-20 दिन बाद हल्की एलर्जीरोधी तथा शक्तिदायक होती है तथा इसका प्रयोग निराई-गुडाई करना लाभदायक रहता है जिससे खरपतवार नष्ट होने के साथ-साथ भूमि में हवा का संचरण भी ठीक रहता है । दूसरी बार निराई गुड़ाई पुष्प आने के पूर्व जनवरी माह में करते हैं । खरपतवारनाशी रसायन आक्सीफलूरोफेन की 400-600 ग्राम की मात्रा को प्रति हैक्टर की दर से छिड़क कर खरपतवारों को नष्ट किया जा सकता है ।

कीट एवं बीमारियां

यद्यपि इस फसल पर कीड़ों एवं बीमारियों का प्रकोप बहुत कम होता है लेकिन कभी-कभी निम्नलिखित कीट फसल पर आक्रमण कर उसे हानि पहुचाते हैं:-

1. **मैट्रीकेरिया माइनर:** इस कीट का आक्रमण होने पर पौधों से पुष्प गिर जाते हैं जिसको 20 प्रतिशत ई.सी.लिन्डेन धूल के छिड़काव से फसल को बचाया जा सकता है ।
2. **एन्टोग्राफ काइसम:** इस कीट आक्रमण होने पर पौधों से पत्तियों का समय से पूर्व गिरना बढ़ जाता है जिससे पौधा खाली दिखाई पड़ता है । कीट के नियंत्रण के लिये 0.5-1.0 प्रतिशत इन्डोसल्फान का छिड़काव करना लाभदायक रहता है ।
3. **लिसाइड बग:** मैट्रीकेरिया कैमोमाइल में यह भी एक हानिकारक कीट है जिसके निम्फ तथा वयस्क, दोनों पौधों से रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं । इसके नियंत्रण के लिए 0.05 प्रतिशत मैलाथियान का छिड़काव लाभदायक रहता है ।

फलों की तुड़ाई एवं उपज

भारत के मैदानी क्षेत्रों में फरवरी से मध्य अप्रैल तक पुष्प लगते हैं, जिनकी 4-5 बार तुड़ाई की जाती है ।

परिपक्व पुष्पों का रंग सुनहरा दिखाई पड़ता है तथा फूल के दलपुंज जब झुकने लगे तो इस समय फूलों की तुड़ाई कर लेनी चाहिए । फूलों की दूर से तुड़ाई करने पर दलपुंज व फूल, दोनों ही गिरने लगते हैं, फलस्वरूप कम उपज प्राप्त होती है ।

सामान्यत: एक हैक्टर क्षेत्र से 40-50 क्विंटल ताजे पुष्प प्राप्त हो जाते हैं तथा सुखाने पर 10-12 क्विंटल सूखे फूल प्राप्त होते हैं ।

फूलों को सुखाना एवं भण्डारण

पौधों से पुष्पों को तोड़ने के समय उनमें लगभग 65-85 प्रतिशत तक नमी होती है जिनको छायादार एवं हवादार स्थान पर पतली तह में फैलाकर सुखा लिया जाता है । सूखते समय फूलों को 3-4 बार उलटा एवं पलटा जाता है जिससे कि फूल अच्छी तरह सूख जाएं । सुखाने के बाद उनको नमी रहित प्लास्टिक के बोरों में भण्डारित किया जाता है ।

बीज का उत्पादन

मैट्रीकेरिया कैमोमाइल का पर्वधन बीज द्वारा किया जाता है, इसलिए फसल से अधिक एवं गुणवत्ता युक्त बीज प्राप्त करने के लिए पुष्पों की 3-4 चुनाइयों, की आवश्यकता होती है । तुड़ाई के बाद चुनाई नहीं करते और पुष्पों को बीज उत्पादन हेतु छोड़ देते हैं । एक हैक्टर क्षेत्र से लगभग 150-200 कि.ग्रा. बीज प्राप्त होता है जिसे पुन: बुआई हेतु प्रयुक्त किया जाता है ।

बाजार मूल्य

मैट्रीकेरिया कैमोमाइल के सूखे हुए पुष्पों का वर्तमान बाजार मूल्य 100-150 रुपये/किलोग्राम तक होता है ।

आय-व्यय का ब्यौरा

मैट्रीकेरिया की खेती पर होने वाली अनुमानित लागत व प्राप्ति का आर्थिक विवरण प्रति हैक्टर निम्न प्रकार है ।

	विवरण	खर्चा (रुपयों में)
1.	खेत की तैयारी	2000
2.	बीज (500 ग्रा.)	500
3.	बुआई की मजदूरी	3500
4.	उर्वरक व पेस्टीसाइड	2000
5.	सिंचाई व निराई-गुडाई	1000
6.	तुडाई व मजदूरी	2500
7.	अन्य खर्चे (संग्रहण/ढुलाई आदि)	1000
	कुल लागत	**12500**

सूखे फूल का उत्पादन (प्रति हैक्टर) = 20 क्विंटल

150 रुपये प्रति क्विंटल के हिसाब से कुल प्राप्त रुपये (प्रति हैक्टर) =300.000

शुद्ध लाभ = कुल प्राप्त रुपये -कुल लागत

शुद्ध लाभ = 300,000-12.500

शुद्ध लाभ = 28.7500 ■

सूचना प्रौद्योगिकी

इण्टरनेट पर हिंदी ब्लॉगिंग का दशक : विविध आयाम

–आकांक्षा यादव*

भूमंडलीकरण ने समग्र विश्व को एक ग्लोबल विलेज में परिवर्तित कर दिया, जहाँ सूचना-प्रौद्योगिकी के बढ़ते कदमों के साथ सारी जानकारियाँ एक क्लिक मात्र पर उपलब्ध होने लगी । वास्तविक दुनिया की बजाय लोग आभासी दुनिया में ज्यादा विचरण करने लगे । भूमंडलीकरण, उदारीकृत अर्थव्यवस्था, संचार क्रांति, सूचना का बढ़ता दायरा एवं इस क्षेत्र में प्रविष्टि होती नवीनतम प्रौद्योगिकियों ने पूरी दुनिया के और करीब ला दिया और इसी के साथ एक नए प्रकार के मीडिया का भी जन्म हुआ । एक ऐसा मीडिया जहाँ न तो खबरों के लिए अगले दिन के अखबार का इंतजार करना पड़ता है और न ही इलेक्ट्रानिक मीडिया की भूलभुलैया में दौड़ना होता है । अलमारियों की बंद किताबों से अलग इसे दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर किसी भी समय पढ़ा-देखा जा सकता है । यह दौर है नित्य अपडेट होती वेबसाइट्स का सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटस का और ब्लागिंग का । वेबसाइटस के लिए प्रोफेशनलिज्म व धन की जरूरत है, वहीं सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट्स की अपनी शाब्दिक सीमाएं हैं । इससे परे ब्लॉग या चिट्ठा एक ऐसा स्पेस देता है, जहाँ लोग अपनी अनुभूतियाँ को न सिर्फ अन-सेंसर्ड रूप में अभिव्यक्त करते हैं बल्कि पाठकों से अंतहीन खुला संवाद भी स्थापित करते हैं । आज ब्लॉगिंग (चिट्ठाकारी) का आकर्षण दिनों-ब-दिन बढ़ता जा रहा है । जहाँ वेबसाइट में सामान्यतया एकतरफा सम्प्रेषण होता है, वहीं ब्लॉग में यह लेखकीय-पाठकीय दोनों स्तर पर होता है । ब्लॉग सिर्फ जानकारी देने का माध्यम नहीं बल्कि संवाद, प्रतिसंवाद, सूचना विचार और अभिव्यक्ति का भी सशक्त ग्लोबल मंच है । ब्लॉगिंग को कुछ लोग खुले संवाद का तरीका मानते हैं तो कुछेक लोग इसे निजी डायरी मात्र । ब्लॉग को ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में कुछ इस प्रकार परिभाषित किया गया है–"एक इंटरनेट वेबसाइट जिसमें किसी की लचीली अभिव्यक्ति का चयन संकलित होता है और जो हमेशा अपडेट होती रहती है ।"

वर्ष 1999 में आरम्भ हुआ ब्लॉग वर्ष 2012 में 13 साल का सफर पूरा कर चुका है । गौरतलब है कि पीटर महारेल्ज ने 1999 में 'वी ब्लॉग' नाम की निजी वेबसाइट आरम्भ की थी, जिसमें से कालान्तर में 'वी' शब्द हटकर मात्र 'ब्लॉग' रह गया । 1999 में अमेरिका में सैनफ्रांसिस्को में इण्टरनेट में ऐसी अनुपम व्यवस्था का इजाद किया गया, जिसमें कई लोग अपनी अभिव्यक्तियाँ न सिर्फ लिख सकें बल्कि उन्हें नियमित रूप से अपडेट भी कर सकें । अगस्त 1999 में पियारा लैब्स के इवान विलियम्स व मैग होरिहान ने ब्लॉगर नाम से मुफ्त ब्लॉगर सेवा आरंभ की, जिसकी लोकप्रियता देखते हुए बाद में गूगल ने खरीद लिया । यद्यपि कुछ लोग ब्लॉग का आरम्भ 1994 से मानते हैं जब एक युवा अमेरिकी जस्टिन हॉल ने ऑन लाइन डायरी रूप में अपनी अभिव्यक्तियाँ नियमित रूप से अपनी वेबसाइट में लिखना आरंभ किया तो कुछ लोग इसका श्रेय 1997 में जान बर्जन द्वारा आरंभ की गई 'वेबलॉग' यानी इण्टरनेट डायरी को भी देते हैं । ब्लॉग की शुरुआत में किसी ने सोचा भी नहीं था कि एक दिन न्यू मीडिया के पर्याय रूप में ब्लॉग इतनी बड़ी व्यवस्था बन जाएगा कि दुनिया की नामचीन हस्तियाँ भी अपनी दिन की बात इसके माध्यम से ही कहने लगेंगी । आज पूरी दुनिया में 15 करोड़ से ज्यादा ब्लॉगर्स हैं जिनमें 4 करोड़ से ज्यादा लोग ब्लॉग सिर्फ अंग्रेजी में लिखते हैं । टेक्नोरटी द्वारा किए गए सर्वेक्षण की माने तो विश्व के कुल ब्लॉग्स में से सर्वाधिक 37 प्रतिशत जापानी भाषा में, 36

*टाइप 5, निदेशक बंगला जी.पी.ओ. कैंपस सिविल लाइन इलाहाबाद-211001

1855 HA/13—8.

प्रतिशत अंग्रेजी और 8 प्रतिशत के साथ चीनी तीसरे नम्बर पर है। इसके मुकाबले भारत में मात्र 37 लाख लोग ब्लॉगिंग से जुड़े हुए हैं और इनमें भी हिंदी ब्लॉग की संख्या लगभग 30 हजार के करीब है। यद्यपि वैश्विक स्तर पर हिंदी में ब्लॉगिंग करने वालों के 80 हजार से एक लाख तक के आंकड़े बताए जा रहे हैं। स्पष्ट है कि हिंदी ब्लॉगिंग को अभी बहुत लम्बा सफर तय करना है । वर्ष 2003 में यूनीकोड हिंदी में आया और तदनुसार हिंदी ब्लॉग का भी आरंभ हुआ। यद्यपि इससे पूर्व विनय जैन ने 19 अक्टूबर 2002 को अंग्रेजी ब्लॉग पर हिंदी की कड़ी सर्वप्रथम आरंभ कर इसका आगाज किया था, पर पूर्णतया हिंदी में ब्लॉगिंग आरंभ करने का श्रेय आलोक को जाता है, जिन्होंने 21 अप्रैल 2003 को हिंदी के प्रथम ब्लॉग 'नौ दो ग्यारह' से इसका आगाज किया। यहाँ तक कि 'ब्लॉग' के लिए 'चिट्ठा' शब्द भी उन्हीं का दिया हुआ है। वर्ष 2005 में वर्ड प्रेस में भी ब्लॉगिंग की सुविधा सामने आई।

ब्लॉगिंग का क्रेज पूरे विश्व में छाया हुआ है। अमेरिका में सवा तीन करोड़ से ज्यादा लोग नियमित ब्लॉगिंग से जुड़े हुए हैं, जो कि वहाँ के मतदाताओं का 20 कुल फीसदी है। इसकी महत्ता का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2008 में सम्पन्न अमरीकी राष्ट्रपति के चुनाव के दौरान इस हेतु 1494 नए ब्लॉग आरंभ किए गए। जापान में हर दूसरे व्यक्ति का अपना ब्लॉग है। तमाम देशों के प्रमुख ब्लॉगिंग के माध्यम से लोगों से रूबरू होते रहते हैं। इनमें फ्रांस के राष्ट्रपति सरकोजी और उनकी पत्नी कार्ला ब्रुनी से लेकर ईरान के राष्ट्रपति अहमदीनेजाद तक शामिल हैं। भारत के राजनेताओं में लालू प्रसाद यादव, लाल कृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, नरेन्द्र मोदी, नीतीश कुमार, शिवराज चौहान, फारूक अब्दुल्ला, अमर सिंह, उमर अब्दुल्ला तो फिल्म इण्डस्ट्री में अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान, आमिर खान, मनोज वाजपेयी, प्रकाश झा, शिल्पा शेट्टी, सेलिना जेटली, विक्रम भट्ट, शेखर कपूर, अक्षय कुमार, अरबाज खान, नंदिता दास इत्यादि के ब्लॉग मशहूर हैं। चर्चित सोशलाइट लेखिका शोभा डे से लेकर प्रथम आई.पी.एस. अधिकारी किरण बेदी तक ब्लॉगिंग से जुड़ी हैं। सेलिब्रेटी के लिए ब्लॉग तो बड़ी काम की चीज है। फिल्मी हस्तियाँ अपनी फिल्मों के प्रचार और फैन क्लब में इजाफा हेतु ब्लॉगिंग का बखूबी इस्तेमाल कर रही हैं। फिल्में रिलीज बाद में होती हैं, उन पर प्रतिक्रियाएं पहले आने लगती हैं। पर अधिकतर फिल्मी हस्तियों के ब्लॉग अंग्रेजी में ही लिखे जा रहे हैं। अभिनेता मनोज वाजपेयी बकायदा हिंदी में ही ब्लॉगिंग करते हैं और गंभीर लेखन करते हैं। अमिताभ बच्चन ने भी हिंदी में ब्लॉगिंग की इच्छा जाहिर की है। एक तरफ ये हस्तियाँ अपनी जीवन की छोटी-मोटी बातें लोगों से शेयर कर रही हैं, वहीं अपने ब्लॉग के जरिए तमाम गंभीर व सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त कर रही हैं। परम्परागत मीडिया उनकी बातों को नमक-मिर्च लगाकर पेश करता रहा है, पर ब्लॉगिंग के माध्यम से वे अपनी वास्तुस्थिति से लोगों को अवगत करा सकते हैं।

ब्लॉगिंग में भाषा की वर्जनाएं टूट रही हैं, तभी तो हिंदी देश-विदेश व उत्तर-दक्षिण की सीमओं से परे सरपट दौड़ रही है। इंटरनेट पर हिंदी का विकास तेजी से हो रहा है। गूगल से हिंदी मे जानकारियाँ धड़ल्ले से खोजी जा रही हैं। पहले जहाँ तमाम फॉण्ट के चलते हिंदी का स्वरूप एक जैसा नहीं दिखता था, वहीं यूनिकोड के माध्यम से हिंदी को अपने विस्तार में काफी सुलभता हासिल हुई। इसने जहाँ वर्णमाला के जटिल शब्दों को अपने में समेट लिया है, वहीं भारत सरकार भी वेदों, उपनिषदों, पुराणों इत्यादि में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को इसमें जोड़ने की कोशिश कर रही है। राजभाषा से परे संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का विस्तार विदेशों मे भी हुआ है। आज 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। यदि भारतीय फिल्में विदेशों में अच्छा व्यवसाय कर रही हैं तो विदेशों में बसे भारतीयों का प्रमुख योगदान है। यह वर्ग ऐसा है जो रोजगार की खोज में विदेशों में भले ही जा बसा, पर मातृभूमि से लगाव जस का तस है। उनकी रोजी-रोटी की भाषा भले ही दूसरी हो, पर उनका मन हिंदी में ही रमता है। भारत की संस्कृति, कला, साहित्य, इतिहास, रहन-सहन और यहाँ तक कि वेद-पुराणों से लेकर ज्योतिषी तक में उनकी रुचि है। ज्यों ही मौका मिलता है, वे अपनी जड़ों से जुड़ने की कोशिश करते हैं और ब्लॉगिंग जगत पूरी रचनात्मकता व ऊर्जा के साथ उनकी जरूरतों की पूर्ति करता है और इसके लिए महत्वपूर्ण स्पेस भी उपलब्ध करा रहा है। मॉरीशस, त्रिनिदाद-टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, फीजी, द. अफ्रीका जैसे देशों में जहाँ 'गिरमिटिया' के रूप में गए भारतीय अपनी संस्कृति व हिंदी को सहेजना चाह रहे हैं, उनके लिए ब्लॉगिंग रास्ता खोल रही है। एक तरफ अपनी जड़ों की तरफ देखने वाले लोग हैं, वहीं हिंदी बेल्ट में फैलता बाजार भी लोगों को आकर्षित कर रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, सिंगापुर, कनाडा, जापान, स्वीडन, आस्ट्रेलिया, स्पेन, पोलैंड, संयुक्त अरब अमीरात,

मलेशिया इत्यादि जैसे अन्यान्य देशों में रह रहे तमाम हिंदी-भाषी अपनी जड़ों से जुड़ने के लिए हिंदी-ब्लॉगिंग का सहारा ले रहे हैं । उन तक हिंदी पत्र-पत्रिकाएं भले ही न पहुँचें या हिंदी समाचार वे भले ही न सुन सकें पर ब्लॉगिंग के माध्यम से वे अपने देश-प्रदेश-जनपद-क्षेत्र में होने वाली तमाम गतिविधियों से न सिर्फ रूबरू हो रहें हैं, बल्कि उन पर अपनी प्रतिक्रियाएं देकर संवाद भी स्थापित कर रहे हैं । यह हिंदी के विकास के लिए एक सशक्त कदम के रूप में देखा जानां चाहिए । साहित्य से परे संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का विकास ऐसी ही कड़ियों से होकर गुजरता है । यह अनायास ही नहीं है कि 51 करोड़ लोगों तक पहुँच के साथ अंग्रेजी यदि दुनिया की सबसे बड़ी संपर्क-भाषा है तो 49 करोड़ के साथ हिंदी दूसरी संपर्क-भाषा है । कभी ब्रिटेन ने हम पर राज किया था पर जब वहीं के एक प्रोफेसर रूपर्ट स्नेल हिंदी के पक्ष में बोलते हैं, तो गर्व होना लाजिमी भी है - "हिंदी जिंदगी का हिस्सा है । हिंदी जिंदा है । हिंदी किसी एक वर्ग या वर्ण या जाति या धर्म या मजहब या मार्ग या देश या संस्कृति की नहीं है । हिंदी भारत की है, मारीशस की है, इंग्लैंड की है, सारी दुनिया की है । हिंदी आपकी है, हिंदी मेरी है ।"

21वीं सदी में इंटरनेट एक ऐसे महत्वपूर्ण हथियार के रूप में उभरा, जहाँ अभिव्यक्तियों के तौर-तरीके बदलते नजर आए । कभी ताम्रपत्रों और फिर कागजों (प्रिंट मिडिया) से लेकर इलेक्ट्रानिक माध्यमों तक पहुँच बनाते शब्द कब वर्चुअल हो गए पता ही नहीं चला । इन आंकड़ों पर गौर करें तो टेक्नालाजी और अवकास का अंतर्संबंध और जनजीवन में उनकी घुसपैठ का अंदाजा लगा सकते हैं । भारत में आज सात करोड़ से ज्यादा नेट-प्रयोक्ता हैं । जून 2011 में आई. बी.एम. अपनी सौवीं वर्ष गाँठ मनाकर इस क्षेत्र में मील का एक पत्थर खड़ा कर चुका है तो दुनिया भर में विविध विषयों पर ज्ञान और सूचनाओं का वर्चुअल संग्रहण कर अपनी पहचान कायम करने वाले विकिपीडिया ने जनवरी 2011 में अपनी दसवीं वर्षगाँठ पूरी कर ली । हाल के वर्षों में पूरी दुनिया में सोशल नेटवर्किंग का पर्याय बन कर उभरी ट्विटर मार्च 2010 में अपने पाँच साल पूरा कर चुकी है । 14 सितम्बर, 2011 को ट्विटर ने हिंदी में भी सीधे लिखने की सुविधा प्रदान कर दी है । ब्लॉगिंग वर्ष 2012 में 13 साल का सफर तय कर चुकी है । किसने सोचा था कि कभी निजी डायरी माना जाने वाला ब्लॉग देखते-देखते राजनैतिक व समसायिक विषयों, साहित्य, समाज के साथ-साथ फोटो ब्लॉग, म्यूजिक ब्लॉग, पोडकास्ट, वायस ब्लॉग, वीडियो ब्लॉग, सामुदायिक ब्लॉग, प्रोजेक्ट ब्लॉग, कारपोरेट ब्लॉग, वेब कास्टिंग इत्यादि के साथ जीवन की जरूरतों में शामिल हो जायेगा । आज हिंदी ब्लॉगिंग भी इसका अपवाद नहीं रही, यहाँ भी यह सभी बखूबी चीजें दिखने लगी हैं । महत्वपूर्ण किताबों के ई प्रकाशन के साथ-साथ इंटरनेट के इस दौर में तमाम हिंदी पत्र-पत्रिकाएं भी अपना ई-संस्करण जारी कर रही हैं, जिससे हिंदी भाषा व साहित्य को नए आयाम मिले हैं । इंटरनेट पर उपलब्ध प्रमुख हिंदी पत्रिकाएं हैं-हिंदी का पहला पोर्टल वेब दुनिया, अभिव्यक्ति, सृजनगाथा, हिन्दयुग्म, रचनाकार, साहित्य कुंज, साहित्य शिल्पी, लघुकथा डॉट काम, स्वर्गविभा, हिंदी नेस्ट, हिंदी चेतना, हिंदीलोक, कथाचक्र, काव्यालय, काव्यांजलि, कवि मंच, कृत्या, कलायन, आर्यावर्त, नारायण कुञ्ज, हंस, अक्षरपर्व, अन्यथ, आखर (अमर उजाला), उदन्ती, उद्गम, कथाक्रम, कादम्बिनी, कथादेश, गर्भनाल, जागरण, तथा, तद्भव, तहलका, ताप्तिलोक, दोआबा, नया ज्ञानोदय, नया पथ, परिकथा, पाखी, दि संडे पोस्ट, प्रतिलिपि, प्रेरणा, बहुवचन, भारत दर्शन, भारतीय पक्ष, मधुमती, रचना समय, लमही, लेखनी, लोकरंग, वागर्थ, शोध दिशा, संवेद, संस्कृति, समकालीन जनमत, समकालीन साहित्य, समयांतर, प्रवक्ता, अरगला, तरकश, अनुरोध, एक कदम आगे, पुरवाई, प्रवासी टुडे, अन्यथा, भारत दर्शन, सरस्वती पत्र, पांडुलिपि, हिंदी भाषी, हिंदी संसार, हिंदी समय, हिमाचल मित्र इत्यादि । इसी कड़ी में 'कविता कोश' और 'गद्य कोश' ने भी हिंदी साहित्य के लिए मुक्ताकाश दिया है । यहाँ तमाम पुराने और प्रतिष्ठित साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं में रचनाओं के संचयन के साथ-साथ नवोदित रचनाकारों की रचनाएँ भी पढ़ी जा सकती हैं ।

ब्लॉगिंग का जुनून लोगों के सिर पर चढ़कर बोल रहा है । कोई यहाँ विकल्प ढूँढ रहा है तो कोई कायाकल्प करना चाहता है तो कोई हरदम कुछ नया, आकर्षक और उपयोगी करने को तत्पर है । आज हिंदी ब्लॉगिंग में हर कुछ उपलब्ध है, जो आप देखना चाहते हैं । हर ब्लॉग का अपना अलग जायका है । राजनीति, धर्म, अर्थ, मीडिया, स्वास्थ्य, खान-पान, साहित्य, कला, शिक्षा, संस्कार, पर्यावरण, संस्कृति, विज्ञान-तकनीक, सेक्स, खेती-बाड़ी, ज्योतिषी, समाज सेवा, पर्यटन, वन्य जीवन, नियम-कानूनों की जानकारी सब कुछ अपने पन्नों पर समेटे हुए है । यहाँ खबरें हैं, सूचनाएं हैं, विमर्श हैं, आरोप-प्रत्यारोप हैं और हर किसी का अपना

सोचने का नजरिया है । तमाम तकनीकी ब्लॉग लोगों को इससे जोड़ने और नित्य नई-नई जानकारियों के संग्रहण और विजेट्स से रूबरू कराने में अग्रसर हैं । आज तमाम सामुदायिक ब्लॉग लोगों की बातों को समाज के समक्ष रखने के माध्यम बन चुके हैं । इन सामुदायिक ब्लॉगों पर जीवन के विविध रंग देखे जा सकते हैं । इनमें से कुछ विशिष्ट विषयों पर केंद्रित हैं, रिश्तों पर केंद्रित हैं, अनुभूतियों पर केंद्रित हैं, साहित्य पर केंद्रित हैं तो कुछ सर्वग्राही हैं । कुछ तो यह भी दावा करते हैं कि जो कहीं नहीं कहा जा सकता, उसे हमारे यहाँ उगल दो । इनमें से कुछ के नाम भी अजीबोगरीब लग सकते हैं । हर सामुदायिक ब्लॉग के अपने ब्लॉगर्स-लेखक हैं तो कुछ ब्लॉगर्स कई सामुदायिक ब्लॉगों से जुड़े हुए हैं । कुछ ब्लॉगर्स का अपना स्वतंत्र ब्लॉग नहीं है बल्कि वे इन सामुदायिक ब्लॉगों के माध्यम से ही ब्लॉगिंग से जुड़े हुए हैं । इन सामुदायिक ब्लॉगों पर गंभीर वैचारिक बहसों से लेकर खरी-खोटी तक कही जाती है और कई बार ऐसी बातें/खबरें भी जो महत्वपूर्ण तो होती हैं पर किन्हीं कारणवश पत्र-पत्रिकाओं या टी.वी. चैनल्स पर स्थान नहीं पातीं । इन ब्लॉगों पर स्थापित व उभर रहे रचनाकारों की विभिन्न विधाओं में रचनाएं पढ़ी जा सकती हैं । कुछ ब्लॉग तो नित्य-प्रतिदिन अपडेट होते हैं जबकि कुछ निश्चित अंतरालन पश्चात । जाति-धर्म-क्षेत्र से ब्लॉगजगत भी अछूता नहीं रहा । हर कोई अपनी जाति से जुड़े महापुरुषों को लेकर गौरवान्वित हो रहा है । नेता, अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, किसान, खिलाड़ी, पत्रकार, बिजनेसमैन, डॉक्टर, इंजीनियर, पर्यावरणविद, ज्योतिषी, शिक्षक साहित्यकार, कलाकार, कार्टूनिस्ट, वन्यजीव प्रेमी, पर्यटक, वैजानिक, विद्यार्थी से लेकर बच्चे, युवा, वृद्ध, नारी-पुरुष व किन्नर तक ब्लॉगिंग में हाथ आजमा रहे हैं । ब्लॉगिंग में पूरे विश्व में नई ऊर्जा का संचार किया है । देखते ही देखते हिंदी को भी पंख लग गए और संपादकों की काट-छांट व खेद सहित वापस, प्रकाशकों की मनमानी व आर्थिक शोषण से परे हिंदी ब्लॉगों पर पसरने लगी । हिंदी साहित्य, लेखन व पत्रकारिता से जुड़े तमाम चर्चित नाम भी अपने ब्लॉग के माध्यम से पाठकों से नित्य रूबरू हो रहे हैं । विदेशों में रहकर भी हिंदी ब्लॉगिंग को समृद्ध करने वालों की एक लम्बी सूची है ।

न्यू मीडिया के रूप में उभरी ब्लॉगिंग ने नारी-मन की आकांक्षाओं को मानो मुक्ताकाश दे दिया हो । वर्ष 2003 में यूनीकोड हिंदी में आया और तदनुसार तमाम महिलाओं ने हिंदी ब्लॉगिंग में सहजता महसूस करते हुए उसे अपनाना आरंभ किया । आज 50,000 से भी ज्यादा हिंदी ब्लॉग हैं और इनमें लगभग एक चौथाई ब्लॉग महिलाओं द्वारा संचालित हैं । ये महिलाएं अपने अंदाज में न सिर्फ ब्लॉगों पर साहित्य-सृजन कर रही हैं बल्कि तमाम राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक मुद्दों से लेकर घरेलू समस्याओं, नारियों की प्रताड़ना से लेकर अपनी अलग पहचान बनाती नारियों को समेटते विमर्श, पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण से लेकर पुरूष समाज की नारी के प्रति दृष्टि, जैसे तमाम विषय ब्लॉगों पर चर्चा का विषय बनते हैं । महिलाएं हिंदी ब्लॉगिंग को न सिर्फ अपना रही हैं बल्कि न्यू मीडिया के इस अन्तर्राष्ट्रीय विकल्प के माध्यम से अपनी वैश्विक पहचान भी बनाने में सफल रही हैं । ब्लॉग बच्चों की रचनात्मकता को भी खूब स्पेस दे रहा है । यहाँ उमंग है, किलकारियां हैं, मासूमियत है, प्यारी शरारतें हैं, नटखट अदाएं हैं । इस प्यारी दिलकश दुनिया के नन्हें-मुन्ने सितारों से मिलकर हर किसी का दिल खुश हो जाता है । यहाँ 'बेटियों का ब्लॉग' है तो 'बेटों का ब्लॉग' भी मौजूद है । आखिरकार इन ब्लॉग्स पर बच्चों के लिए प्यारी-प्यारी कविताएं, बाल-गीत, प्रेरक कहानियाँ, प्रेरक प्रसंग, ड्राइंग, इत्यादि बहुत कुछ है । बच्चे स्वभाव से जिज्ञासु होते हैं, अत: जरूरत है उनकी जिज्ञासा को स्वस्थ रूप में हल किया जाए । जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी के लोंदे को खूबसूरत आकार देता है, उसी प्रकार बाल साहित्य बच्चों में स्वस्थ संस्कार रोपित करता है । बच्चों के लिए तमाम ब्लॉग सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत कर रहे हैं ।

ब्लॉगिंग की दुनिया ने लोगों को एक ऐसा मंच मुहैया कराया है जहाँ वे बिना किसी खर्च और बंदिश के अपनी बात कह सकते हैं । ब्लॉग के माध्यम से समाज का सुख-दु:ख भी बाँटा जा सकता है । कई बार प्राकृतिक आपदाओं इत्यादि के समय सहायता के लिए ब्लॉग का इस्तेमाल किया जाता है । आज ब्लॉग तो विद्यालय हो गए हैं, जहाँ लिखने-पढ़ने के अलावा चर्चा-परिचर्चा, सेमिनार जैसे आयोजन भी कर-देख सकते हैं । 50,000 से ज्यादा हिंदी ब्लॉग मानो ज्ञान व सूचना का खजाना हों । ब्लॉगर्स की गतिविधियाँ सिर्फ वर्चुअल-स्पेस तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि उससे परे भी कभी ब्लॉगर संगोष्ठी तो कभी ब्लॉगर मिलन के माध्यम से ब्लॉगर्स की गहमागहमी बनी रहती है । इनके माध्यम से ब्लॉगिंग के सम्बन्ध में बहुत कुछ शेयर करने के साथ-साथ व्यक्तिगत अनुभवों को भी साझा किया जा रहा है । निश्चिततः इन सब गतिविधियों से ब्लॉगिंग को न सिर्फ एक स्वतंत्र विधा में स्थापित करने में मदद मिलेगी

बल्कि आने वाले दिनों में तमाम लोग भी इससे जुडेंगे । तमाम विश्वविद्यालय-कॉलेज-संस्थाओं के तत्वाधान में राष्ट्रीय ब्लॉगर संगोष्ठी के आयोजन जैसे कदम ब्लॉगिंग के बढ़ते प्रभाव का ही अहसास करा रहे हैं । ब्लॉगिंग पर कुछेक पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं - हिंदी ब्लॉगिंग : अभिव्यक्ति की नई क्रांति (सं. अविनाश वाचस्पति, रवीन्द्र प्रभात), हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास (रवीन्द्र प्रभात) । यह पुस्तकें जहाँ ब्लॉगिंग के परंपरागत स्वरूप से लेकर बदलते दौर में ब्लॉगिंग के आयामों को परिलक्षित करती हैं, वहीं इसे शोध का विषय भी बनाती हैं । वैसे भी हिंदी ब्लॉगिंग अब शोध का विषय बन चुकी है । केवल राम, चिराग जैन, सुषमा सिंह जैसे ब्लॉगर्स बकायदा इस पर विभिन्न विश्वविद्यालयों से शोध कर रहे हैं, जो कि हिंदी ब्लॉगिंग के लिए एक अच्छा संकेत है ।

ब्लॉग ज्ञान के नए आयाम खोल रहे हैं, मनोरंजन कर रहे हैं तो भड़ास निकालने का मौका भी दे रहे हैं । ऐसे ही तमाम भाव हैं जो ब्लॉगिंग की दुनिया में देखे-सुने जा सकते हैं । तमाम ब्लॉगिंग ऐसे हैं जो हर दिन कई ब्लॉग्स को विजिट करते हैं और उन पर अपनी प्रतिक्रियाएं देते हैं । पर यह एकतरफा प्रक्रिया नहीं हैं । यदि आप दूसरों के ब्लॉग पर प्रतिक्रिया देते हैं तो जवाब में अपने ब्लॉग पर प्रतिक्रिया भी पाते हैं । प्रतिक्रियाओं की इस दौड़ में कई बार किसी ब्लॉगर की अच्छी पोस्ट अनछुई भी रह जाती है । बहुत सीधी सी बात है, ब्लॉग संवाद को महत्व देता है न कि सिर्फ लेखन को । ब्लॉगर द्वारा की गई पोस्ट, प्राप्त प्रतिक्रियाएं और ब्लॉग्स की विजिट जैसे तमाम पहलू ब्लॉग को एग्रीगेटर्स में ऊँचाईयों पर ले जाते हैं, जहाँ से अन्य लोग ब्लॉग पर आते हैं । कई बार तो ये प्रतिक्रियाएं स्वस्थ परिचर्या को जन्म देती हैं, पर कई बार अनावश्यक वाद-विवाद और आरोप-प्रत्यारोप भी । अक्सर लोग ब्लॉग पर कुछ ऐसा लिख बैठते हैं कि उनकी बदनामी में भी उनका नाम हो जाता है । यही कारण है कि अभिव्यक्ति का यह सार्वजनिक तरीका काफी लोकप्रिय हो रहा है । छद्म नामों से बढ़ती प्रतिक्रियाओं और आरोप-प्रत्यारोपों के चलते ब्लॉग, कमेंट-मॉडरेशन की सुविधा भी उपलब्ध कराता है, जहाँ अनचाहे कमेंट को दरकिनार किया जा सकता है ।

ब्लॉगिंग का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि किसी विषय पर एक ही साथ भिन्न-भिन्न पीढ़ियों के नजरिए स्पस्ट होते हैं । ब्लॉगिंग से कुछ भी अछुता नहीं है, फिर चाहे वह किसी महान व्यक्तित्व को याद करना हो या किसी विशेष दिवस को । एक विषय पर एक ही साथ कई पोस्ट प्रकाशित होती हैं, बस जरूरत है इन्हें हाथी के विभिन्न अंगों की तरह समेटकर आत्मसात् करने की । जैसे-जैसे ब्लॉगिंग का दायरा बढ़ता गया, इसमें ब्लॉगर्स एसोसिएशन से लेकर पुरस्कारों तक की परंपरा भी आरंभ हो गई । कवि, लेखक, साहित्यकार इत्यादि से परे ब्लॉगर स्वयं में एक उपाधि बन चुकी है । हिंदी ब्लॉगिंग की सक्रियता का आलम ही है कि जब तो साहित्य अकादमी की तरह ब्लॉगिंग अकादमी की भी आवाज उठने लगी है । कुछ लोगों का मानना है कि जिस तरह ग्रामीण एवं अहिंदी भाषी क्षेत्रों से प्रकाशिक होने वाले हिंदी प्रकाशनों को विशेष मदद मिलती है उसी तर्ज पर दूरदराज तथा अहिंदी भाषी क्षेत्रों के ब्लॉगर्स को भी विशेष सहायता मिलनी चाहिए । हिंदी ब्लॉगिंग जगत में सब कुछ अच्छा ही अच्छा हो रहा है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है । हर बात के सकारात्मक व नकारात्मक दो पहलू होते हैं, हिंदी ब्लॉगिंग भी इसका अपवाद नहीं है । इसकी आड़ में तमाम नकारात्मक लोग भी ब्लॉगिंग से जुड़ रहे हैं । ऐसे में अपनी किसी निजी बात या निजी जानकारी मसलन ई-मेल, पता, फोन नम्बर को शेयर करना खतरनाक भी हो सकता है । ब्लॉग सिर्फ राजनैतिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक-कला-सामाजिक गतिविधियों के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि, तमाम कॉरपोरेट ग्रुप इसके माध्यम से अपने उत्पादों के संबंध में सर्वे और प्रचार भी करा रहे हैं । वास्तम में देखा जाय तो ब्लॉग एक प्रकार की समालोचना है, जहाँ पाठक गुण-दोष दोनों को अभिव्यक्त करते हैं । ब्लॉगिंग का एक बहुत बड़ा फायदा प्रिंट मीडिया को हुआ है । अब उन्हें किसी के पत्रों एवं विचारों की दरकार महसूस नहीं होती । ब्लॉग के माध्यम से वे पाठकों को समसामयिक एवं चर्चित विषयों पर जानकारी परोस रहे हैं ।

आज ब्लॉग परम्परागत मीडिया का न सिर्फ एक विकल्प बन चुका है बल्कि 'नागरकि पत्रकार' की भूमिका भी निभा रहा है । ब्लॉगिंग की दुनिया पूर्णतया स्वतंत्र आत्मनिर्भर और मनमाफिक तेवरों से भरी है । न समय का फेर और न दूरी का झंझट, बस एक क्लिक की जरूरत है । इसके प्रति बढ़ते रुझान के चलते तो अब अपने ब्लॉग पर विज्ञापन देकर पैसे भी कमाए जा सकते हैं । आज के दौर में ब्लॉगिंग सिर्फ टाइम-पास या रूचियों से ही नहीं जुड़ा है, बल्कि कई लोग तो वेबसाइट्स की तरह अपना ब्लॉग

संचालित करने के लिए भी प्रोफेशनल्स की सेवाएं ले रहे हैं। हिंदी में तमाम ऐसे ब्लॉग मिलेंगे जो प्रथम दृष्ट्या किसी व्यक्ति या संस्था द्वारा संचालित लगते हैं, पर वास्तव में इन्हें पेमेंट आधार पर टैक्नो-सेवी व्यक्तियों द्वारा दूसरों के लिए उनके नाम से संचालित किया जाता है और ये समय-समय पर उनकी कविताएं, कहानी, लेख, पुस्तकों की जानकारी एवं अन्य गतिविधियों को ब्लॉग पर प्रकाशित करते रहते हैं।

ब्लॉग बनाने हेतु मात्र तीन कदम चलने की जरूरत है, फिर अपनी सुविधानुसार उसे रंग-रूप दे सकते हैं। यहाँ ब्लॉगर ही लेआउट और साज सज्जा की जिम्मेदारी से लेकर सामग्री तक मुहैया कराता है अर्थात संपादक और प्रकाशक से लेकर रिपोर्टर व लेखक तक का कार्य करता है। किसी भी पोस्ट व कमेंट को कभी भी हटाने, कमेंट को मॉडरेट करने, पोस्ट को किसी आगामी तारीख हेतु शेड्यूल्ड करने, पंसदीदा ब्लॉग को फॉलो करने, अपने ब्लॉग को सार्वजनिक या निर्दिष्ट लोगों तक सीमित रखने अपने ब्लॉग पर अन्य ब्लॉगर को लेखक के रूप में जोड़ने, अंग्रेजी में टाईप करते हुए देवनागरी लिपि में रूपांतरण जैसी तमाम विशेषताएं ब्लॉगिंग को आकर्षक व सशक्त बनाती हैं। ब्लॉगिंग आरम्भ करने हेतु ब्लॉगस्पाट. कॉम (www.blogsport.com) ब्लॉगर (www.blogger.com.), वर्डप्रेस (www.wordpress.com) तथा माईस्पेस (www.myspace. com) चर्चित नाम हैं। इनके अलावा ब्लॉग. कॉम. बिगअड्डा, माई वेब दुनिया, याहू (साहू 360),रेडिफ (आईलैण्ड), माइक्रोसाफ्ट (स्पेसेज), टाइपपैड, पिटास, रेडियो यूजरलैंड इत्यादि भी ब्लॉगिंग की सुविधा उपलब्ध कराते हैं। ब्लॉगिंग की बढ़ती महत्ता देखकर तमाम अखबार भी ब्लॉगिंग के क्षेत्र में कूद पड़े हैं -दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, नवभारत टाइम्स इत्यादि। आज ट्विटर द्वारा 140 शब्दों तक माइक्रो-ब्लॉगिंग भी की जा रही है। ऐसे में कोई भी नेट-यूजर आसानी से ब्लॉगिंग आरम्भ कर सकता है और अपनी अभिव्यक्तियों को सूचना-संजाल के इस दौर में हर किसी तक पहुँच सकता है। निश्चितत: भूमंडलीकरण के इस दौर में ब्लॉगिंग ने न सिर्फ भाषाओं और उनके साहित्य को समृद्ध किया है, बल्कि विस्तृत संवाद का एक सशक्त हथियार भी मुहैया कराया है और हिंदी भी इसकी अपवाद नहीं है।

यदि भारतीय लोग बल, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

1855 HA/13—9B

पर्यावरण

वर्षा जल संधारण से समृद्धी

–डॉ. बद्रीलाल गुप्ता*

1. प्रस्तावना

जीवन हवा, पानी एवं भोजन पर निर्भर करता है यह हम सभी जानते हैं। हम यह भी जानते हैं कि शुद्ध जल के अभाव में जीवन जीना कठिन एवं चुनौतिपूर्ण कार्य है। शुद्ध जल एवं पर्याप्त जल के अभाव में सम्पूर्ण स्वच्छता की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती है। दूसरे शब्दों में कहे तो सम्पूर्ण स्वच्छता एवं अच्छे स्वास्थ्य के अभाव में समृद्धी नहीं आ सकती है। हम यह भी जानते हैं कि वर्षा पर हमारा नियंत्रण नहीं होकर प्रकृति का नियंत्रण होता है। अतः यह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है कि कहां कितनी एवं कब वर्षा होगी। हम यह भी जानते हैं कि यदि पानी का भंडार उपलब्ध नहीं है तो शासन स्तर पर प्रयास करने पर एवं संसाधन लगाने पर भी जनता को जल उपलब्ध नहीं करवाया जा सकता है। अर्थात् जल की कमी से जनता के स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर विपरीत असर होना निश्चित होता है। हमारे देश में कई बदलाव आन्दोलन के माध्यम से हुए हैं एवं हो रहे हैं परन्तु आज की एवं भविष्य की मूल आवश्यकता जल हेतु जन आन्दोलन की आवश्यकता है। इस आन्दोलन का केन्द्र देश एवं प्रदेश की राजधानी नहीं वरन गाँव-गाँव एवं शहर-शहर होना चाहिए। इस आन्दोलन की अगुवाई पेशेवर रूप से शिक्षित, प्रशिक्षित एवं वचनबद्ध व्यक्तियों द्वारा की जाने की आवश्यकता है ताकि जल का सही संधारण, भंडारण एवं उपयोग किया जा सके।

2. जल पर निर्भरता

हमारे जीवन से संबंधित प्रत्येक वस्तु एवं गतिविधि जल पर निर्भर है एवं वह जल से प्रत्यक्ष्य एवं अप्रत्यक्ष्य रूप से प्रभावित होती है। बिना जल के वन, हरियाली एवं कृषि की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। कम जल के कारण वन हरियाली एवं कृषि प्रभावित होती है जिससे जीवन की गुणता प्रभावित होती है। वन के घनत्व में कमी आने से हवा की गुणता में कमी आती है साथ ही वर्षा भी कम होती है। इसी प्रकार कृषि उत्पाद में कमी आने से पर्याप्त एवं गुणता का भोजन नहीं मिलने से स्वास्थ्य में गिरावट आती है एवं बिमारियां होती है जो शरीर को कमजोर एंव व्यक्तियों को गरीब बनाती है। पानी की कमी के कारण सम्पूर्ण स्वच्छता सुनिश्चित करना संभव नहीं होता है जिससे परिवेश दुषित होता है एवं स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव पड़ता है। व्यक्तिगत साफ-सफाई, घर की साफ-सफाई एवं परिवेश की साफ-सफाई पानी की कमी के कारण संभव नहीं है जिससे जीवन पर विपरित प्रभाव के साथ नकारात्मक मनोवैज्ञानिक असर होता है। जल एक ऐसी वस्तु है जो उपलब्ध नहीं है तो खरीदी भी नहीं जा सकती है अर्थात सैद्धान्तिक रूप से धनवान एवं गरीब सभी इसकी कमी से प्रभावित होते है।

स्वच्छता एवं स्वस्थता व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राज्य एवं देश को समृद्ध बनाती है। वृहद् रूप से देखे तो हमारें देश के परिवेश में स्वच्छता काफी हद तक जल पर निर्भर करती है।

3. पर्याप्त जल उपलब्धता सुनिश्चित करना

पर्याप्त जल उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए वर्षा की मात्रा जल ग्रहण क्षेत्र, भूमि के प्रकार एवं उपयोग, सतह एवं इसके नीचे उपलब्ध जल भंडारण क्षमता, एवं जल के उपयोग का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन, करने की आवश्यकता है। जानकारी का विश्लेषण कर उसके आधार पर जल के उपयोग की समुदाय स्तर पर रणनीति बना कर क्रियान्वित करने की आवश्यकता है।

* विभागाध्यक्ष, प्रबंध विभाग, राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, श्यामलाहिल्स, भोपाल-462002

वर्षा जल के संघारण के अभाव में ही बाढ़ आती है जो जीवन को विपरित रूप से प्रभावित करती है । आवश्यकता से अधिक मात्रा में उलब्ध जल का प्रबंधन करना एक चुनौती है ।

4. जल की गुणवत्ता

जल की पर्याप्त उपलब्धता के अतिरिक्त दूसरी बड़ी चुनौती जल की उपयुक्त गुणवत्ता सुनिश्चित करना है । पीने, घरेलू उपयोग, उद्योग एवं कृषि हेतु उपयुक्त गुणवत्ता का जल उपलब्ध होना अतिआवश्यक है । पीने के लिए उपयुक्त जल उपलब्ध नहीं होने से कई प्रकार की शारीरिक बीमारियां जैसे अपाचन, अजीर्ण, उल्टी, दस्त, खाज-खुजली, फोड़े इत्यादि होती है । जो लम्बे समय तक चलने पर जीवन के लिए घातक होती है । घरेलू कार्य हेतु भी उपयुक्त गुणता का जल उपलब्ध नही होने से उपरोक्त शरीरिक बीमारियों को बढ़ावा मिलता है साथ ही स्वच्छता के अभाव में नकारात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है । बागवानी एवं कृषि हेतु उपयुक्त गुणता का जल उपलब्ध नही होने से उत्पादकता एवं उत्पाद की गुणता पर विपरीत असर पड़ता हैं । पर्याप्त मेहनत करने पर भी जल की गुणवत्ता के अभाव में संतुष्टीपूर्ण फल नहीं मिलते हैं । उद्योग हेतु उपयुक्त गुणता का जल नहीं मिलने से उद्योग की दक्षता एवं प्रभावशीलता विपरीत रूप से प्रभावित होती है जिससे उत्पादन लागत बढ़ती है ।

5. पर्याप्त एवं उपयुक्त जल सुनिश्चित करने की रणनीतियां

- समुदाय स्तर पर जल संधारण क्षेत्र का सीमांकन कर इसकी प्रकृति का अध्ययन एवं विश्लेषण कर निष्कर्षों का उपयोग वर्षा जल संधारण करने हेतु करना ।
- वर्षा की मात्रा, प्रकृति, प्रकार एवं वितरण का अध्ययन एवं विश्लेषण कर संधारण की रणनीति तैयार कर उपयोग करना ।
- भूमि सतह एवं भूमि के भीतर जल भंडारण करने की संभावनाओं का अध्ययन आधारित रणनीति तैयार कर क्रियान्वित करने की आवश्यकता है ।

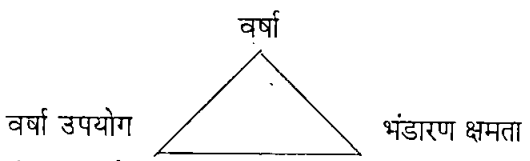

चित्र-1 वर्षा जल संतुलन भण्डारण एवं उपयोग

वर्षा जल संघरण की रणनीति इस प्रकार तैयार करना चाहिए कि वर्षा, भंडारण एवं उपयोग में संतुलन बना रहे । यह संतुलन वार्षिक स्तर पर तैयार किया जाना चाहिए एवं आपदा के लिए 50 प्रतिशत अतिरिक्त भंडारण होना चाहिए । यहां पर रुचिकर बात यह है कि वर्षा पर हमारा नियंत्रण नही होता है एवं न ही हम इसका सही-सही अनुमान लगा सकते हैं । भंडारण क्षमता एवं जल उपयोग पर काफी हद तक नियंत्रण कर सकते हैं । भंडारण क्षमता का विकास सतही भूमि का विकास कर दिया जाता है । यह नदी पर बांध बना कर कृत्रिम तालाबों का निर्माण कर एवं सतही कुंओं का निर्माण कर किया जाता है । जहां पर वर्षा बहुत कम होती है वहां पर पक्के टेंक एवं घरेलू टंकियां बनाकर भी किया जाता है । सतही भंडारण क्षमता बढ़ाने के लिए इस प्रकार के कार्य शासकीय, गैरशासकीय एवं व्यक्तिगत रूप से किए जा रहे हैं परन्तु इन कार्यों को समन्वित रणनीति बनाकर वैज्ञानिक तरीके से नहीं किया जा रहा है ।

अत: धन, संसाधन एवं प्रयास लगने के उपरांत भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं । इसी प्रकार भूमिगत जल भंडारण के स्त्रोत ज्ञात कर उनमें जल भंडारण की रणनीति बनाकर क्रियान्वित करने की आवयकता है । भूमिगत भंडार क्षमता के अतिरिक्त भूजल स्तर बढ़ाने हेतु भी तकनीकी पद्धतियों को प्रयोग करने की आवश्यकता है । इन पद्धतियों में वैज्ञानिक रूप से कृषि एवं वानिकी कार्य करना शामिल है ।

भण्डारण के साथ-साथ जल की उपलब्धता के अनुसार उचित उपयोग करने की रणनीति बना कर क्रियान्वित करने की आवश्यकता है । जल के भंडारण पर किसी का नियंत्रण नहीं होने से इसका औचित्यपूर्ण उपयोग नहीं होता है ।

जिस प्रकार बैंक खाते में राशि जमा करना एवं आवश्यकतानुसार उपयोग करना आवश्यक है उसी प्रकार पानी का भी संग्रहण एवं उपयोग करना आवश्यक है ।

समुदाय स्तर पर जल भंडारण एवं जल उपयोग के बीच वार्षिक आधार पर संतुलन बनाना आवश्यक है ताकि न तो पानी की कमी हो एवं न ही बाढ़ जैसी स्थिति का निर्माण हो सके । इस वृहद बहुआयामी एवं बहुस्तरीय रणनीति में समुदाय, गैर शासकीय एवं शासकीय विभागों के बीच समन्वित प्रयास आवश्यक है ।

6. वर्षा जल संधारण से समृद्धी

वृक्ष प्राकृतिक समृद्धी के प्रतीक रहे है अत: वर्षा जल से समृद्धी को एक वृक्ष के रूप में निम्नलिखित चित्र-2 में दर्शाया गया है ।

सर्वोत्तम जीवन स्तर

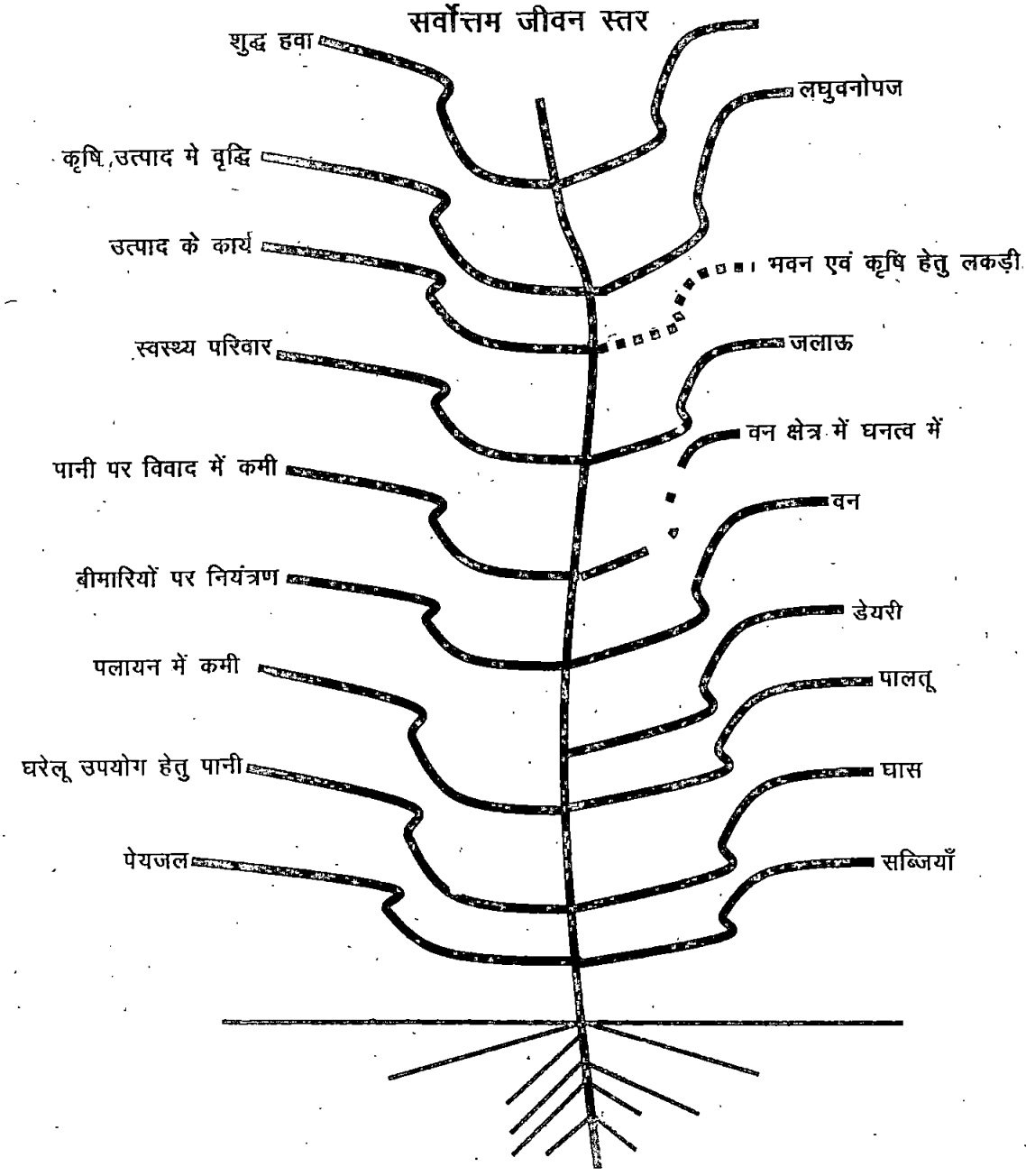

चित्र-2 वर्षा जल संधारण

जल जीवन एवं अमृत दोनों ही है अत: जन आन्दोलन द्वारा जल प्रबंधन करने की आवश्यकता है ।

भू-मंडल पर्यावरण संरक्षण में उपकरणों की भूमिका

—नीरू

पृथ्वी, जिसकी तुलना हम माँ से करते हैं, अब तक ज्ञात एकमात्र ऐसा अनुपम ग्रह है जिस पर जीवन के लिए सभी आवश्यक तत्व उपलब्ध हैं । जीवन के आधार जल एवं ऑक्सीजन के अतिरिक्त धरती अनेक बहुमूल्य पदार्थ अपने गर्भ में संजोए है । इस ग्रह का तापमान मानव जीवन के लिए अति अनुकूल है, जिसमें मौसम के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं ।

पृथ्वी ग्रह का अस्तित्व यों तो खरबों वर्षों से विद्यमान है परन्तु पिछले कुछ लाख वर्षों में यह ग्रह असाधारण परिवर्तन का गवाह भी रहा है । लेकिन व्यापक बदलाव के दौरान भी इसका पर्यावरण पूणर्त: संतुलित रहा । मानक सभ्यता का विकास चरणबद्ध ढ़ंग से हुआ है । प्रारम्भ में खानाबदोश जीवन व्यतीत कर रहे मनुष्य के जीवन को कृषि ने कुछ स्थिरता एवं व्यवस्थित रूप प्रदान किया । पहिए का आविष्कार होने पर परिवहन की सुविधा प्राप्त हो गई और मनुष्य ने व्यापार के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर आवागमन प्रारम्भ किया ।

आज के युग में बिजली के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती । इससे औद्योगिक विकास को तो नि:सन्देह गति मिली ही है, विशाल प्रणालियों का प्रबन्धन भी इससे सफल हो पाया है । अनेक वर्षों तक बिजली ही विकास का मुख्य आधार रही । वास्तव में अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण घटक बैंकिंग और बीमा के साथ-साथ विशाल स्टील उद्योग व प्रबन्धन क्षेत्र का पर्दापण बिजली तथा इस पर आधारित विशाल प्रणालियों के आगमन से ही हुआ ।

बहुमुखी विकास ने हमारी कार्यकुशलता एवं सम्पन्न जीवन को प्रत्यक्ष रूप से एवं उस स्तर तक प्रभावित किया है जिसकी कल्पना शायद हमारी कुछ पीढ़ियों ने कतई नहीं की होगी । प्रौद्योगिकी के माध्यम से तेज़ी से फैले विभिन्न उद्योगों एवं उत्पादित पदार्थों ने हमारी जीवन शैली को नई दिशाएं दी हैं । विभिन्न क्षेत्रों जैसे उपभोग की विभिन्न वस्तुओं, आवासीय सुविधाओं, यातायात के साधनों, दूरसंचार एवं मनोरंजन, जनसेवाओं इत्यादि में अभूतपूर्व प्रगति हुई है जिसके चलते हमें रोज़गार के नए अवसर उपलब्ध होने के साथ-साथ हमारी आर्थिक विकास दर को बढ़ावा मिला है । विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में हो रही प्रगति हमें सुविधा के नए-नए आयाम मुहैया करवा रही है ।

विद्युतीकरण एवं अभूतपूर्व औद्योगिक विकास के उपरान्त आइसीटी के उद्भव से समाज में व्यापक परिवर्तन हुए । इसने सभी भौगोलिक सीमाओं को समाप्त कर दिया, सूचनाओं के आदान-प्रदान में समय की दूरियाँ भी सिमट गई । इसने विश्व गाँव की संकल्पना को साकार किया, ई युग में इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों के सूचनाओं के आदान प्रदान को त्वरित एवं सुगम बना दिया । कम्प्यूटर, मोबाइल से संसार के किसी भी कोने की सूचना एक बटन में सिमट गई ।

आइसीटी ने मानव जीवन को जितने व्यापक स्तर पर प्रभावित किया उसे देखते हुए इसे सहस्त्राब्दि की प्रमुख प्रौद्योगिकी कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । यद्यपि आइसीटी के हमारे जीवन में प्रवेश से पूर्व विकास एवं प्रगति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी थी परन्तु आइसीटी ने तो जीवन के सम्पूर्ण परिदृश्य को ही बदल दिया, इसने वह सम्भव कर दिखाया जो कम से कम हमारे देश में कल्पनातीत था ।

मोबाइल के साथ-साथ लैप टॉप और अन्य गैजेट, जिन तक केवल एक विशेष वर्ग के लोगों की ही पहुँच हुआ करती थी, आम आदमी के हाथ में आए । अब केवल प्रत्येक घर नहीं अपितु प्रत्येक घर के प्रत्येक सदस्य के पास निजी डायरी के रूप में ये उपलब्ध है । और इस प्रौद्योगिकी ने इतनी तीव्रता से मानव जीवन में अपनी पैठ बनाई है कि आज शिक्षा से लेकर कृषि, व्यापार से लेकर चिकित्सा, सूचना से लेकर सुरक्षा तक के सभी क्षेत्र इसके आँचल में

* वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, सेक्टर-30सी चण्डीगढ़

सिमट आए है और इसके बिना जीवन की कल्पना भयावही लगती है । आइसीटी ने हमारे जीवन में सरलता एवं सुविधा की परिभाषाएं ही बदल दी है ।

परन्तु हर सिक्के के दो पहलु होते है । चरणबद्ध विकास के इस क्रम में मनुष्य की जीवन शैली में कुछ ऐसे अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं, जिनका पर्यावरण पर भी प्रतिकूल प्रभाव महसूस किया जा रहा है । जीवन में प्रौद्योगिकी की अत्यधिक भागीदारी ने अनेक समस्याओं को भी जन्म दिया है । प्रौद्योगिकी के कुछ पक्षों एवं कुछ और लोभी व्यक्तियों के कारण नई समस्याएं भी आन खड़ी हुई है जिनका समाधान विश्व के समक्ष एक चुनौती बन गया है ।

आधुनिक जीवन शैली से विभिन्न स्तरों पर उत्पन्न अनेक समस्याओं में पर्यावरण प्रदूषण ऐसी समस्या है जिसका सामना हममें से प्रत्येक व्यक्ति को करना पड़ रहा है । यह आज हमारे लिए गहरी चिन्ता का विषय बन गया है । फलस्वरूप पर्यावरण संरक्षण के लिए व्यापक स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों को चरणबद्ध अथवा व्यवस्थित ढंग से किए जाने की आवश्यकता है, जिससे कि अनुकूल एवं उपयुक्त परिणाम प्राप्त हो सकें । विभिन्न सम्भावित प्रयासों जैसे: पर्यावरण प्रदूषण के कारकों की निरन्तर मॉनिटरिंग, प्रदूषण को नियंत्रित करने के मापदंड एवं उपाय, संबंधित नियमों का पालन एवं दण्ड आदि के सभी चरणों में मापन यंत्र एवं उपकरण प्रदूषण के विभिन्न कारकों की निरंतर ऑन-लाइन निगरानी एवं सही समय पर उचित उपचार में काफी सहायक हो सकते हैं ।

इस लेख में कुछ क्षेत्र-कृषि, खनन उद्योग, औद्योगिकरण, जलीय पर्यावरण, परिवहन, निर्माण उद्योग एवं प्राकृतिक एवं मानव निर्मित आपदाओं तथा ई-कचरा के माध्यम से उपस्थित हो रही प्रदूषण की स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है । साथ ही साथ उपकरणों के माध्यम से इनकी इलैक्ट्रॉनिक मॉनिटरिंग के द्वारा पर्यावरण के संरक्षण पर भी बल दिया गया है ।

कृषि एवं खाद्य

प्राप्त आँकड़ों के द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि आगामी 50 वर्षों में आवश्यक खाद्य ऊर्जा की मात्रा पिछले 500 वर्षों में कुल उपभोग की गई खाद्य ऊर्जा से अधिक होगी । हालाँकि प्रौद्योगिकी के हस्तक्षेप से उत्तम बीजों एवं खेती के नए साधनों की उपलब्धता, फसलों पर कीटनाशकों के प्रयोग आदि से खाद्यान्न उत्पादन में भारी बढ़ौतरी हुई है परंतु प्रति व्यक्ति उपलब्ध भू-क्षेत्र में निरंतर कमी आने से स्थिति गंभीर हो गई है । कम भू-क्षेत्र से बढ़ी हुई खाद्य आवश्यकता को पूरा करने के लिए हमें हरित क्रांति से निरंतर हरित प्रयास की ओर बढ़ना होगा ।

उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रयुक्त किए जा रहे कीटनाशकों से मृदा की सबसे ऊपरी सतह निरन्तर प्रभावित हो रही है। कई क्षेत्रों में ऊपरी परत में आर्सेनिक, सीसा, लोहा, पारा जैसे तत्वों की मात्रा में काफी बढ़ोतरी देखी गई है । लेकिन इसके साथ-साथ जल स्तर के भी प्रभावित होने की रिपोर्ट प्राप्त हो रही है । फसलों पर रासायनिक कीटनाशक दवाओं का अत्यधिक प्रयोग खाद्य पदार्थों को प्रभावित कर अंतत: मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभावों से कठिन समस्याओं का कारण बन रहा है । कई रासायनिक तत्वों के फूड चेन में आने के कारण जनजीवन पर गंभीर परिणाम देखने में आ रहे है । ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही है कि ये परिणाम बहुत लम्बी अवधि तक प्रभावक्षम होंगे ।

पंजाब में कुछ विशेष क्षेत्रों में विगत वर्षों में आर्सेनिक की मात्रा अत्यधिक पाई गई है जिससे कैंसर रोगियों की संख्या में वृद्धि भी इसके अनेक परिणामों में से एक है । उड़िसा एवं गोआ के कुछ अन्य क्षेत्रों में सीसा जैसे तत्वों के कारण अन्य असाध्य रोगों के आँकड़े भी सामने आए हैं । खाद्य पदार्थों में कृत्रिम रंगों के अधिकाधिक प्रयोग, चाँदी के वर्क के स्थान पर टिन, कृत्रिम घी, खोया, दूध इत्यादि के मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट रूप से सामने आए है।

आज के संदर्भ में कृषि संबंधित मापन उपकरणों का विकास एवं प्रयोग आवश्यक है जिससे मृदा की उर्वरकता की निरन्तर निगरानी की जा सके । मृदा के पीएच, एनकेपी (NKP), लवणता, विशिष्ट आयन इत्यादि के मापन के लिए सुवाह्य मृदा विश्लेषण उपकरणों की फील्ड स्तर पर परीक्षण के लिए उपलब्धता आवश्यक है जिससे कि इनकी मात्रा के एक निश्चित सीमा से अधिक हो जाने पर उपचारात्मक उपाय किए जा सकें ।

फसल के स्वास्थ्य निगरानी में भी उपकरणों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है । खाद्यान्नों के सड़ने-गलने एवं परिणामस्वरूप प्रारंभ होने वाली हानि से बचाव के लिए स्वचल भंडारण उल्लेखनीय भूमिका निभा सकता है ।

खाद्यान्नों की गुणवत्ता मापन यंत्र मंडियों में काफी लाभकारी हैं ।

जल गुणवत्ता निगरानी किट, मछली पालन एवं जलीय मॉनिटरिंग उपकरण हमारी जल सम्पदा मापन में काफी सहायक हो सकते हैं ।

औद्योगिकरण संबंधी पर्यावरण संकट

औद्योगिकरण

आधुनिकीकरण की एक और बड़ी देन है, जिसने मानव जीवन की सुविधाओं में क्रांति ला दी है, परंतु इसके दुष्परिणाम भी कम नहीं हैं । वास्तव में इन दुष्परिणामों का कारण पर्यावरण सुरक्षा संबंधी मानकों का पालन न करना है ।

औद्योगिकरण में अत्यन्त आवश्यक तत्व उर्जा उत्पन्न करने वाले पदार्थ एवं खनिज हैं । खदानों से निरन्तर कोयला निकाला जा रहा है ताकि आवश्यक उर्जा उत्पन्न की जा सके । लेकिन कोयला खदानों से निकलती विषैली गैसें, खनन के परिणामस्वरूप रिक्त स्थान भरण के लिए उचित भराई सामग्री का इस्तेमाल न होना, खान सुरक्षा को खतरे में डालने वाले प्रमुख कारण हैं । अवैध खनन के तहत कुछ अदृश्य समस्याएं पर्यावरण सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए एक बड़ी चुनौती है । खदानों के धसकने, जल रिसाव, वर्षा के बाद खदानों में अचानक पानी भर जाना, रिक्त हुए स्थानों की सुदृढ़ता, संरचनाओं की सुदृढ़ता की निगरानी आदि कई ऐसे मुद्दे हैं, जिनके माप़न में उपकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । खनन उद्योग में कई मूल्यवान धातुएं, तत्व, हीरे, स्वर्ण, चाँदी आदि भी शामिल हैं । धातुकर्म एवं शुद्धिकरण से जुड़े कई रोग अवशिष्ट सामग्री का पूरी तरह से शुद्धिकरण नहीं करते हैं जिससे भूमण्डल के पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ता है । क्रिटिकल बिंदुओं पर मापन करना अत्यन्त आवश्यक है, जिसमें उपकरण काफी सहायक होते हैं ।

जलीय प्रदूषण

अपशिष्ट निपटान के नाम पर कई उद्योग अपशिष्ट सामग्रियों को बिना उपचार किए नहरों में फैंक देते हैं जिससे अधिकतर नहरों में प्रदूषण की सम्भावनाएं भी बढ़ती जा रही है । इससे होने वाले जल प्रदूषण से अनेक गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं । नहरी जल के प्रदूषण से जल जीवों के जीवन को गंभीर खतरा पैदा हो गया है । नहरी पानी से पेय जल तैयार करने के लिए पानी के उपचार की लागत बहुत बढ़ चुकी है । यह समस्या इस कगार पर पहुँच चुकी है कि औद्योगिकरण द्वारा उत्पन्न प्रदूषण का उपयुक्त उपकरणों के प्रयोग से मापन कर उसका नियंत्रण करना अति आवश्यक हो गया है ।

जल प्रदूषण की समस्या कितना गंभीर रूप ले चुकी है, इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि सर्वोच्च न्यायालय ने स्वयं हस्तक्षेप करते हुए डीएसटी को पानी की समस्या पर ध्यान देने के लिए कहा है, 12वीं पंच वर्षीय योजना में 'वाटर-मिशन' इसी का परिणाम है । इन सभी में मापन यंत्रों की भूमिका उत्यंत उपयोगी है ।

रेन हार्वेस्टिंग, जल के व्यर्थ प्रयोग, उसमें प्रदूषकों की मिलावट, अन्य कारणों से पड़ने वाले प्रभाव भी जल की पारिस्थितिक व्यवस्था को प्रभावित करते है ।

वाहन प्रदूषण

मनुष्य की बदलती जीवन शैली में वाहनों की भूमिका बहुत बढ़ गई है । ऑटोमोबाइल उद्योग में प्रौद्योगिकीय उन्नति ने बेहतर आवागमन के अथाह अवसर उपलब्ध करवाए हैं । सड़क पर वाहनों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती संख्या से वातावरण में कार्बन मोनोक्साइड एवं अन्य गैसों का स्तर बढ़ा है । पैट्रोल-डीज़ल में होने वाली मिलावट से निकलने वाली घातक गैसें फेफड़ों और आँखों पर कुप्रभाव डाल रही हैं । इसके लिए आवश्यक है कि पैट्रोल पम्पों पर पैट्रोल और डीज़ल की शुद्धता को जाँचने एवं उनमें किसी मिलावट का पता लगाने के लिए उपस्कर लगाए जाएं ।

इन्हीं उद्देश्यों को देखते हुए अगामी पीढ़ी के वाहनों में उर्जा बचत, प्रदूषण मुक्त, सुरक्षा जैसे पहलुओं को ध्यान में रखा जा रहा है ।

निर्माण उद्योग

वर्तमान समय में निर्माण उद्योग को देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जा रहा है । जिसके चलते तीव्र गति से निर्माण कार्य जारी है, पुलों और सड़कों का तो बड़े स्तर पर निर्माण हो रहा है परंतु साथ ही शॉपिंग मॉल एवं आवासीय कालोनियों का निर्माण भी किया जा रहा है । इससे अनेक लोगों का स्वयं की छत होने का सपना साकार हुआ है और लोगों की जीवन शैली का स्तर उँचा उठा है परन्तु इससे अनेक नई समस्याएं भी उत्पन्न हुई हैं जिन्होंने पर्यावरण संबंधी चिन्ताओं को और भी गंभीर बना दिया है । परिणामस्वरूप कृषि भूमि

का क्षेत्रफल कम हुआ है । दूसरी तरफ जनसंख्या घनत्व बढ़ है, फ्लैट व्यवस्था के चलते प्रतिवर्ग मीटर भूमि क्षेत्र पर बृहत् आवासीय लोड हो गया है ।

बेहतर जीवन के लिए ईमारतों एवं संरचनाओं की सुदृढ़ता, पेय जल एवं सीवेज जल की उपयुक्त निकासी आवश्यक है । इस कार्य की विशालता को देखते हुए गुणवत्ता जाँच, ईमारतों पर बोझ आदि के अनुमान के लिए अनेक उपकरणों की आवश्यकता है ।

प्राकृतिक एवं मानव-निर्मित आपदा

प्राकृतिक आपदाओं को रोका तो नहीं जा सकता, किंतु उनकी समय पर पहचान से पूर्व चेतावनी द्वारा जान-माल की हानि को रोका जा सकता है ।

ज्वालामुखी, दावानल, भुंकप, भू-स्खलन, चक्रवात (सायक्लोन), सुनामी, हिम स्खलन इत्यादि सामान्य आपदाएं है। इनकी पूर्व चेतावनी हेतु उपकरणों का विकास कर और अधिक निगरानी की आवश्यकता है, जिससे जन-साधारण को जागरूक कर सुरक्षा उपाय किए जा सकते है । इसी प्रकार हिम परिमापकों की निगरानी के लिए उपकरणों का विकास कर हिम खण्डों के धसकने एवं ग्लेशियर के पिघलने से होने वाली घटनाओं से रक्षा की जा सकती है ।

'सामान्यत: कहा जाता है कि अपराध का पता लगाने के लिए प्रौद्योगिकी आधारित हो रहे है ।'

आंतकवाद मानव-निर्मित आपदा है जिसमें रासायनिक हथियार, जैवीय हथियार एवं विस्फोटकों का प्रयोग किया जाता है ।

प्रत्येक प्रकार की आपदा के लिए अलग प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता है । सटीकता तथा संवेदनशीलता संबंधी आवश्यकताएं अपेक्षित प्रौद्योगिकी का निर्धारण करती है ।

मॉल/रेलवे स्टेशनों/बस अड्डों/एयरपोर्ट आदि जैसे सार्वजनिक स्थलों पर विस्फोटकों की पहचान, उन्हें अलग कर डिफ्यूज करने के लिए विशेष प्रकार के उपकरणों की आवश्यकता होती है । सामरिक भवनों/स्मारकों की संवेदियों तथा तीव्र संप्रेषण के नैटवर्क से सतत् निगरानी कर उनकी सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है ।

संक्षेप में ऐसी सभी गतिविधियों के परिणामस्वरूप हमें ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियरों के पिघलने/बाढ़ों, धरती की सौर विकीरण से रक्षा करने वाली ओज़ोन परत में छेद, अनेक लोगों की जीवन रेखा नदियों एवं समुद्र तटों पर जलीय जीवन के प्रभावित होने, सिंथेटिक सामग्रियों से जानवरों की मृत्यु, कीटनाशक/फलों को पकाने वाली सामग्रियों के खाद्य श्रृंखला/भूमि की उर्वरता/लोगों के सामान्य स्वास्थ्य पर कुप्रभावों का सामना करना पड़ रहा है ।

ई-कचरा

पिछले कुछ दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी द्वारा मानव जीवन में व्यापक परिवर्तन आए है । यद्यपि टी वी का पदार्पण भारत में वर्षों पूर्व हो चुका था परंतु जीवन का अभिन्न अंग वह आइसीटी के आगमन के बाद ही बन पाया । अब कार्यालयों व घरों में कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल व टीवी के अत्यधिक बढ़ते प्रयोग से हमारे व्यापार, संप्रेषण, मनोरंजन, शिक्षा एवं हर क्षेत्र में जीवन सरल हुआ ।

परंतु प्रत्येक लाभ अपने साथ कुछ नकारात्मक पक्ष भी लेकर आता है । मोबाइल टावरों, माइक्रोवेव एंटीना तथा अन्य संप्रेषण लिंकों की बढ़ती हुई संख्या से हमारे आसपास निरंतर अत्यंत उच्च स्तर पर इलेक्ट्रो-मैग्लेटिक विकिरण होता रहता है । आधुनिक जीवन एक प्रकार से विकिरण के समुद्र में जी रहा है, जिसके दुष्प्रभावों की जाँच पर काफी शोध कार्य चल रहे हैं ताकि उन सभी उपकरणों को और भी मानव अनुकूल (Human Friendly) बनाया जा सके ।

उपलब्ध आंकड़ों से ज्ञात होता है कि प्रतिदिन लगभग 75 मिलियन कम्प्यूटरों का प्रयोग हो रहा है, प्रति वर्ष 2 मिलियन पुराने कम्प्यूटर अप्रचलित हो जाते हैं । प्रतिदिन नई प्रौद्योगिकियों के आने से कम्प्यूटरों का जीवन काल भी कम हुआ हैं जिसके परिणामस्वरूप ई-कचरा बढ़ा है । मैमोरी उपस्कर, आइपॉड्स, एमपी3प्लेयर, टीवी सैट इत्यादि ई कचरे में और वृद्धि करते हैं । ई-कचरे में प्रतिवर्ष कई हज़ार टन पदार्थ होते है । जहाँ तक मोबाइल का संबंध है वर्ष 2010 तक मोबाइल उपयोगकर्ताओं की संख्या । बिलियन थी ।

इन सबसे नॉन-डीग्रेडेबल रूप में उत्पन्न होने वाले हानिकारक पदार्थों का आनुपातिक भार चिंताजनक है, जो कि प्रतिवर्ष लगभग हजारों टन है । एक सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के अनुसार एक कम्प्यूटर में सर्वाधिक प्लास्टिक के इलावा विभिन्न मात्राओं में कुछ हानिकारक तत्व यथा लैड,

मर्करी, आर्सेनिक, कैडमियम, क्रोमियम, बैरियम और बैरेलियम होते हैं । इस प्रकार धरती पर कुल ई-कचरे की स्वत:स्पष्ट मात्रा अत्यंत चिंताजनक विषय है ।

उपकरण विन्यास : उत्पादन एवं प्रयोग सेवाएं

उपर पर्यावरण से जुड़े कुछ मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है । एक ओर ये सभी तत्व हमारी आधुनिक जीवन शैली में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और इनकी भूमिका निरन्तर बढ़ती जा रही है जबकि दूसरी ओर समस्त क्षेत्रों में सभी चरणों पर पर्यावरण से जुड़े पक्षों की निरन्तर निगरानी परम आवश्यक है जिससे कि समय रहते सुधारात्मक उपाय किए जा सकें । इसमें मापन विज्ञान एवं उपकरण केन्द्रीय भूमिका निभा सकते है । विश्व भर में इस विषय पर व्यापक अनुसंधान कार्य हो रहा है और हमारे देश में भी अनेक आर एण्ड डी संस्थान इस प्रकार का कार्य कर रहे हैं ।

सीएसआइआर-सीएसआइओ विशेष रूप से वैज्ञानिक उपकरण विन्यास के कार्य को समर्पित संस्थान है जिसने कृषि, पर्यावरण मॉनिटरिंग, भू-वैज्ञानिक एवं हिमस्खलन जैसे विभिन्न क्षेत्रों के लिए उपकरणों का विकास किया है । संगठन में मृदा पीएच मापी, मृदा लवणता परीक्षक, खाद्यान्न आर्द्रता मापी, अन्न विश्लेषक, एफलाटॉक्सिन मापी, आयोडीन मान मापी, गॉसिपोल मापन प्रणाली, क्लोरोफिल मापन प्रणाली, कीटनाशक आकलन जैसे कृषि उपकरण विकसित किए गए है । अन्य परियोजनाएं जैसे उपकरण युक्त आलू भंडारण, चाय की गुणवत्ता, मधु में मिलावट, चावल की गुणवत्ता, मिट्टी में कीटनाशक मापन यंत्र इत्यादि से हमें इनके मापन में अत्यधिक सहायता मिलेगी ताकि सुधारात्मक कदम भी साथ ही साथ उठाए जा सकें ।

बाज़ार में पहले से ही अनेक उपकरण उपलब्ध है और नवीन अनुसंधान के आधार पर अनेक नए उपकरणों का विकास किए जाने की आवश्यकता है । इससे संबंधित क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिमापकों के तत्काल स्थल पर और निरन्तर अनुवीक्षण के लिए नवीन द्वार खुलेंगे । लोगों में इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और उन्हें प्रशिक्षित/शिक्षित किए जाने की भी आवश्यकता है ।

मानकों से सम्बद्ध एजैंसियाँ भी गुणवत्ता नियंत्रण्सा के लिए प्रमाणन के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका रखती हैं । कार्बन क्रेडिट जैसे मुद्दों के लिए भी विश्वसनीय मापन के लिए विश्व भर में उपकरणों की आवश्कता होगी । विभिन्न स्थानों पर किए जा रहे भिन्न-भिन्न प्रयासों को पर्यावरण की सुरक्षा एवं धरती उपग्रह पर बेहतर जीवन के लिए एक मंच पर इकट्ठा करना होगा । यह सामान्य धारणा है कि यह ग्रह हमारे पूर्वजों ने इसे युवा पीढ़ी को सौंपने के लिए हमें ऋण पर दिया है । आइए हम बेहतर जीवन के लिए इसकी मिलकर रक्षा करें । ■

"हिंदी एक जीवंत भाषा है । इसमें बड़ी सुरम्यता और उदारता है । हिंदी के यही तो वे गुण हैं जो इसे दूसरी भाषाओं के शब्दों और वाक्यों को आत्मसात् करने की असीम क्षमता प्रदान करते हैं । हिंदी हमें दक्षिण एशिया के देशों से ही नहीं बल्कि पूरे एशिया और मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड व टोबेगो जैसे अन्य देशों के साथ भी जोड़ती है । यदि हिंदी को विश्व की एक प्रमुख भाषा बनाना है, तो इसे आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का माध्यम बनाना होगा ।"

के. आर. नारायणन
भूतपूर्व राष्ट्रपति

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

'ग' क्षेत्र

हिदुंस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि., 75-सी पार्क स्ट्रीट, कोलकाता- 700016

निगम की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की जुलाई-सितम्बर, 2012 अवधि के लिए तिमाही बैठक दिनांक 12-12-2012 को अपराह्न 4.00 बजे परिषद कक्ष में सम्पन्न हुई। मुख्यालय तथा इकाइयों/अनुषंगियों की 30 सितम्बर, 2012 को समाप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर तुलनात्मक समीक्षा की गई । अध्यक महोदय ने कहा कि रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करने के पूर्व यह अवश्य देख लें कि रिपोर्ट के सभी मद ठीक-ठीक भरे हैं या नहीं। उन्होंने बताया कि ना.प. एण्ड पे. कं. लि. की रिपोर्ट में विसंगतियाँ हैं, जो राजभाषा विभाग, भारत सरकार के नियमानुकूल नहीं हैं । साथ ही धारा 3 (3) के अनुपालन में सरकार की नीति का उल्लंघन हुआ है । कृपया इससे बचें । दूसरा रा.भा. का. समिति की तिमाही बैठकें उस तिमाही के अन्दर अवश्य कर लें ।

बैठक में निर्णय लिया गया कि

भारी उद्योग विभाग के निरीक्षण दल के सुझाव के अनुसार एवं राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन किया जाए ।

इकाइयों/अनुषंनिगयों में रा.भा.का. समिति की तिमाही बैठकें उस तिमाही के भीतर कर ली जाए ।

मिलों में सूचना प्रौद्योगिकी (II) विभाग के सहयोग से यूनिकोड के प्रयोग पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाए, जिसमें विभागाध्यक्षों के निजी सचिवों/सहायकों को आवश्यक रूप से शामिल किया जाए ।

अध्यक्ष महोदय ने पुन: सभी विभागाध्यक्षों से अनुरोध किया कि वे आधिकारिक स्तर की छोटी-छोटी टिप्पणियाँ हिंदी में ही लिखें, जिससे कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिले ।

पावर ग्रिड कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2 जम्मू मानव संसाधन विभाग, आफिस ब्लॉक : ओ.बी.-26, ग्रिड भवन, हैड कंप्लैस, जम्मू-180012

उत्तरी क्षेत्र पारेषण प्रणाली-2, क्षेत्रीय मुख्यालय की 46वीं बैठक श्री जे. पी. सिंह कार्यपालक निदेशक की अध्यक्षता में दिनांक 28 दिसम्बर, 2012 को 3.30 बजे (अपराह्न) आयोजित की गई ।

सदस्य-सचिव द्वारा समिति को अवगत कराया गया कि क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू एवं इसके अधीनस्थ समस्त प्रचालन व अनुरक्षण उपकेन्द्रों को नियम 10 (4) के अंतर्गत अधिसूचित करवा लिया गया है। इस क्षेत्र में केवल नए कार्यालय भिवानी, साम्बा एवं न्यू वनपोह को अधिसूचित कराना शेष था जिनमें से भिवानी कार्यालय को दिनांक 25 अक्तूबर, 2011 से अधिसूचित करा लिया गया है और साम्बा कार्यालय को दिनांक 12 मार्च, 2012 से अधिसूचित करा लिया गया है । न्यू वनपोह कार्यालय को अधिसूचित करवाने हेतु प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। समिति को अवगत कराया गया कि राजभाषा अनिनियम , 1963 की धारा 3 (3) आदेशात्मक है । इसके अंतर्गत आने वाले सभी 24 दस्तावेजों जैसे परिपत्र , कार्यालय आदेश, ज्ञापन, टैंडर आदि द्विभाषी अर्थात हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी होने चाहिए । यह जिम्मेदारी उन पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की होती है। इस संबंध में इस धारा का शत-प्रतिशत अनुपालन करने के हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

'ग' क्षेत्र में मूल पत्राचार का लक्ष्य 55 प्रतिशत है जिसे प्राप्त कर लिया गया है, लेकिन फिर भी हिंदी पत्राचार बढ़ाने हेतु और प्रयास किए जा रहे हैं।

आकाशवाणी केन्द्र विशाखापट्टणम

आकाशवाणी केन्द्र विशाखापट्टणम की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2012-13 की तीसरी तिमाही बैठक दिनांक 20-11-2012 को सुबह 11-30 बजे कार्यालय प्रमुख महोदया श्रीमति रा. हर्षलता की अध्यक्षता में उन्हीं के कक्ष में सम्पन्न हुई । सदस्य सचिव ने दिनांक 30-08-2012 को आयोजित पिछली तिमाही बैठक का कार्यवृत्त पढ़कर सुनाया । सबसे पहले बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई पर चर्चा हुई । सहायक निदेशक (रा.भा.) (प्र) ने समिति को सूचित किया कि पिछली बैठक में लिए गए सभी निर्णयों पर कार्रवाई कर ली गई है । सदस्य सचिव ने बताया कि दिनांक 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के अवसार पर कार्यालय में दिनांक 14-09-2012 तक हिंदी पखवाड़ा हर्षोल्लास के साथ मनाया गया और दिनांक 10-10-2012 को केन्द्र की गृहपत्रिका 'लहरें' के द्वितीय अंक का सफलता पूर्वक विमोचन कार्य पूरा कर लिया गया । इस पर अध्यक्ष महोदया ने अपना हर्ष प्रकट किया ओर सभी सदस्यों को इस सफलता पर बधाई दी।

आकाशवाणी: अनंतपुर (आ.प्र.)

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक 3-10-2012 को आकाशवाणी, अनंतपूर केन्द्र में श्री के. अरुण प्रभाकर, कार्यालयाध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों से यह बताया कि हिंदी दिवस का उद्घाटन समारोह दिनांक 14-9-2012 को बड़ी उत्साह से आयोजित किया गया । और हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह 4-10-2012 को किया जाए ।

अध्यक्ष महोदय ने यह बताया कि सी-डैक (मंत्रा-हिंदी राजभाषा साफ्टवेयर) और -ई-शब्द महाकोष की सहायता से हिंदी आईपिंग का प्रयोग किया जा रहा है । मंत्रा साफ्टवेयर की सहायता से अनुवाद का कार्य जारी है । आकाशवाणी, अनंदपूर से संबंधित कार्यालयीन कार्य से संबंधित ज्यादातर फर्मेटों को द्विभाषा में अनुवाद किया गया है।

अध्यक्ष महोदय ने सभी अनुभगाध्यक्षों से यह सूचित किया कि धारा 3 (3) के अंतर्गत जारी किये कागजात जैसे परिपत्र, कार्यालयज्ञापन, कार्यालय आदेश, नियम, करार, संविदा, टेंडर नोटिस आदि को अनिवार्य रूप से द्विभाषा में जारी किया जाय।

पूर्व रेलवे, महाप्रबंधक (राजभाषा) कार्यालय,17 एन.एस. रोड कोलकाता-700001

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति (क्षेरेराकास) की तिमाही बैठक, हिंदी पखवाड़ा, 2012 के क्रम में दिनांक 28-09-2012 को महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे श्री जी. सी. अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। उन्होंने राजभाषा की बैठक को कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण समारोह आदि इस बात का प्रमाण है कि रेलवे का राजभाषा विभाग हिंदी के प्रति मन से जागरुकता लाने का प्रयास कर रहा है। उन्हेंने राजभाषा की प्रगति के निम्नलिखित निदेश दिए :-

(i) यह क्षेत्र "ग" में है जहाँ हिंदी में काम उतना नहीं हो रहा है, अधिकारी स्तर पर हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जाए एवं "ग" क्षेत्र स्थित कार्यालयों में सरकारी मापदण्ड के अनुसार हिंदी कार्यों के प्रतिशत को बढ़ाया जाए।

(ii) हिंदी में मूल पत्राचार के लक्ष्यों की प्रति हो गई परन्तु मण्डलों/कारखानों में गिरावट आई है। यह ठीक नहीं है । हिंदी पत्राचार की मात्रा को बनाए रखें ।

(iii) विभागाध्यक्षों तथा मंडलों, कारखानों से आए हुए अधिकारी अपनी ओर से हिंदी में कार्य करने वाले लोगों को प्रोत्साहित करें एवं समय-समय पर हिंदी के कार्यों का निरीक्षण भी करें । हिंदी के काम के प्रति लोगों की रूचि जगाएं, उन्हें पुरस्कृत करें ।

(iv) रेल के सभी विभागों की परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र हिंदी-अंग्रेजी में तैयार किया जाना चाहिए एवं इसका उत्तर हिंदी या अंग्रेजी में दिए जाने का भी विकल्प होना चाहिए। इसमें 10% अंक का प्रश्न सरकार की राजभाषा नीति से संबंधित होनी चाहिए ।

(v) आसनसोल मंडल भाषा प्रशिक्षण में काफी पीछे है, इस मंडल के अधीन दो (02) प्रशिक्षण केन्द्र हैं। कृपया कार्य योजना बनाकर कर्मचारियों को शीघ्र प्रशिक्षित कराएं

इसी प्रकार, मालदा एवं सियालदाह मंडल के अंग्रेजी टंककों को हिंदी टंकण का प्रशिक्षण शीघ्र दिलाया जाए ।

(vi) ओपन लाइन के स्टेशनों पर बोर्डों में अभी भी वर्तनी संबंधी काफी अशुद्धियां देखने को मिलती हैं मण्डलों/कारखानों के अमुराधियों/उमुराधियों से अनुरोध है कि कृपया इसे सुधार लें । ये काफी Sensitive है।

राजभाषा नियम 10(4) के अंतर्गत कार्यालयों को अधिसूचित किया जाए एवं अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों की सूची बनाकर व्यक्तिशः आदेश जारी किए जाएं । वहां राजभाषा नियम 8(4) के अनुसार कार्य के विषय भी विनिर्दिष्ट किये जाएं ।

पूर्व रेलवे, मंडल रेल प्रबंधक, मालदा

मंडल रेल प्रबंधक एवं समिति के अध्यक्ष ने सभी शाखा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि (i)हिंदी में काम करने में कोई अड़चन नहीं हैं। हमारी शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से होने के कारण हिंदी में लिखने व काम करने में समस्या होती है परन्तु अगर इच्छाशक्ति हो तो यह काम सरलता से हो सकता है। मंडल रेल प्रबंधक ने बदलते परिवेश के साथ स्वयं को समायोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने हिंदी में काम करने में आ रही अड़चन को सूचना तकनीक की सहायता लेकर दूर करने की सलाह दी । उन्होंने कहा भले ही पूरा पत्र अंग्रेजी में लिखा जाए लेकिन अंतिम वाक्य हिंदी में लिखकर भी हिंदी में काम करने की शुरुआत की जा सकती है । एक बार यह प्रयास सफल हो जाए तो इसमें उत्तरोत्तर वृद्धि ही होगी, आवश्यकता है सिर्फ सार्थक प्रयास करने की । उन्होंने कहा कि हम संकल्प लें कि प्रत्येक दिन कुछ न कुछ काम हिंदी में करेंगे ताकि हिंदी के प्रचार-प्रसार का लक्ष्य पूरा हो सके ।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुराधि ने अपने संबोधन में सभी शाखा अधिकारियों से कहा कि धारा 3(3) का मामला बुहत महत्वपूर्ण है और इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है । उन्होंने कहा कि इस मामले में छूट की गुंजाइश बिलकुल नहीं है । उन्होंने सभी शाखा अधिकारियों से इस पर विशेष नजर रखने को कहा । इस संबंध में हिंदी के नोडल कर्मचारियों की सक्रियता बढ़ाने पर बल दिया ।

महाप्रबंधक का कार्यालय, फरक्का बांध परियोजना, फरक्का

माननीय महा प्रबंधक, श्री अरूण कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में 7 सितम्बर, 2012 को अपराह्न 4 बजे समिति कक्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ग्यारहवीं बैठक आयोजित की गई ।

अध्यक्ष महोदय ने तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए बताया कि कुछ कार्यालय में धारा 3(3) का पूर्ण अनुपालन नहीं हो रहा है क्योंकि धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजात की सही जानकारी नहीं है अतः इन्हें अवगत कराया जाए। कुछ कार्यालय में लक्ष्य से बहुत कम प्रतिशत काम हिंदी में हो रहा है जिसे बढ़ने की विशेष आवश्यकता है "ग" क्षेत्र के कार्यालयों के लिए हिंदी में पत्राचार 55% लक्ष्य है, जिसे हर हाल में पूरा किया जाना चाहिए।

हिंदी पत्राचार में वृद्धि हेतु कार्यालय प्रधान के उत्तरदायित्व के संबंध में अध्यक्ष महोदय ने बताया कि हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करना होगा एवं आवश्यकतानुसार हिंदी पुस्तकों की सहायता लेनी होगी । पत्र पर केवल हिंदी में हस्ताक्षर करने से उसे हिंदी पत्रों में गिनती नहीं की जाएगी। सभी कार्यालय प्रधान छोटे-छोटे पत्रों को हिंदी मे लिखने का प्रयास करें । हिंदी में काम करने वालों के लिए आकर्षक प्रोत्साहन व्यवस्था है, बस एक बार प्रयास करने की आवश्यकता है फिर तो देखगें कि हिंदी में काम करना कितना आसान है। हिंदी में सरल एवं सहज शब्दों का प्रयोग करें एवं कठोर शब्दों का त्याग करें।

आकाशवाणी: कडपा (आ. प्र.)

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 10-10-2012 को आकाशणी, कडपा केन्द्र में श्री बी.वी. रमणराव कार्यालयाध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

कार्यालय के प्रधान ने उपस्थित सभी अनुभागाध्यक्ष से यह सुझाव दिया कि धारा 3(3) अंतर्गत जारी किए जानेवाले सभी प्रकार के कागजात जैसे परिपत्र कार्यालय, ज्ञापन. कार्यालय आदेश, आदेश, नियम, करार, संविदा, टेंडर नाटिस, आदि को अनिवार्य रूप से द्विभाषा में जारी किया जाय। कार्यक्रम से संबंधित सभी संविदा प्रपत्र द्विभाषा में उपलब्ध हैं, इस पर भी हिंदी में हस्ताक्षर किया जाए ।

1855 HA/13 12

आकाशवाणी: कटक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 05 अक्तूबर, 2012 को पूर्वाह्न11.30 बजे निदेशक अभियांत्रिकी श्री आनन्द चन्द्र सुबुद्धि की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

अध्यक्ष महोदय ने सभी अनुभाग अधिकारियों से आग्रह किया कि अधिक से अधिक मूल पत्राचार हिंदी में करें । स्वर परीक्षण के लिए भेजे जाने वाले कुछ पत्र द्विभाषा हुए है । संगीत, नाटक अनुभाग के इस संबंध में जारी पत्रों को द्विभाषी बनाने के लिए निणय लिया गया । निदेशक अभियांत्रिकी ने कहा कि अभियांत्रिकी अनुभाग के सावधिक रिपोर्टों के अग्रेषण पत्र भी द्विभाषी में बनाकर जारी किए जाएंगे ।

आकाशवाणी: गान्तोक

केन्द्र की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 20-9-2012 के कार्यालय प्रमुख श्री के.एस. रनपहेली की अध्यक्षता में उनके कक्ष में सम्पन्न हुई।

बैठक में हिंदी पत्राचार की प्रतिशता को बढ़ाने के लिए विचार-विमर्श किया गया । वार्षिक कार्यक्रम के विभिन्न मदों तथा राजभाषा नीति संबंधी दिशा निदेशों पर व्यापक चर्चा हुई।

अध्यक्ष महोदय ने सभी सदस्यों से इसके शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया ।

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा कार्यालय के निरीक्षण के दौरान दिए गए मूल पत्राचार में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना तथा राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्याक्रम में निर्धारित लक्ष्य अनुसार बढ़ाने संबंधी आश्वासन पर विस्तुत चर्चा हुई।

'ख' क्षेत्र

आकाशवाणी: अहमदाबाद

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संयुक्त रूप से दिनांक 20 12 2012 को कार्यालयध्यक्ष श्री शिवाजी फूलसुंदर, उपमहानिदेशक की अध्यक्षता में संपन्न हुई।

अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) का पूर्ण रुपेण अनुपालन सुनिश्चित किया जाए । सभी अनुभाग अधिकारी अपने-अपने अनुभाग से जारी होने वाली सामान्य आदेश परिपत्र, ज्ञापन इत्यादि धारा 3 (3) से संबंधित सभी कागजातों को यथा समय द्विभाषी हिंदी और अंग्रेजी करवा ले । उसके बाद ही उस पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी कृपया सुनिश्चित करें कि उक्त कागजात द्विभाषी ही जारी किए जा रहे है। उपयुक्त सभी प्रपत्रों की एक प्रति हिंदी अनुभाग में यथा समय पहले ही उपलब्ध करवाई जाए ताकि वहां पर्याप्त समय से उसे द्विभाषी किया जा सके ।

तिमाही रिपोर्ट देय होने के एक सप्ताह पहले सभी अनुभागों में प्रपत्र भेजकर उनके अनुभाग की जानकारी जैसे तिमाही में भेजे गए पत्र, हिंदी में लिखी गई टिप्पणियाँ, हिंदी में किया गया कार्य का संक्षिप्त विवरण विधिवत् भरकर हिंदी अनुभाग में उपलब्ध करवाया जाए । उक्त प्रपत्र पहले भी प्राप्त किए जा सकते हैं। पत्राचार बढ़ाने के भरसक प्रयास किए जाए।

सीमा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय आईस हाऊस, ई. डी.सी. कॉम्प्लैक्स, पाटो प्लाजा, पणजी -गोवा

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, सीमा-शुल्क एवं सेवाकर आयुक्तालय पणजी गोवा की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 115वीं तिमाही बैठक बुधवार दिनांक 12-9-2012 को सभा भवन में अपराह्न 4.30 बजे माननीय आयुक्त श्री वी.पी.सी.राव, आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित की गई। सभा की शुरुआत श्री आर. सी. महतो, सहायक निदेशक (रा.भा.) के स्वागत भाषण से हुई, श्री महतो ने सभाध्यक्ष श्री वी.पी.सी. राव, आयुक्त सहित उपस्थित सभी कार्यालय/अनुभाग प्रमुखों का अभिनन्दन और स्वागत किया तथा अध्यक्ष महोदय की अनुमति से आगे की कार्रवाई आरंभ की गई । सहायक निदेशक (रा.भा.) में सूचित किया कि आयुक्तालय में राजभाषा विभाग द्वारा अनुमोदित एवं निदेशित यूनिकोड को सक्रिय किया गया है तथा मुख्यालय के कुछ नए कंप्यूटरों पर भी यूनिकोड सक्रिय किया गया है तथा हिंदी सॉफ्टवेअर/फोंटस इंस्टोल किया गया है। हालांकि पोंरमेट किए जाने के कारण कुछ कंप्यूटरों में यूनिकोड को सक्रिय किए जाने की फिर से जरूरत पड़ती रहती है । यह लगातार चलने वाली प्रक्रिया है अत: कंप्यूटर सेल के साथ मिलकर हिंदी अनुभाग को यह जिम्मदारी निभाने का निदेश दिया गया ।

चित्र समाचार

यूको बैंक प्रधान कार्यालय, कोलकाता द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में मंच पर उपस्थित बैंक के कार्यपालक ।

हिंदुस्तान इन्सैक्टिसाइड्स लिमिटेड द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में मंच पर अधिकारीगण ।

केनरा बैंक, प्रधान कार्यालय, बेंगलूर द्वारा आयोजित हिंदी दिवस समारोह में बाएं से श्रीमती सुलेखा मोहन, सहायक महाप्रबंधक, श्री ए. के. नाहर, महाप्रबंधक, श्री एस. रामन, अध्यक्ष व प्रबंधक निदेशक, श्री एम. के. गुरूराज राव, साहित्यकार, व श्री श्यामलेंदु साहा, महाप्रबंधक ।

दूर संचार हरियाणा परिमण्डल अम्बाला द्वारा आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह में 'संवाद' पत्रिका का विमोचन करते हुए अधिकारीगण ।

विमानपत्तन प्राधिकरण अहमदाबाद द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए दाएं से श्री पी. के. श्रीवास्तव, संयुक्त महाप्रबंधक (संचार) श्री आर. के. सिंह, निदेशक, श्री पी. सी. मोदी, आयुक्त आयकर विभाग ।

दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्रों का बेंगलूर में आयोजित राजभाषा समारोह में संस्कृति कार्यक्रम की एक झलक ।

पूर्व मध्य रेल मुख्यालय, हाजीपुर द्वारा आयोजित 'विचार गोष्ठी' में मंच पर बाएं से श्री जे. एस. पी. सिंह, मुराधि, श्री मेहरबान सिंह नेगी, उप महाप्रबंधक (राभा), श्री पी. पी. खरे, महाप्रबंधक तथा श्री अजय शुक्ला, अपर महाप्रबंधक ।

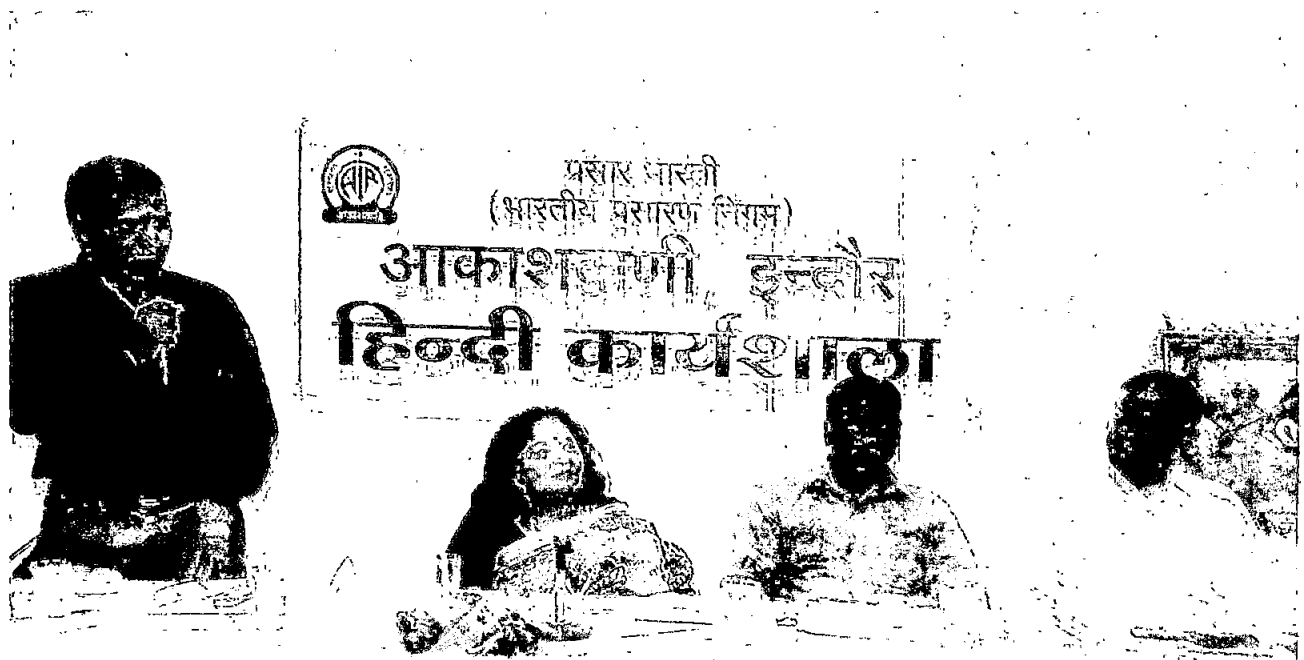

आकाशवाणी इन्दौर में आयोजित हिंदी कार्यशाला की एक झलक ।

हिंदी पखवाड़ा का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते बाएं से डॉ. अवधेश्वर अरूण, आर.एम. मिश्र, उपनिदेशक अभि. पी. के. सिंह, कार्यक्रम अधिशासी, बी. एस. चौधरी, नवीन कुमार लाल ।

भारत सरकार, इलेक्ट्रानिकी परीक्षण तथा विकास केंद्र, मोहाली की कार्यकारी पद्धतियों के हिंदी अनुवाद का विमोचन श्री जसपाल सिंह, अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं मुख्य आयकर आयुक्त, चण्डीगढ़ द्वारा किया गया ।

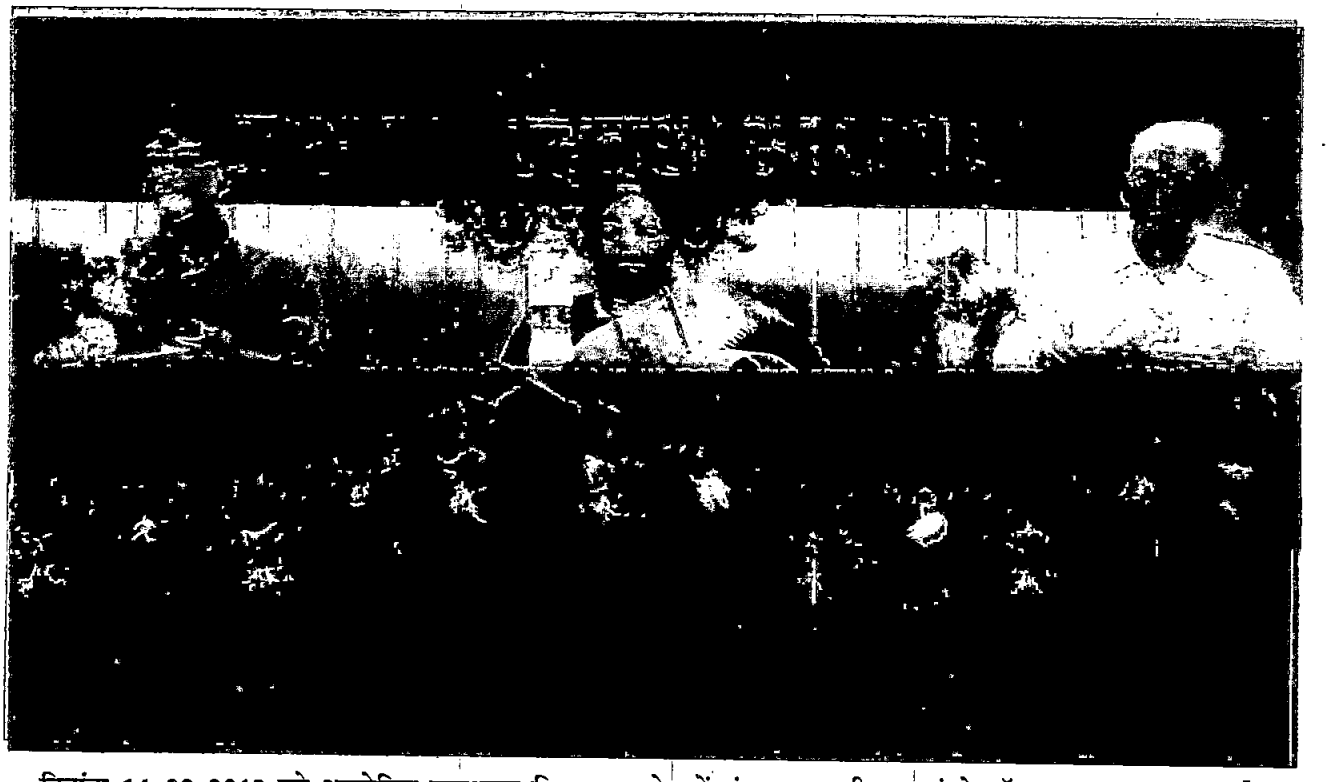

दिनांक 14-09-2012 को आयोजित राजभाषा दिवस समारोह में मंच पर आसीन–बाएं से डॉ. एस. एम. एच. कादरी, निदेशक, कें रे अ प्र सं, मैसूर : मुख्य अतिथि महोदया डॉ. सानिया अख्तर, अध्यक्षा, केंद्रीय प्लास्टिक्स अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, मैसूर केंद्र, मैसूर और डॉ. ब. जयरामुलु, उपनिदेशक (राजभाषा)।

हिंदी कार्यशाला एवं हिंदी पखवाड़ा आयोजन के दौरान मंच पर बाएं से डॉ. ए. के. बंसल, वैज्ञानिक–सी. सदस्य सचिव महोदया का संदेश पढ़ते हुए, बीच में श्री एस. के. शर्मा, हिंदी अधिकारी, जवाहर नगर, भंडारा, श्रीमती अनिता जायसवाल, हिंदी प्राध्यापिका, जे. एम. पटेल कॉलेज, भंडारा (दाएं)।

हमारे प्रधान कार्यालय, मणिपाल में दिनांक 27-09-2012 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए महाप्रबंधकगण (बायें से दायें) श्री टी. मुरलीधरन, श्री पी. के. सक्सेना एवं श्री अनिल कुमार अर्गल।

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कं. लि. क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली में हिंदी सप्ताह में भाग लेते अधिकारीगण।

नराकास समिति अंबाला की दिनांक 12-12-2012 को आयोजित छमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री प्रमोद कुमार, अपर मंडल रेल प्रबंधक साथ में दाएं तरफ श्री शैलेश कुमार सिंह, उप निदेशक (कार्या.) राजभाषा विभाग ।

निम्हान्स बेंगलर दवारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन में भाग लेते अधिकारीगण ।

विभिन्न अनुभागों के हिंदी पत्राचार बढ़ने/घटने संबंधित विवरण में प्रस्तुत किया गया जिन अनुभागों का हिंदी पत्राचार बढ़ा है उनकी सराहना अध्यक्ष महोदय द्वारा की गई तथा इस प्रयास को जारी रखने का सुझाव दिया गया । जिन अनुभागों का हिंदी पत्राचार घटा है अथवा लक्ष्य से कम है उन्हें कमी को दूर करने/लक्ष्य प्राप्त करने का सख्त निदेश दिया गया ।

'क' क्षेत्र

कार्यालय आयुक्त केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा-शुल्क, होशागाबाद रोड, मुख्यालय भोपाल

केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा-शुल्क, आयुक्तालय भोपाल की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 30-9-2012 को समाप्त तिमाही की बैठक दिनांक 26-9-2012 को पूर्वाह्न 11:00 बजे आयुक्त महोदय डॉ.डी के. वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

अनुभाग प्रभारियों द्वारा 1-7-2012 से 30-9-2012 तक की अवधि की राजभाषा हिंदी प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत कि गयी जिस पर अध्यक्ष महोदय द्वारा संतोष व्यक्त किया गया एवं निर्देश दिए गए कि आगे भी ज्यादा से ज्यादा कार्य राजभाषा हिंदी में करने का लक्ष्य बनाए रखा जाए ।

अध्यक्ष महोदय ने शाखा प्रभारियों/प्रभागीय कार्यालयों को प्रत्येक तिमाही की समाप्ति पर हिंदी तिमाही रिपोर्ट अनिवार्य रूप से अगले माह की 10 तारीख तक हिंदी शाखा, मुख्यालय को प्रेषित करने के निर्देश दिए ।

अध्यक्ष महोदय ने हिंदी पत्राचार बढ़ाने हेतु शाखा प्रभारियों से इस ओर किए जा रहे प्रयासों व उनकी सफलता पर चर्चा की, जिस पर अध्यक्ष महोदय द्वारा संतोष व्यक्त किया गया । साथ की आशा व्यक्त की गई कि भविष्य में हिंदी के कामकाज में और सुधार लाया जाए ।

दूरदर्शन केंद्र, 24 अशोक मार्ग, लखनऊ-226001

दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 11-12-2012 को अपराह्न 05.00 बजे माननीय डॉ. हरि नारायण नवरंग, अपर महानिदेशक, दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ की अध्यक्षता में सभाकक्ष में आयोजित की गई ।

सर्वप्रथम सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री मकरध्वज मौर्य ने अध्यक्ष महोदय एवं सभी उपस्थितजनों का अभिनंदन करते हुए बैठक की कार्यवाही आरंभ की । उन्होंने बताया कि केंद्र में राजभाषा नियमों का अनुपालन सुचारू रूप से हो रहा है । प्रेस विज्ञप्तियां, सूचनाएं आदि हिंदी/द्विभाषी रूप में जारी की जा रही हैं । पिछली तिमाही की रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार केंद्र का पत्राचार 63.91 प्रतिशत रहा । इसे बढ़ाए जाने की आवश्यकता है । दिनांक 14 से 28 सितंबर तक केंद्र में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया जिसमें राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 28 सितंबर, 2012 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया ।

श्री मौर्य ने बताया कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी प्रकार के कागजात यथा सामान्य आदेश, सूचनाएं, प्रेस विज्ञप्तियां, निविदा, करार आदि अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में जारी होने चाहिए । उन्होंने बताया कि केंद्र में इनके अनुपालन में सतर्कता बरती जा रही है । अध्यक्ष महोदय ने निदेश दिए कि भविष्य में भी इसका अनुपालन सख्ती से किया जाए ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में निदेशक महोदय ने कहा कि दूरदर्शन केंद्र, लखनऊ हिंदीभाषी क्षेत्र में स्थित है यहां के सभी अधिकारी व कर्मचारी हिंदी में दक्ष हैं उन्हें किसी प्रकार के प्रशिक्षण के अपेक्षा नहीं होनी चाहिए । उन्हें अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करना चाहिए ।

कार्यालय महाप्रबंधक (राजभाषा) पूर्वोत्तर रेलवे, गौरखपुर

मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 19-09-2012 को संपन्न हुई । इसमें 30-06-2012 को समाप्त तिमाही अवधि की समीक्षा की गई । बैठक की अध्यक्षता उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/मुख्यालय एवं उप महाप्रबंधक/सामान्य, श्री संजय यादव ने की ।

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं उप महाप्रबंधक श्री संजय यादव ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दृष्टि से यह माह विशेष

स्थान रखता है । 1949 को इसी माह की 14 तारीख को भारत संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया गया था । रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार इस रेलवे के मुख्यालय, मंडलों एवं कारखाने में हिंदी सप्ताह समारोह आयोजित किया जा रहा है । यह रेलवे हिंदी के प्रयोग-प्रसार की दिशा में सदैव अग्रणी रहा है तथा अन्य रेलों का मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रोत भी रहा है । हमारी जिम्मेदारी इसलिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि हमारी रेलवे पूर्णत: 'क' क्षेत्र में स्थित है ।

कदन्न विकास निदेशालय, द्वितीय तल, केंद्रीय सदन-ए, सैक्टर-10, विद्याधर नगर, जयपुर-302039

कदन्न विकास निदेशालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 53वीं बैठक दिनांक 29 सितम्बर, 2012 को दोपहर 11 बजे निदेशक, कदन्न विकास निदेशालय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । अध्यक्ष महोदय ने कार्यालय द्वारा किए जा रहे विभिन्न हिंदी कार्यों के बारे में बताया कि विभिन्न क्षेत्रों के साथ किए जा रहे पत्राचार के लिए निर्धारित लक्ष्य निदेशालय द्वारा प्रति वर्ष प्राप्त किए जा रहे हैं । इसके अनुसार लक्ष्यानुसार प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला तथा राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जा रही है । दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2012 के दौरान कार्यालय में हिंदी पखवाड़े का आयोजन भी किया गया । जिसके दौरान श्रुत लेखन, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्नोत्तरी एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया ।

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

'ग' क्षेत्र

चेन्नै

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)/चेन्नै की बैठक आई सी व एस आर सभाकक्ष, आई आई टी/चेन्नै परिसर में दि. 08-11-12 को आयोजित हुई ।

अपर महाप्रबंधक, दक्षिण रेलवे की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में 102 सदस्य कार्यालयों की उपस्थिति रही । प्रारंभ में मुख्य यांत्रिक इंजीनियर/दक्षिण रेलवे एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी ने सभी का स्वागत किया । सदस्य सचिव/नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं वरिष्ठ अधिकारी/दक्षिण रेलवे ने पावर प्वाइंट माध्यम नराकास गतिविधियों पर प्रकाश डाला । सदस्य कार्यालयों की ओर से आई. आई. टी तथा जनगणना कार्यालय द्वारा अपने-अपने कार्यालयों एवं राजभाषा की प्रयोग-प्रसार पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति दी गई । उप निदेशक/कोच्चि द्वारा सदस्य कार्यालयों की अर्ध-वार्षिक रिपटों की समीक्षा प्रस्तुत की गई ।

संयुक्त राजभाषा समारोह के सिलसिले में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए । धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक समाप्त हुई ।

शिलचर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन, समिति, शिलचर,भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की 46वीं बैठक कछाड़ क्लब, शिलचर में 26 नवंबर, 2012 को 11.00 बजे हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि. कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम के मुख्य अधिशासी तथा समिति के अध्यक्ष श्री प्रताप गोस्वामी की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे श्री आर सिन्थिल कुमार, सहायक आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, शिलचर ने अपने संबोधन में कहा कि शिलचर जैसे स्थान में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यों को देखकर उन्हें प्रसन्नता हुई है । मुझे कई जगहों पर समिति की बैठकों में जाने का अवसर मिला है । और उनके मुकाबले यहां की बैठक का कार्यक्रम ज्यादा सुखद लगा है । हमारे यहां हिंदी कार्मिक बहुत हैं और उनसे हिंदीतर भाषी कार्मिकों को हिंदी का प्रशिक्षण दिलवाया जा सकता है । मैं इसके लिए एक प्रयास अवश्य करूंगा ।

मुख्य अतिथि श्री अशोक कुमार मिश्र, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गुवाहाटी ने अपने संबोधन में कहा कि समिति स्तर की प्रतियोगिताएं

आकाशवाणी केंद्र द्वारा किया जाना सराहनीय है । सब लोग यह ध्यान रखें कि निर्धारित लक्ष्य और अनिवार्य कार्य के अनुसार काम किया जाए । तथ्य तो यह है कि हिंदी का कार्य करने के लिए मजबूत मनोबल होना चाहिए । समिति की अध्यक्षता की बात करते हुए उन्होंने कछाड़ पेपर मिल की सराहना करते हुए कहा कि इसकी बैठक अन्य कार्यालयों द्वारा भी प्रायोजित की जा सकती है । उन्होंने ओ एन जी सी, भारत संचार निगम लि. (बी एस एन एल), राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एन आई टी), असम विश्वविद्यालय आदि बड़े कार्यालयों की चर्चा करते हुए कहा कि ये लोग भी बैठक का आयोजन किया करें, तो बेहतर होगा उन्होंने सभी कार्यालयों से आग्रह किया कि वे समिति का सदस्यता -शुल्क समय पर अवश्य भिजवाया करें ताकि समिति और बेहतर कार्य कर सकें ।

समिति के अध्यक्ष श्री प्रताप गोस्वामी ने अपने भाषण में कहा कि राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने के प्रयास में हम काफी आगे बढ़ चुके हैं । परंतु इस दिशा में और प्रगति की आवश्यकता है । हिंदी माध्यम से पत्राचार को भी आगे बढ़ाने की जरूरत है । उन्होंने निवेदन किया कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु ठोस कदम उठाएं एवं हिंदी में मूल टिप्पण व पत्राचार पर विशेष ध्यान दिया जाए । राजभाषा विभाग एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को भेजी जाने वाली तिमाही रिपोर्ट समय पर भिजवाएं, ताकि उन पर अगली कार्रवाई की जा सके ।

कार्मिकों के लिए दिनांक 23 नवंबर 2012 को ''राजभाषा कार्यशाला'' एवं ''हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन की प्रतियोगिता'' का आयोजन आकाशवाणी केंद्र ने किया और इसके उन्होंने साधुवाद दिया । भविष्य में इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक प्रतिभागी को भाग लेने के लिए अनुरोध किया । हिंदी टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को अध्यक्ष महोदय के कर कमलों द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित किया गया ।

'ख' क्षेत्र

नाशिक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति नाशिक की छः माही बैठक दिनांक 04-10-2012 को भारतीय रेल विद्युत इंजीनियरिंग संस्थान, एकलहरा मार्ग, नाशिक रोड में आयोजित की गई । इस समिति के अध्यक्ष हैं श्री प्रवीण मल्होत्रा व इसका प्रायोजन किया भारतीय रेल विद्युत इंजीनियरिंग संस्थान अर्थात् इरीन ने ।

इस छः माही बैठक में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तीन प्रमुख श्रेणियों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय क्रमांक की चल शील्ड पुरस्कार के रूप में दी गई । साथ ही न.रा. का.सं. नाशिक के तत्वावधान में हिंदी पखवाड़े में आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता और स्वरचित काव्य-पाठ प्रतियोगिता के विजेता कर्मियों को भी पुरस्कृत किया गया । गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नवी मुंबई से विशेष रूप से पधारे उप-निदेशक (कार्यान्वयन) श्री विनोद कुमार शर्मा, ने सभी सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कार्य की समीक्षा की तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को नये आदेशों तथा गतिविधियों से अवगत कराया, साथ ही राजभाषा के अपेक्षित कार्यों पर भी प्रकाश डाला ।

दाहोद

दाहोद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 05-11-2012 को 15.00 बजे लोको, के रिजर्व बैगन कारखाना के मंथन सभागृह में आयोजित की गई । समिति की अध्यक्षता श्री आर. के. गुप्ता, मुख्य कारखाना प्रबंधक पश्चिम रेलवे, दाहोद द्वारा की गई । चर्चा के दौरान बैठक में उपस्थित सदस्यों ने अपने सुझाव दिए, जिसका निराकरण अध्यक्ष महोदय द्वारा किया गया तथा यह निर्णय लिया कि सभी कार्यालयों में माह के किसी एक दिन को हिंदी में ही कार्य के लिए घोषित किया जाए और उस दिन सभी अधिकारी/कर्मचारी अपना समस्त कार्य हिंदी में ही करने का प्रयास करें और इस संबंध में किए गए कार्य की सूचना अध्यक्ष कार्यालय को दी जाए । समिति के अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा कि यद्यपि दाहोद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग प्रसार में काफी वृद्धि हुई है तथा कुछ मदों पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है । सभी कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध है कि वे अपने कार्यालयीन कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे अधीनस्थ कर्मचारी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित हो सके, ऐसे सदप्रयासों से हिंदी के प्रचार-प्रसार गति लाई जा सकेगी ।

चण्डीगढ़

चण्डीगढ़ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 27-11-2012 को सांय 03.00 बजे किसान भवन, सैक्टर-35, चण्डीगढ़ में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता श्री सैयद तारीक अहमद, आयकर महानिदेशक (अन्वे.), उ. प. क्षेत्र, चण्डीगढ़ द्वारा की गई । उन्होंने कहा कि पिछली बैठक के बाद समिति स्तर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए । जिन कार्यालयों ने इनके आयोजन में सहयोग दिया है मैं उनका धन्यवाद करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में अन्य कार्यालय भी सहयोग के लिए आगे आएगें । हिंदी में वैज्ञानिक सेमिनार और पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित करना वास्तव में ही एक प्रशंसनीय प्रयास है ।

रा.भा. विभाग के प्रतिनिधि श्री शैलेश कुमार सिंह, उप निदेशक (कार्या.) जी ने जो जानकारी दी है उस पर सभी कार्यालयों में कार्रवाई की जाए । हमारे कार्यालयों में सरकार के आदेशों और लक्ष्यों के अनुसार कार्य होना चाहिए । संसदीय समिति के निदेशों का अवश्य पालन किया जाए । कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाना सीनियर अधिकारियों की जिम्मेदारी है । इसलिए हमें अपने स्तर पर कुछ न कुछ प्रयास हमेशा करते रहना चाहिए । हमारी यह कोशिश हो कि जो काम एक बार हिंदी में आरंभ हो गया है, वह दोबारा अंग्रेजी में शुरू न हो । हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अध्यक्ष कार्यालय से सभी सदस्यों को हर प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा ।

'क' क्षेत्र

अंबाला छावनी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति/अंबाला छावनी की इस वर्ष की दूसरी बैठक अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री प्रमोद कुमार की अध्यक्षता में दिनांक 12-12-2012 को कमेटी रूम, मंडल कार्यालय, रेल विहार, अंबाला छावनी में सम्पन्न हुई ।

श्री प्रमोद कुमार ने कहा कि सरकारी कार्य राजभाषा में करना हम सबका संवैधानिक दायित्व है । मैं उम्मीद करता हूं कि समिति द्वारा आपको जो प्रशासनिक शब्दावली उपलब्ध करवाई गई है उसका आप अपने सरकारी कामकाज में सही प्रयोग करेंगे । उन्होंने बैठक में उपस्थित विभिन्न कार्यालयों/बैंकों आदि के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत सरकार, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए, प्रत्येक क्षेत्र में, राजभाषा का बढ़-चढ़ कर प्रयोग करें और सरकारी काम-काज में, बोल-चाल के सरल, सुबोध और स्वाभाविक प्रचलित शब्दों का प्रयोग करें । सदस्य कार्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर कहा जा सकता है कि अंबाला में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/निगमों आदि में हिंदी में निष्पादित किए गए कार्यों के प्रतिशत में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है परन्तु फिर भी प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान एवं प्रमुख को उदाहरणीय पहल करने की जरूरत है । राजभाषा प्रगति रिपोर्ट तैयार करने में किसी कार्यालय एवं बैंक आदि को कोई कठिनाई हो रही हो तो वह उसके संबंध में समिति को अवगत करवा सकता है । समिति द्वारा शीघ्र ही हिंदी प्रतियोगिताओं और हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाएगा, इसमें सभी सदस्यों के अधिकारियों/कर्मचारियों को बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए ।

संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदन पर महामहिम राष्ट्रपति द्वारा जारी आदेशों के अनुसार समिति के सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों के लिए नराकास की बैठकों में शामिल होना एक संवैधानिक दायित्व है अत: मेरा सदस्य कार्यालयों के सभी प्रमुखों से विशेष अनुरोध है कि आप समिति की बैठकों में स्वयं भाग लें ताकि जिस उद्देश्य के लिए इस समिति का गठन किया गया है, उसकी पूर्ति हो सके और राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में सार्थक चर्चा हो और व्यावहारिक एवं नीतिगत निर्णय लिए जा सकें । संसदीय समिति के केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/निगमों/ संस्थाओं आदि में राजभाषा निरीक्षणों को ध्यान में रखते हुए सभी प्रमुखों को नराकास की बैठकों में निरंतर भाग लेना चाहिए ।

अंत में उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी सदस्य भारत सरकार की राजभाषा नीति के संबंध में गृह मंत्रालय द्वारा समय-समय पर जारी विभिन्न आदेशों तथा दिशा निर्देशों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करेंगे ।

नराकास की बैठक में विशेष रूप से उपस्थित श्री शैलेश कुमार सिंह, उप निदेशक/राजभाषा ने अपने सम्बोधन में संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षणों का उल्लेख करते हुए सभी सदस्य कार्यालयों/बैंकों/निगमों/संस्थानों आदि के प्रमुखों के लिए समिति की बैठकों में निरंतर उपस्थित रहने की अनिवार्यता पर जोर दिया । उन्होंने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिन सदस्य कार्यालयों/बैंकों आदि के प्रमुख इस बैठक में उपस्थित नहीं हो रहे हैं, उनके मुख्यालयों को इस संबंध में शीघ्र ही पत्र लिखा जाएगा । उन्होंने सभी सदस्यों को राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न हिंदी प्रोत्साहन योजनाओं के संबंध में भी व्यापक जानकारी दी ।

(ग) कार्यशालाएं

'ग' क्षेत्र

नराकास (उपक्रम) बेंगलूर

दिनांक 5 सितंबर, 2012 को नराकास (उपक्रम) बेंगलूर द्वारा के आई ओ सी एल लिमिटेड के बेंगलूर क्षेत्रीय कार्यालय एवं संबद्ध कार्यालयों के हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला 5-9-12 को आयोजित किया गया । इस कार्यशाला में कुल 3 अधिकारी 11 कर्मचारी उपस्थित रहे । कार्यशाला में सुबह के सत्र में एन ए एल के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी श्री पी एस आर मूर्ति द्वारा यूनिकोड के प्रयोग के बारे में मार्गदर्शन दिया गया और दोपहर के सत्र में के आई ओ सी एल लिमिटेड के वरिष्ठ राजभाषा प्रबंधक श्री रंगनाथाचार द्वारा कार्यालयीन टिप्पणियों के प्रयोग के बारे मार्गदर्शन दिया गया और अभ्यास भी करवाया गया ।

मुख्य नियंत्रण सुविधा, पी.बी.न. 66 हासन-573201

दिनांक 21 दिसंबर, 2012 को एमसीएफ, हासन में कार्यरत वरि. तकनीशियन-ए एवं तकनीशियन-जी के लिए एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया । जिसमें 27 कर्मचारियों को नामित किया गया। कार्यशाला के सत्र संचालन के लिए श्री नारायण प्रसाद, एसोसियेट प्रोफेसर, शासकीय विज्ञान महाविद्यालय, हासन को आमंत्रित किया गया । उन्होंने कार्यशाला के दौरान कर्मचारियों को अपना दैनंदिन कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने तथा राजभाषा नीति एवं नियमों के पालन करने के बारे में बड़े ही रोचक तरीके से पावर प्वाइंट प्रस्तुति द्वारा समझाया, साथ ही राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए सुझाव दिए ।

एम एस एम इ-विकास संस्थान, तृश्शूर

14-9-2012 से 28-9-2012 तक के दौरान आयोजित हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में इस संस्थान में 18 9 2012 के एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला का प्रारंभ 18-9-2012 के 11.00 बजे प्रातः मौन प्रार्थना के साथ हुआ, जिसके पश्चात् इस संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती राजश्री वर्मा ने उपस्थित सभी सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया एवं उनसे आग्रह किया कि राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन में इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठाएं । तकनीकी सत्र का संचालन करती हुई वरिष्ठ हिंदी अनुवादक श्रीमती राजश्री वर्मा ने 'सरल हिंदी व्याकरण' पर व्याख्यान दिया ।

आंचलिक तथा राज्य कार्यालय खादी और ग्रामोद्योग आयोग, गुवाहाटी

दिनांक 17 दिसंबर, 2012 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में आंचलिक कार्यालय के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी (पूर्वोतर अंचल) के साथ राज्य कार्यालय के निदेशक (आंचलिक कार्यालय), सह निदेशक (राज्य कार्यालय) एवं समस्त अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे । इस कार्यशाला में सम्मानीय अतिथि के रूप में श्री अशोक कुमार मिश्र, उप निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार विराजमान थे ।

सर्वप्रथम निदेशक महोदय ने विषय वस्तु पर प्रकाश डाला । इसके बाद उप मुख्य कार्यकारी (पूर्वोतर अंचल) द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन किया गया । इसके उपरान्त उपस्थित मुख्य अतिथि श्री मिश्र जी ने कार्यालय में प्रयुक्त प्रशासनिक शब्दावली पर व्याख्यान देते हुए टिप्पण लिखने की संरचना पर वक्तव्य प्रस्तुत किए एवं अनुमोदन, स्वीकृति, मार्गदर्शन, कंप्यूटर, मोबाईल, इंटरनेट, सूचना, कार्रवाई, खादी ग्रामोद्योग, आबंटन, परिपत्र, सूची, बैठक, आराहन, पूर्वाहन, पदोन्नति आदि शब्दों के प्रयोग पर व्याख्यान प्रस्तुत किए । उपस्थित कर्मचारीगण अनके व्याख्यान से उत्प्रेरित होकर उपर्युक्त विषय पर श्री मिश्र जी से विचार प्रकट करते हुए चर्चा की ।

राष्ट्रीय पटसन एवं समवर्गी रेशा प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् 12, रीजेन्ट पार्क, कोलकाता-700040

दिनांक 10-9-2012 को पूर्वाह्न 10.00 बजे से 1.00 बजे तक तथा आराहन 2.00 बजे से 5.00 बजे तक एवं दिनांक 11-9-2012 को पूर्वाह्न 10.00 बजे से 1.00 बजे तक संस्थान के निदेशक, डॉ. के. के. शतपथी की अध्यक्षता में ''राजभाषा कार्यान्वयन एवं यूनीकोड'' विषय पर डेढ़ दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें इन क्षेत्रों में स्थित भाकृअनुप के संस्थानों व क्षेत्रीय केंद्रों के राजभाषा कार्य देखने वाले अधिकारी व प्रशासनिक अधिकारी/सहायक प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित हुए एवं इसके साथ ही साथ संस्थानों/केंद्रों में कार्यरत अशुलिपिकों/टंककों को कंप्यूटर पर यूनीकोड प्रशिक्षण दिया गया ।

निरजाफ्ट के अनदेशक एवं सत्राध्यक्ष डॉ. शतपथी महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित डेढ़ दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हमारे संस्थान में किया गया जिससे कोलकाता एवं इसके आस-पास स्थित भाकृअनुप के संस्थानों तथा उनके क्षेत्रीय केंद्रों के राजभाषा संबंधी कार्य से जुड़े अधिकारी एवं कर्मचारी ज्ञानार्जन कर लाभान्वित हो सकेंगे । उन्होंने यह भी कहा कि हमारे संस्थान को गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग द्वारा पूर्वी क्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा का उत्कृष्ठ कार्यान्वयन हेतु शील्ड प्रदान किया गया । संस्थान के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी ने भी इस कार्यशाला के आयोजन की आवश्यकता बताई ।

क्षेत्रीय कार्यालय, भारतीय खाद्य निगम, 6 रॉयड स्ट्रीट कोलकाता- 700016 (पश्चिम बंगाल)

भारतीय खाद्य निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के सभाकक्ष में दिनांक 16-11-2012 को अक्तूबर-दिसम्बर, 2012 तिमाही की एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला को इस प्रकार अनुष्ठित किया गया कि वक्तव्य के साथ-साथ पावर-प्वाइंट एवं प्रोजक्टर पर हिंदी सॉफ्टवेयर के जरिए बहुत कुछ प्रतिभागियों को बताया गया । वक्ता के रूप में राजभाषा विभाग, कोलकाता के अनुसंधान अधिकारी श्री एन. के. दुबे एवं राजभाषा विभाग, कोलकाता के ही सहायक निदेशक, श्री अनुप कुमार । श्री दुबे द्वारा बहुत ही सुन्दर तरीके से शब्दावली आयोग, भारत सरकार एवं समिति के द्वारा संशोधित शब्दावलियों को विस्तार पूर्वक सबके समक्ष रखा । सबसे बड़ी बात यह रही कि शब्दावलियों को बताते समय यहां की क्षेत्रीय भाषा बंगला को भी हिंदी शब्द के साथ-साथ तुलनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जिसके फलस्वरूप सभाकक्ष में बैठे प्रतिभागी को पूरी बात समझाने में देर नहीं लगी । श्री अनुप कुमार जर ने पावर प्वाइंट के जरिए हिंदी सॉफ्टवेयर पर विस्तार पूर्वक आलोचना की एवं कार्यालय में हिंदी सॉफ्टवेयर के जरिए कितनी आसानी से हिंदी टंकण या क्षेत्रीय भाषा में टंकण कर सकते हैं यह बताया । पूरा कार्यक्रम बहुत ही लाभदायक रहा ।

केंद्रीय शेपण फसल अनुसंधान, प्रादेशिक केंद्र बिट्ठल - 574243 (कर्नाटक)

दिनांक 21 नवंबर, 2012 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गाया । श्री डी. के. पणिक्कर, उन निदेशक (कार्यान्वयन) सेवा निवृत, राजभाषा विभाग ने राजभाषा नियम और अधिनियम पर विवरण देते हुए धारा 3 (3) के अधीन आने वाले 14 दस्तावेजों में हस्ताक्षर करने वाले अधिकारियों जिम्मेदारी पर जोर दिया कि उक्त दस्तावेज द्विभाषा में ही जारी किया गया है या नहीं यह सुनिश्चित किया जाना अनिवार्य है ।

श्री सुमोद, कंप्यूटर सहायक द्वारा केंद्र के सभी कंप्यूटरों में यूनिकोड की संस्थापना की गई । और अंतिम सत्र में श्रीमती श्रीतला, तकनीकी अधिकारी (हिंदी) ने यूनीकोड का महत्व, विन्डोज़ आधारित किसी भी ऑपरेटिंग सिस्टम में कंप्यूटरों में कैसे यूनिकोड सक्रिय करें और उपयोग कैसे करें, विवरण दिया । यूनिकोड पर आधारित कंप्यूटर प्रशिक्षण जैसे नॉन यूनिकोड में तैयार फाइलों को यूनिकोड में बदलना, मशीन अनुवाद कैसे करें, भाषायी कंप्यूटरीकरण के संबंध में बृहद रूप से एक दिवसीय क्लास चलाने का निर्णय लिया गया ।

कार्पोरेशन बैंक, प्रधान कार्यालय, डा. पे. सं. 88, मंगलादेवी मंदिर मार्ग, पांडेश्वर, मंगलूर- 575001

प्रधान कार्यालय, कार्पोरेशन बैंक एवं आंचलिक कार्यालय-मंगलूर द्वारा नामित एकल खिड़की परिचालकों

के लिए कर्मचारी प्रशिक्षण महाविद्यालय, मंगलूरु में दिनांक 19 नवंबर, 2012 को यूनिकोड पर संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । उक्त कार्यशाला में कुल 18 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन डॉ. जपंती प्रसाद नौटियाल, सहायक महा प्रबंधक, राजभाषा प्रभाग ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने प्रतिभागियों को भारत सरकार के राजभाषा संबंधी नियमों का अनुपालन करने की आवश्यकता के बारे में बताया । उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया कि सरकारी बैंक के कर्मचारी होने के कारण सरकारी ओदशों का अनुपालन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए । इसके उपरांत श्री एच. गोविन्द पै. सहायक महा प्रबंधक, आँचलिक कार्यालय, मंगलूर ने मुख्य अभिभाषण दिया । उन्होंने अपने भाषण में कहा कि हिंदी के प्रति रुचि दिखानी है । धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ ।

प्रथम सत्र में डॉ. जयन्ती प्रसाद नौटियाल, सहायक महा प्रबंधक, राजभाषा नीति एवं राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विविध पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए । भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया । सभी कर्मचारियों को यूनीकोड टंकण (कार्यक्रम की रूपरेख) में कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने के बारे में बताया ।

दूसरे सत्र में श्रीमती सरस्वती, वरिष्ठ प्रबंधक (राभा) ने यूनिकोड संस्थापन तथा इन्स्क्रिप्ट की बोर्ड परिचय, तथा की बोर्ड उपयोग पर प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया ।

दोपहर के सत्र में यूनिकोड पर हिंदी शब्द संसाधन का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया । यूनिकोड संस्थापन में तथा यूनिकोड पर शब्द संसाधन में प्रतिभागियों को समस्याओं का निवारण किया गया ।

आकाशवाणी, भवानीपाटणा, ओड़िशा

आकाशवाणी, भवानीपाटणा में दिनांक-13 और 14 दिसम्बर, 2012 को दो दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में ओड़िशा के विभिन्न आकाशवाणी केंद्रों के अधिकारी तथा कर्मचारियों ने भाग लिया । 13 दिसम्बर को सुबह 11.00 बजे कार्यशाला का उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ ।

उद्घाटन सत्र के तुरंत बाद कार्यशाला का प्रथम सत्र प्रारम्भ हुआ । इस सत्र का विषय था ''राजभाषा नीति, नियम और अधिनियम'' इस विषय पर आकाशवाणी, कटक, के सहायक निदेशक राजभाषा श्री सुरेन्द्रनाथ सामल ने विस्तार से चर्चा की । कार्यशाला के प्रथम दिवस के अपराह्न सत्र का विषय था ''हिंदी भाषा, लिपि एवं वर्तनी'' । व्याख्याता थे केंद्रीय विद्यालय, भवानीपाटणा के पी.जी.टी. हिंदी श्री नरेश कमल । उन्होंने इस विषय को बहुत ही आकर्षक ढंग से समझाया और अभ्यास करवाया ।

द्वितीय दिवस अथात् 14 दिसम्बर को प्रथम सत्र में चर्चा के लिए विषय रखा गया था ''कार्यालयीन टिप्पण और पत्राचार'' । इस विषय पर आकाशवाणी, कटक के सहायक निदेशक राजभाषा श्री सुरेन्द्रनाथ सामल ने सविस्तार प्रकाश डाला और प्रशिक्षार्थियों को अभ्यास करवाया । द्वितीय सत्र का विषय था ''सामान्य हिंदी व्याकरण'' । जवाहर नवोदय विद्यालय, नरला के पी.जी.टी. हिंदी श्री रूद्रनारायण सोन ने हिंदी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की एवं उदाहरण प्रस्तुत करते हुए समझाया ।

आकाशवाणी, कोलकाता

आकाशवाणी, कोलकाता केंद्र द्वारा दिनांक 11-12-2012 को अपराह्न 2.30 से 5.00 बजे तक केंद्र के तल मंजिल पर स्थित वी.आई.पी. कक्ष में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इसमें ''देवनागरी लिपि और वर्तनी का मानकीकरण'' विषय पर व्याख्यान देने के लिए यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, कोलकाता की पूर्व मुख्य प्रबंधक श्रीमती रीता भट्टाचार्य को आमंत्रित किया गया था ।

व्याख्याता श्रीमती रीता भट्टाचार्य ने स्वर एवं व्यंजन के लिखित अभ्यास द्वारा बहुत ही सरल एवं कुशल तरीके से दो व्यंजन के शब्द/उच्चारण के भेद शब्दों तथा वाक्यों के प्रयोग से उनके अलग-अलग अर्थ होने के विषय में बताया तथा अभ्यास भी कराया । उन्होंने कहा कि हिंदी बहुत ही सरल भाषा है एवं यह जैसे बोली जाती है वैसे ही पढ़ी एवं लिखी भी जाती है । उन्होंने बर्तनी के मानकीकरण पर भी विस्तृत जानकारी दी एवं मानकीकृत व्यंजनों की सही पहचान भी कराया । उपस्थित सभी प्रशिक्षार्थियों ने बड़े ही ध्यान-मग्न होकर अति उत्साह के साथ राजभाषा हिंदी में अपने प्रश्नों

को प्रस्तुत किया जिसका व्याख्याता द्वारा बहुत ही सरल तरीके से जवाब दिया गया ।

'ख' क्षेत्र

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खडकवासला, पुणे-411024

केंद्रीय जल और विद्यतु अनुसंधान शाला, पुणे के अनुसंधान अधिकारी एवं अनुसंधान सहायकों को हिंदी में काम करने हेतु प्रेरित तथा मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से दिनांक 27-11-2012 को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई ।

कार्यशाला के आरंभ में प्रभारी सहायक निदेशक श्री कृष्ण कुमार गुप्ता ने उपस्थितों का स्वागत करते हुए कार्यशाला का उद्देश्य एवं उसके रूपरेखा की जानकारी दी । कार्यशाला का उद्घाटन राजभाषा अधिकारी श्रीमती वैंजयंती शेन्डे के कर कमलों द्वारा हुआ । कार्यशाला में व्याख्याता की हैसियत से प्रभारी सहायक निदेशक श्री कृष्ण कुमार गुप्ता और श्री श्रीकांत कुबल उपस्थित रहे ।

कार्यशाला का उद्घाटन के दौरान राजभाषा अधिकारी श्रीमती वैंजयंती शेन्डे ने प्रतिभागियों से उनके स्तर पर अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने की अपील की ।

श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, प्रभारी सहायक निदेशक ने राजभाषा नीति पर व्याख्यान दिया । श्री श्रीकांत कुबल ने कार्यालय पद्धति, पत्राचार का स्वरूप, टिप्पण/आलेखन, प्रशासनिक कार्य आदि से संबंधित विषयों पर व्याख्यान दिए ।

कार्यशाला में 8 अनुसंधान अधिकारी एवं 12 अनुसंधान सहायकों ने भाग लिया ।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पशुपालन, डेयरी एवं मात्स्यिकी विभाग, मुरगांव क्षेत्रीय कार्यालय, मुरगांव, गोवा - 403803

दिनांक 26-9-2012 को ''राजभाषा हिंदी का क़ार्यान्वयन- विविध पहलू'' विषय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित गई । हिंदी कार्यशाला में श्री देवकी नंदन पाठक, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, पणजी, गोवा को इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रुप में आमंत्रित किया गया । कार्यशाला के आरंभ में संस्थान प्रभारी डॉ विनोद कुमार मुडुमाला, वरिष्ठ मात्स्यिकी वैज्ञानिक ने अपने संबोधन में कहा कि कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाने तथा उनका हिंदी में फाइल कार्य आसान बनाने के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जिसका सभी को भरपूर लाभ उठाना चाहिए तथा इस कार्यशाला से अर्जित ज्ञान को फाइलों एवं कार्यालयीन कामों में प्रदर्शित करना है ताकि भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को हांसिल किया जा सके ।

आमंत्रित वक्ता श्री पाठक ने कार्यशाला का शुभारंभ हिंदी की संवैधानिक स्थिति एवं संविधान में हिंदी के विकास एवं कार्यान्वयन को लेकर बनाए गए प्रावधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला । उसके पश्चात् टिप्पण आलेखन की चर्चा करते हुए स्वत: पूर्ण टिप्पणी एवं अन्य टिप्पणियों में अंतर, टिप्पणी लिखने के पांच पैमाने आदि पर उदाहरणों सहित विस्तार से उपस्थिति को अवगत कराया । साथ ही सामान्य हिंदी और कार्यालयीन हिंदी के विभिन्न प्रकारों अर्थात् वाक्य संस्थनाओं पर भी श्री पाठक ने प्रकाश डाला ।

कर्मचारियों के हिंदी में कार्य करने की दृष्टि से यह कार्यशाला बहुत उपयोगी रही । कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस आयोजन में सहभागिता की । श्री पूरणसिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक ने अंत में उपस्थिति का आभार प्रकट किया ।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, मेधाणी नगर, अहमदाबाद-380016

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, अहमदाबाद में दिनांक 12-9-2012 को ''पर्यावरण एवं स्वास्थ्य'' नामक विषय पर एक दिवसीय वैज्ञानिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के सभी वैज्ञानिक, तकनीकी व प्रशासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

प्रथम सत्र में इसरो से आमंत्रित मुख्य अतिथि श्री सी. एन. लाल ने ''पर्यावरण एवं स्वास्थ्य'' नामक विषय पर

अपने विचार व्यक्त किए । तत्पश्चात द्वितीय सत्र में संस्थान के वैज्ञानिक ''सी'' डॉ. सुरेश यादव ने ''वेक्टर जनित रोग'' नामक विषय पर विचार वयक्त कर वर्तमान में प्रदूषण से उत्पन्न रोग जैसे - मलेरिया, डेंगु इत्यादि के बारे में बहुमूल्य एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्रदान की । तृतीय सत्र में संस्थान के तकनीकी सहायक श्री जे. बी. व्यास ने ''मर्क्युरी प्रदूषण'' नामक विषय पर हिंदी में स्लाइड शो के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए । चतुर्थ सत्र में संस्थान के तकनीकी अधिकारी श्रीमती कमलेश अग्रवाल ने ''पर्यावरण एवं स्वास्थ्य'' नामक विषय पर हिंदी में स्लाइड शो के माध्यम से चित्रमय सुंदर प्रस्तुती की । अंत में राकास के अवर सचिव श्री अतुल पंडया ने सभी प्रतिभागियों एवं वक्ताओं का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया ।

भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, स. ब. प. अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा अहमदाबाद - 380003

दिनांक 20 दिसम्बर, 2012 को विमानपत्तन निदेशक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, अहमदाबाद कार्यालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

अहमदाबाद एयरपोर्ट के टर्मिनल भवन स्थित सभागार में सर्वप्रथम प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा उपस्थित अधिकारियों, कर्मचारियों एवं हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन हेतु आमंत्रित श्री पी. सी. मोदी, कमिश्नर, आयकर ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित किया । अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने हिंदी कार्यशाला के नियमित रूप से आयोजन करने के महत्व पर प्रकाश डाला तथा आशा व्यक्त की कि हिंदी कार्यशाला में हिस्सा लेने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी इससे अवश्य लाभान्वित होंगे । उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएं दी ।

अपराह्न 1700 बजे हिंदी कार्यशाला का समापन समारोह आरम्भ हुआ । इस अवसर पर विमानपत्तन निदेशक ने उपस्थित प्रतिभागियों से फीडबैक लिए जिससे भविष्य में की जाने वाली हिंदी कार्यशालाओं के कार्यक्रम निर्धारित/सुनिश्चित किए जा सकें । उन्होंने प्रबंधक (राजभाषा) को निदेश दिए कि वे भविष्य में की जाने वाली हिंदी कार्यशालाओं हेतु 15-20 संभावित विषयों को नेट पर डाल दें तथा जिन विषयों की मांग अधिक हो, उन पर व्याख्यान दिलवाने की व्यवस्था करें । उन्होंने सुझाव दिया कि हिंदी कार्यशाला में चाहें एक या दो व्याख्यान ही क्यों न रखें जाए लेकिन व्याख्यान के बाद अभ्यास कराने की व्यवस्था अवश्य की जाए । अंत में उन्होंने सभी प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाओं के साथ अपना भाषण समाप्त किया ।

आकाशवाणी अहमदाबाद

दिनांक 25-9-2012 को आकाशवाणी के सभागार में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला का औपचारिक उद्घाटन करते हुए सचिव ने वक्ता एवं उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया । कार्यशाला में वक्ता के रूप डॉ. मालती दुबे, प्राध्यापक, राष्ट्रभाषा कॉलेज, आमंत्रित थी ।

कार्यशाला का विषय 'भाषा विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में हिंदी' रखा गया था । अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि हम सब भारतवासियों को अपनी भाषा में ही करनी चाहिए, रशियन जब रूसी भाषा में बोल रहा है तो अपनी भाषा में क्यों नहीं बोल सकते । उन्होंने बताया कि वाणी के प्रसाद से सारा संसार चल रहा है । संस्कृत भाषा पूरी तरह से सायंटिफिक भाषा है । उसी से हमारी भारतीय भाषाएं निकली है । आगे उन्होंने वर्णमाला से उदाहरण ले कर शब्दों को समझाया ।

अन्त में सचिव ने वक्ता का आभार व्यक्त करते हुए सभी सदस्यों से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने की अपील की ।

आकाशवाणी : पणजी (गोवा)

आकाशवाणी पणजी राजभाषा समिति द्वारा गोवा मुक्ति दिवस (19 दिसंबर), क्रिसमस 25 दिसंबर और नव वर्ष के परिप्रेक्ष्य में 20 दिसंबर, 2012 से त्रिदिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । कार्यशाला के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए आकाशवाणी पणजी (गोवा) के उपमहानिदेशक (कार्यक्रम) श्री बी. डी मजुमदार ने कहा- 'गोवा की मुक्ति के बाद विभिन्न चरणों में आकाशवाणी

पणजी के प्राइमरी चैनल, विविध भारती और एफ.एम. के प्रसारणों से हिंदी, कोंकणी और मराठी भाषाओं का गोवा में समुचित प्रसार हुआ है। कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी का क्रियान्वयन भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप प्रेरणा और प्रोत्साहन के द्वारा करते हैं। हिंदी में कार्य करने में आकाशवाणी पणजी में पारिवारिक वातावरण है। हमें यही उत्साह बनाए रखना है।

श्री वेणिमाधव बोरकार सहायक केंद्र निदेशक ने 'गोवा में हिंदी और भारतीय भाषाएं' विषय पर उद्‌गार करते हुए कहा कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान गोवा में भी स्वतंत्रता सेनानियों की संपर्क भाषा और आंदोलन की भाषा हिंदी थी। डॉ. राममनोहर लोहिया ने गोवा के स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी का प्रयोग किया था। गोवा की मुक्ति के बाद देवनागरी लिपि में कोंकणी भाषा को गोवा की राजभाषा का दर्जा दिया गया। साथ ही मराठी भाषा का प्रयोग भी स्वीकार किया गया। हिंदी कार्यशाला का संचालन करते हुए श्री खगेश्वर प्रसाद यादव सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि साधु, संतों, फकीरों, सैनिकों, व्यापारियों आदि के द्‌वारा गोवा में हिंदी और मराठी भाषा का प्रयोग सैकड़ों वर्षों से होता रहा है। अपने उद्‌बोधन में श्री देवकीनंदन वाठक हिंदी प्राध्यापक (हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, भारत सरकार) ने भारत सरकार की राजभाषा नीति, संविधान के उपबंधों, अष्टम अनुसूची में उल्लिखित भारतीय भाषाओं, संसदीय राजभाषा समिति, हिंदी का भूमंडलीकरण आदि पर विस्तार से प्रकाश डाला। हिंदी, कोंकणी और मराठी के विकास में पिछले पचास वर्षों में आकाशवाणी पणजी की भूमिका की उन्होंने सराहना की।

'क' क्षेत्र

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय (स. नि. प्रा.) आयकर भवन होशंगाबाद रोड, भोपाल - 462011

मुख्य आयकर आयुक्त, संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी म. प्र. एवं छत्तीसगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत आयकर कार्यालय भोपाल के मुख्य सभा कक्ष में दिनांक 14-12-2012 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला में आयकर महानिदेशक (अन्वें) कार्यालय, भोपाल स्थित समस्त आयकर आयुक्त कार्यालयों, आयकर आयुक्त कार्यालय ग्वालियर एवं जबलपुर कार्यालयों के कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में संबंधित कार्यालयों के नए कर सहायकों, वरिष्ठ कर सहायकों तथा कार्यालय अधीक्षकों को विशेष रूप से उन्हें जो अब तक किसी कार्यशाला में नामांकित नहीं किए जा सके हैं तथा जो तिमाही रिपोर्ट बनाने से संबंधित है, को नामांकित किया गया था। कार्यशाला में विभिन्न कार्यालयों के 21 प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यशाला में "राजभाषा नीति एवं हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट" को प्रमुख विषय के रूप में शामिल किया गया। कार्यशाला का आरंभ करते हुए डॉ. त्यागी ने हिंदी के इतिहास एवं भाषा के विकास एवं संरचना पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए राजभाषा की आवश्यकता एवं हिंदी को ही राजभाषा के रूप में स्वीकार करने के कारणों को भी समझाया। तदुपरान्त राजभाषा नीति की चर्चा करते हुए उसके संवैधानिक प्रावधानों, विभिन्न नियमों एवं क्षेत्रवार वर्गीकरण को भी समझाया गया। हिंदी के प्रयोग के लिए भारत सरकार राजभाषा विभाग द्‌वारा वर्ष 2012-13 के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित विभिन्न लक्ष्यों को उद्‌धृत करते हुए तद्‌नुसार हिंदी में कार्य करने के लिए अभ्यास करवाया गया।

कार्यशाला के द्वितीय चरण में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट के प्रपत्र को बिन्दुवार समझाते हुए उचित रूप से पूर्ण करने का अभ्यास करवाया गया।

कार्यशाला में नियामांतर्गत प्रावधानों की जानकारी के अतिरिक्त प्रतिभागियों को वर्तनी संबंधी शुद्धता, वाक्य विन्यास, प्रारुपण, टीप, अर्द्धशासकीय पत्र लेखन आदि का भी उचित अभ्यास करवाया गया। ताकि कर्मचारीगण कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का और अधिक सहजता से प्रयोग कर सकें।

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पंचदीप भवन, सी. आई. जी, मार्ग नई दिल्ली-110002

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, मुख्यालय, नई दिल्ली में दिनांक 7-12-2012 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्यालय की विभिन्न शाखाओं के 23 कार्मिकों ने भाग लिया । डॉ. पन्ना प्रसाद, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने सरकारी कार्यालयों में हिंदी में सुगमतापूर्वक कार्य करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन को आवश्यक बताया । इस अवसर पर राजभाषा के मुख्य प्रभारी श्री बी. के. साहू, बीमा आयुक्त ने कार्यालय के दैनंदिन व्यवहार में बोलचाल के शब्दों को अपनाए जाने का सुझाव दिया । श्री श्याम सुंदर कथूरिया, सहायक निदेशक (रा.भा.) द्वारा यूनिकोड पर व्याख्यान एवं प्रजेन्टेशन दिया गया । कार्यशाला में श्री मुकेश मलासी, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने विभिन्न प्रकार की पुरस्कार योजनाओं, हिंदी की आवधिक रिपोर्टों एवं टिप्पण/आलेखन पर व्याख्यान/अभ्यास कार्य कराया । अपने फीड बैक में प्रतिभागियों ने कार्यशाला के इस आयोजन को सफल एवं उपयोगी बताया ।

एन एच पी सी लिमिटेड, सैक्टर-33, फरीदाबाद-121003

12-12-2012 को प्रबंधक एवं उप प्रबंधक स्तर के कार्यपालकों के लिए एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के 27 कार्मिकों ने भाग लिया ।

इस हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री आर. आर. शर्मा, महाप्रबंधक (ई.एण्ड एफएमडी) ने किया । उन्होंने सभी प्रतिभागियों को हिंदी कार्यशालाओं का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि हिंदी भाषा का कार्यसाधक ज्ञान रखने के बावजूद हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने में होने वाली कठिनाईयों को दूर करने के लिए ही इन कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है । साथ ही उन्होंने कहा कि हमें आज के युग में कम्प्यूटर के महत्व को देखते हुए कम्प्यूटरों पर अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करना चाहिए ताकि निगम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सके ।

कार्यशाला के पहले दो सत्रों में प्रतिभागियों को विभिन्न हिंदी सॉफ्टवेयरों और उसके प्रयोग से संबंधित अद्यतन जानकारी देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (राजभाषा) श्री केवल कृष्ण को आमंत्रित किया गया था । उन्होंने प्रतिभागियों को अधुनातन हिंदी सॉफ्टवेयरों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी और उनके व्यवहारिक प्रयोग के बारे में बताया । उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा विकसित किए गए मंत्रा एवं श्रुतलेखन हिंदी सॉफ्टवेयर के बारे में भी जानकारी दी । उन्होंने यूनिकोड की उपयोगिता के बारे में बताते हुए कहर कि हम यूनिकोड के माध्यम से हिंदी की टाइपिंग न जानते हुए कम्प्यूटर पर अंग्रेजी टाइपिंग के द्वारा हिंदी में कर सकते हैं । उन्होंने प्रतिभागियों को इन सॉफ्टवेयरों के प्रयोग का अभ्यास भी कराया तथा कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने में आने वाली उनकी शंकाओं तथा समस्याओं का समाधान भी किया ।

भोजन के बाद के सत्र में डॉ. रवि. शर्मा, प्रभारी हिंदी विभाग, श्रीराम कॉलेज ऑफ कामर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय ने मानक हिंदी वर्तनी एवं हिंदी टिप्पण-प्रारूपण पर महत्वपूर्ण जानकारी दी एवं अभ्यास कराया ।

इस हिंदी कार्यशाला के अंतिम सत्र में डॉ. राजबीर सिंह, प्रमुख (राजभाषा) ने उपस्थित प्रतिभागियों को "राजभाषा नीति व उसका कार्यान्वयन" के बारे में जानकारी दी । साथ ही उन्होंने राजभाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें सकारात्मक सोच के साथ-साथ सरल शब्दों का प्रयोग करते हुए राजभाषा को बढ़ावा देना चाहिए और अपनी भाषा में दूसरी भाषा के प्रचालित शब्दों का समावेश भी कर लेना चाहिए ।

अंत में, डॉ. सोना शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने महाप्रबंधक (ई. एण्ड एफएमडी) तथा आमंत्रित वक्ताओं को कार्यशाला के लिए अपना बहुमूल्य समय व महत्वपूर्ण जानकारी देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही उन्होंने सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला में दी गई जानकारी का उपयोग अपने कार्यालयीन कार्य में करने का आह्वान किया ताकि राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में और अधिक प्रगति की जा सके ।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, जयपुर

जयपुर विमानपत्तन पर अधिकारी/कर्मचारी वर्ग हेतु दिनांक 18-10-2012 से 19-10-2012 तक दो दिनों की पूर्ण दिवसीय हिंदी यूनिकोड कार्यशाला आयोजित की गई।

इस कार्यशाला का उद्‌घाटन श्रीमान श्री डी. पॉल माणिक्कम् निदेशक विमानपत्तन, जयपुर द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने कार्यशाला का महत्व बताते हुए कहा कि कार्यशाला से कार्मिकों के कार्यों में सुधार आता है एवम् कार्यशाला से हमें अपनी कमियों की जानकारी मिलती है तथा उनमें सुधार के सुझाव एवं अवसर मिलते हैं। जयपुर विमानपत्तन पर हिंदी कार्य का प्रतिशत 99% तक पहुंच गया है जोकि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है जिसे बनाए रखना है।

श्री रोशनलाल चायाल, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा), ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स द्वारा यूनिकोड कार्यशाला का प्रशिक्षण दिया गया। श्री चायाल द्वारा यूनिकोड सोफ्टवेयर की सहायता कंप्यूटर पर हिंदी के कार्य, हिंदी में इन्टरनेट प्रयोग करने तथा विशेषत: हिंदी में ई-मेल भेजने का प्रशिक्षण दिया गया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सहसपुर, देहरादून

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, सहसपुर, देहरादून में आज दिनांक 28-9-2012 को हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह एवं एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कार्यालय के वरिष्ठ अनुवादक श्री कमल किशोर बडोला ने कार्यशाला में श्री कमल किशोर बडोला ने "कार्यालय पत्राचार, टिप्पण-आलेखन तथा हिंदी वर्णमाला" पर विस्तार से व्याख्यायन दिया। उन्होंने कार्यालय पत्राचार के विविध रूपों की जानकारी देते हुए उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अभ्यास कराया। टिप्पण-आलेखन के संबंध में उन्होंने टिप्पणी की प्रकार, इसके चरण तथा आदर्श टिप्पण की विशेषताएं बताई साथ ही पत्र प्रारूप तैयार करने हेतु मुख्य बातें, प्रारूप के सिदधांत एवं एक अच्छे प्रारूपकार की विशेषताओं से भी सभी को अवगत कराया। देखा गया कि अधिकतर अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी वर्णमाला की पूर्ण जानकारी नहीं है। अत: हिंदी वर्णमाला का अभ्यास कराया गया जिसमें सभी ने अत्यधिक रूचि ली। इसी अवसर पर उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों की राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित जिज्ञासाओं को भी शांत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कार्यालय प्रभारी डॉ. पी. के. सिंह, वैज्ञानिक-डी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यशाला में बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हमें बचकर निकलने की मानसिकता से बाहर निकलना होगा। हमारे अंदर एक जिज्ञासा होनी चाहिए। कार्यशालाएं इसी प्रकार की जिज्ञासाओं को शांत करती हैं। हमें अपने राष्ट्र का राष्ट्रध्वज का और राष्ट्रभाषा का सम्मान करना चाहिए। इसके लिए सभी को दृढ़ प्रतिज्ञ होना पड़ेगा। हमें हिंदी अपनाने के लिए आज ही संकल्प लेना होगा।

आकाशवाणी : इंदौर

आकाशवाणी इन्दौर में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में विशेष रूप से उपस्थित आकाशवाणी महानिदेशालय की श्रीमती ऋचा बैनर्जी, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने व्यक्त किए। कार्यालयीन राजभाषा सम्बन्धी कार्यों के निरीक्षण के उपरान्त आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में श्रीमती ऋचा बैनर्जी ने अधिकारियों/कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यद्यपि यह केंद्र 'क' क्षेत्र में आता है, फिर भी यहाँ हिंदी में किए जा रहे कामकाज वास्तव में सराहनीय हैं क्योंकि यहाँ अधिकारी व कर्मचारी स्वप्रेरणा व स्वेच्छा से और पूर्ण जागरूकता के साथ आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने आग्रह किया कि हमें स्वदेश, स्वपरिवार, स्वजन और स्नेह की धारणा के समान ही स्वभाषा की भावना भी धारण करना चाहिए। श्रीमती बैनर्जी ने केन्द्र में किए जा रहे कार्यों के निरीक्षण के सन्दर्भ में कहा कि यहाँ संघ की राजभाषा नीति को क्रियान्वित करने के पूरे प्रयास किए गए हैं तथा शत-प्रतिशत कार्य स्वभावना व स्वप्रेरणा के साथ हो रहे हैं।

श्रीमती बैनर्जी ने सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन के संदर्भ में कहा कि यह कोई कठिन कार्य नहीं है, बल्कि इसके लिए हमें केवल संकल्प के साथ स्वप्रेरणा से अपना समस्त कामकाज हिंदी में करना है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ आपसी विचार-विनिमय का एक अच्छा मंच है। श्रीमती बैनर्जी का विचार था कि हम चाहें तो अनेक भाषाएँ सीख सकते हैं, किन्तु अपनी भाषा के प्रति निष्ठावान रहें और सकारात्मक दृष्टिकोण रखें।

(घ) हिंदी दिवस

'ग' क्षेत्र

एम एस एम इ-विकास संस्थान, कांजाणी रोड, अय्यंतोल डाक घर, तृश्शूर-680003

हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त होने की पावन स्मृति में इस वर्ष 14-9-2012 से 28-9-2012 तक की अवधि के दौरान, सदा की भाँति, हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं के साथ-साथ 18-9-2012 को 'एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला' का भी आयोजन किया गया ।

हिंदी पखवाड़े के आयोजन पर हर्ष प्रकट करते हुए राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, तृश्शूर के वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रभारी अधिकारी डा. एन के द्विवेदी ने इनमें सभी की सहभागिता के लिए आग्रह किया । उनका मत था कि हिंदी उत्तर से दक्षिण तक एवं पूरब से पश्चिम तक सभी की भाषा है । अतएव, भारत सरकार के निर्देशानुसार सभी अधिकारियों व कर्मचारियों का यह कर्तव्य है कि दैनिक सरकारी कार्य में उसका प्रयोग यथासंभव करें ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए, संस्थान के निदेशक महोदय श्री सव्यसाची पणिक्काशेरी ने हिंदी पखवाड़े के आयोजन के उद्देश्य पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए आग्रह किया कि सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने दैनिक सरकारी कार्य में हिंदी का प्रयोग करें - इसी में इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की सफलता निहित है ।

मुख्य आयकर आयुक्त (सं. नि. प्रा.) कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र गुवाहाटी

दिनांक 14-9-2012 को हिंदी दिवस 2012 का उद्घाटन किया गया । समारोह का उद्घाटन श्रीमती जे. पी. मस्सार, भा.रा.से., मुख्य आयकर आयुकत (संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी) कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी के कर कमलों से पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलित करके संपन्न हुआ । इस अवसर पर श्री एल. आर. लांबा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अध्यक्ष सहित समारोह में उपस्थित सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों का स्वागत किया और माननीय गृह मंत्री जी के संदेश का पाठ किया ।

उद्घाटन समारोह में अपने अध्यक्षीय भाषण में श्रीमती जे. पी. मस्सार, भा.रा.से., मुख्य आयकर आयुक्त (संवर्ग नियंत्रण प्राधिकारी) कार्यालय, पूर्वोत्तर क्षेत्र, गुवाहाटी ने हिंदी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे हिंदी पखवाड़ा, 2012 के दौरान आयोजित किए जाने वाले सभी प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लें जिससे हिंदी में काम करने का माहौल बनाया जा सके और कार्यालय का कमकाज राजभाषा हिंदी में भी निष्पादित किया जा सके । 14 से 27 सितंबर 2012 तक आयोजित हिंदी पखवाड़ा के दौरान कविता पाठ, सुलेख, टिप्पण व मसौदा लेखन, हिंदी शब्दावली ज्ञान, समाचार वाचन, सार संक्षेपण, निबंध लेखन, वर्तनी लेखन तथा श्रुत लेखन प्रतियोगिताएं संचालित की गई ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री एल. सी. जाशी राणी, भा.रा.से., आयकर आयुक्त, गुवाहाटी ने राजभाषा हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कार्यालय के फाइलों और जारी किए जाने वाले पत्र आदि में हिंदी में छोटे-छोटे टिप्पणी लिखकर या हिंदी मे हस्ताक्षर करके हिंदी प्रयोग के साथ-साथ पत्राचार को बढ़ाने का अनुरोध किया और कार्यालय में प्रशासन से संबंधित कार्य यथासंभव हिंदी में करने का आग्रह करते हुए कहा कि गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2012-13 में निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आयकर विभाग के अधिकारीगण यथोचित कदम उठाएं ताकि राजभाषा कार्यान्वयन में गति लाई जा सके ।

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, आयकर भवन, महात्मा गांधी रोड़, शिलांग-793001

दिनांक 14 सितंबर, 2012 से 24 सितंबर, 2012 के दौरान बड़े हर्षोल्लास के साथ हिंदी दिवस/सप्ताह का मनाया गया ।.14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन श्री अशोक कुमार झा, भा.रा.से., आयकर आयुक्त, शिलांग के साथ-साथ श्री डी.ए.जे. सक्मे, भा.रा. से., अपर आयकर आयुक्त (रेंज), श्री ओ.पी. कांथेर, भा. रा.से., संयुक्त आयकर आयुक्त (टीडीएस) तथा श्री एल.

आर. लांबा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा करतल ध्वनि के बीच द्वीप प्रज्जवलित कर किया गया । श्री अशोक कुमार झा, भा.रा.से., आयकर आयुक्त, शिलांग ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हमें सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करना चाहिए । श्री एल .आर. लांबा, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार, श्री सुशील कुमार शिंदे का संदेश पढ़ा गया । कार्यालय के कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों में रूचि बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए । हिंदी सप्ताह कार्यक्रम के दौरान हिंदी निबंध लेखन, हिंदी मसौदा लेखन, हिंदी-अंग्रेजी तकनीकी शब्द, हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद, हिंदी-अंग्रेजी टिप्पण, हिंदी कविता वाचन, श्रुत लेख, अंत्याक्षरी एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

क्षेत्रीय निदेशक, वैमानिक गुणता आश्वासन का कार्यालय, वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, हैदराबाद-42.

क्षेत्रीय निदेशक, वैमानिक गुणता आश्वासन का कार्यालय, वैमानिक गुणता आश्वासन महानिदेशालय, रक्षा मंत्रालय, हैदराबाद-42. में 14 सितंबर 2012 से 28 सितंबर 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया ।

सम्पूर्ण हिंदी पखवाड़े के दौरान आशुभाषण, निबंध, अनुवाद, वाद-विवाद एवं कविता वाचन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने प्रति वर्ष की तरह काफी उत्साह से भाग लिया ।

विंग कमांडर डी. जी. रेड्डी, क्षेत्रीय निदेशक ने अर्पने भाषण में कहा कि हमारा देश आर्थिक रूप से एक विकसित देश की तरह उभर रहा है तथा एक विकसित देश में उसकी अपनी भाषा अर्थात् हिंदी को भी उसी तरह विकसित करना हम सभी का दायित्व है । हमें इसके प्रचार एवं प्रसार के लिए कटिबद्ध होना होगा ।

हिंदी अनुभाग द्वारा हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में जीतने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथि तथा क्षेत्रीय निदेशक महोदय के कर कमलों से प्रदान करवाये गए ।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िशा, भुवनेश्वर कार्यालय

दिनांक 14 सितंबर 2012 को पूर्वाह्न 10.30 बजे प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) श्रीमती गार्गी कौल की अध्यक्षता में तीनों कार्यालयों, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), महालेखाकार (सा. एवं सा. क्षेत्र ऑडिट) तथा महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र ऑडिट) कार्यालयों द्वारा संयुक्त रूप में हिंदी दिवस समारोह बड़े धूम-धाम से मनाया गया । यह समारोह भुवनेश्वर स्थित यूनिट 4 के ऑडिट एवं एकाउंटस रिक्रिएशन क्लब के सभागार में आयोजित हुआ था । श्री रबीन्द्र नाथ चन्दा, वरिष्ठ लेखाकार ने 14 सितंबर से 28 सितंबर तक तीनों कार्यालयों में होने वाली विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी ।

दिनांक 28 सितंबर 2012 को पूर्वाह्न 10.30 बजे भुवनेश्वर स्थित जयदेब भवन में हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया था । इस समारोह में ओड़िशा के महामहिम राज्यपाल श्री मुरलीधर चंद्रकान्त भण्डारे मुख्य अतिथि के रूप में योग देकर कार्यक्रम का शोभा बढ़ाया था ।

प्रधान महालेखाकार श्रीमती गार्गी कौल ने अपने भाषण में कहा कि राज-काज हिंदी में करना है यह हम सभी जानते हैं, परंतु इसे शत प्रतिशत कार्यान्वित करने के बारे में हम सबको ठोस कदम उठाने की जरूरत है । राजभाषा हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए हम सभी को सतत् मन से सहयोग का हाथ बढ़ाना होगा । उन्होंने महामहिम राज्यपाल महोदय को अपना अमूल्य समय देकर इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पधारने हेतु विशेष आभार व्यक्त किया एवं कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के इस अभियान में आपका मार्ग दर्शन हमारे लिए पथ प्रदर्शक साबित होगा ।

मुख्य अतिथि महामहिम राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारियों को हिंदी पखवाड़ा समारोह की बधाई देते हुए कहा कि मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि महालेखाकार कार्यालयों में हिंदी में बहुत अच्छा काम-काज हो रहा है । हिंदी में पत्रिका भी निकलती है, जिसमें कार्यालय के स्टाफ सदस्य की रचनाएं छपती हैं

जो अत्यंत सराहनीय बातें हैं । इसके अलावा हर वर्ष हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा बड़े धूम-धाम से मनाए जाते हैं एवं समय-समय पर हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया जाता है । यह जानकर खुशी हो रही है कि आज इस मंच पर स्टाफ कलाकारों द्वारा हिंदी नाटक का भी मंचन किया जाएगा ।

अत: इन तमाम गतिविधियों से यह बात बिल्कुल साबित हो रही है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए आप लोग भरपूर प्रयास कर रहे हैं । अपने मार्गदर्शीय भाषण में कहा कि आप लोग सरल एवं बोल-चाल की हिंदी का प्रयोग करें तो आगे चलकर आपके मन में हिंदी के प्रति जो झिझक है वे आसानी से दूर हो जाएगी एवं आप सब लोग अपने जीवन के रोजमर्रा के काम-काज में बेझिझक हिंदी का उपयोग कर सकेंगे । मैं उम्मीद करता हूँ कि आपके द्वारा किए जा रहे यह सतत प्रयास जारी रहेंगे एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के इस अभियान में पूरी सफलता के साथ आगे बढ़ते रहेंगे । इस अवसर पर उन्होंने विगत दिनों में आयोजित हुए अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों का हवाला देते हुए कहा कि हिंदी अब अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन चुकी है । बस हम सबको इसे अपने ही घर में किस तरह से मजबूत करेंगे इस बारे में मंथन करने की जरूरत है ।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता सेवक परियोजना द्वारा 99 सेना डाकघर

मुख्यालय मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना में दिनांक 1 सितंबर 2012 से 14 सितंबर 2012 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन किया गया ।

हिंदी दिवस/पखवाड़े के दौरान हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएं, जैसे हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें सभी हिंदी तथा हिंदीत्तर भाषी कर्मचारियों ने उल्लासपूर्वक भाग लिया ।

समापन समारोह के दौरान मुख्य अभियंता महोदय ने प्रतियोगिता के सभी विजयी प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र वितरण कर हौसला अफजाई किया । समापन भाषण के दौरान मुख्य अभियंता महोदय ने सभी भाग लेने वाले प्रतियोगियों की सराहना की तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला । उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस तरह के आयोजनों से हिंदी को निश्चित रूप से बढ़ावा मिलेगा तथा हिंदी के निर्धारित लक्ष्यों को अवश्य प्राप्त कर सकेंगे । हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हम प्रयासरत हैं । दीमापुर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तरफ से आयोजित विविध कार्यक्रमों में भी सेवक परियोजना द्वारा सक्रिय रूप से भाग लिया जाता है तथा लिए गए निर्णयों पर तदानुसार कार्रवाई की जाती है ।

पूर्वी आधार कर्मशाला (ग्रेफ) पिन-931701 द्वारा 99 सेना डाकघर

पूर्वी आधार कर्मशाला (ग्रेफ) में दिनांक 1 सितंबर 2012 से 14 सितंबर 2012 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन किया गया ।

पखवाड़े के दौरान हिंदी के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए हिंदी निबंध, हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग तथा भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया ।

पखवाड़े के समापन समारोह पर कमांडेंट महोदय के कर-कमलों द्वारा विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए । कमांडेंट महोदय ने कहा कि हिंदी पखवाड़ा सफलतापूर्वक मनाने के बाद यह दृढ़ संकल्प लें कि हम सभी कर्मचारी पूरे वर्ष हिंदी में काम करने के प्रति रूचि लें तभी हमारा हिंदी दिवस/पखवाड़ा सार्थक होगा । हिंदी के प्रति जागरूकता का आह्वान करते हुए मुख्य अभियंता महोदय ने हिंदी पखवाड़े का समापन किया ।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता अरुणांक परियोजना द्वारा 99 सेना डाकघर

मुख्यालय, मुख्य अभियंता, अरुणांक परियोजना तथा इसके अधीनस्थ 23 सीमा सड़क कृतिक बल एवं 756 सीमा सड़क कृतिक बल में दिनांक 1 सितंबर 2012 से 14 सितंबर 2012 तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

पखवाड़े के दौरान परियोजना मुख्यालय एवं कृतिक बलों में हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन, निर्णायक मण्डल की देख-रेख में किया गया । इसमें हिंदी तथा हिंदीत्तर भाषी सभी ने रुचि पूर्ण भाग लिया ।

अपने समापन भाषण में मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि हिंदी जन-जन की भाषा है और इसे पूरे तन्मयता के साथ हमें सरकारी काम-काज में प्रयोग करना चाहिए। मुझे खुशी है कि आप सब हिंदी पत्राचार में रूचि ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्मारण पत्र, ज्ञापन, प्रेषण पत्र, छोटे-छोटे पत्र अनिवार्य रूप से हिंदी में ही जाने चाहिए। अधिकारियों को हिंदी में ही दस्तखत करने के साथ-साथ डिक्टेशन भी हिंदी में देनी चाहिए। कर्मचारियों को अधिक से अधिक टिप्पण-पत्र हिंदी में बनानी चाहिए। अगर आप सबका हिंदी के प्रति यही उत्साह रहा तो हम अवश्य ही राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को हासिल कर लेंगे।

मुख्यालय, मुख्य अभियंता सम्पर्क परियोजना द्वारा 56 सेना डाकघर

मुख्यालय, मुख्य अभियंता, सम्पर्क परियोजना, द्वारा 56 सेना डाकघर में दिनांक 1 सितंबर 2012 से 14 सितंबर 2012 तक हिंदी दिवस/पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा में हिंदी कविता/गीत (गान), हिंदी निबंध लेखन तथा हिंदी कम्प्यूटर टाइपिंग प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। जिसमें सभी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस प्रतियोगिताओं का संचालन निर्णायक मंडल की देख-रेख में किया गया। कर्नल सजन कुमार दास, स्था. मुख्य अभियंता के कर कमलों द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

अपने समापन भाषण के दौरान स्था. मुख्य अभियंता ने कहा कि हिंदी जन-जन की भाषा है और इसको इसी तरह उत्साह के साथ प्रयोग में लाया जाना चाहिए। हमें खुशी है कि सभी कर्मचारियों ने हिंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपना उमंग-उत्साह दिखाया।

यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, द्वितीय तल, 10, विप्लवी त्रैलोक्य महाराज सरणी, कोलकाता

यूको बैंक के प्रधान कार्यालय के निदेशक मंडल सभागार में महाप्रबंधक श्री एस सी ढोल की अध्यता में हिंदी दिवस का औपचारिक आयोजन संपन्न हुआ। बैंक के सभी वरिष्ठ कार्यपालकों की उपस्थिति में बैंक की राजभाषा प्रतिज्ञा का पाठ किया गया। भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री एवं वित्त मंत्री के संदेशों का वाचन क्रमश: महाप्रबंधक श्री उमाकांत मिश्र एवं श्री ए सी शलाठ ने किया। बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के संदेश का वाचन महाप्रबंधक श्री विजय कुमार गुप्त ने किया। पिछले हिंदी दिवस के बाद से एक वर्ष के दौरान राजभाषा विभाग की प्रमुख गतिविधियों का ब्यौरा वरिष्ठ प्रबंधक डॉ सुधीर साहु ने किया। उप महाप्रबंधक श्री गदाधर पंडा ने बैंकिंग कार्यों में किए जा रहे हिंदी के सराहनीय प्रयोगों का विवरण प्रस्तुत करते हुए इसे और आगे बढ़ाने की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उप महाप्रबंधक श्री ए के शर्मा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रमुख कवियों की प्रसिद्ध रचनाओं का सस्वर पाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ प्रबंधक श्री अमल शेखर करणसेठ ने तथा कार्यक्रम का संचालन मुख्य प्रबंधक श्री विजय कुमार यादव ने किया।

महानिदेशालय असम राइफल्स शिलांग-793010

दिनांक 12 से 26 सितंबर 2012 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान महानिदेशालय असम राइफल्स एवं इसके अधीनस्थ फार्मेशन और यूनिटों में भी व्यापक रूप से समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। विजेता प्रतिभागियों को प्रथम द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही, निदेशालय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार भी दिए गए।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, श्री रामपुरा, मानंदवाडी रोड, मैसूर

दिनांक 14-9-2012 को राजभाषा दिवस तथा सभी भारतीय भाषाओं का सौहार्द दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

1 सितंबर 2012 से आरंभ किए इस राजभाषा पखवाड़े के दौरान 10 विभिन्न प्रतियोगिताएँ सही लेखन, श्रुतलेखन, स्मृति परीक्षण, सामूहिक चर्चा, वाक्, टिप्पण आलेखन व प्रशासनिक शब्दावली, तकनीकी शब्दावली, गीत, तस्वीर क्या बोलती है ?, अंतयाक्षरी आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि डॉ. सानिया अख़्तर और डॉ. एस. एम. एच. कादरी, निदेशक के कर-कमलों से पुरस्कृत किया गया।

ज्वार अनुसंधान निदेशालय, राजेन्द्रनगर, हैदराबाद-500030

ज्वार अनुसंधान निदेशालय में 14-28 सितंबर, 2012 के दौरान हिंदी पखवाड़े समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे- छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी में अनुवाद, प्रश्न-मंच, त्वरित निबंध, टिप्पण एवं आलेखन, श्रुत-लेखन (शुद्ध लेखन), हिंदी पाठ का वाचन, निबंध लेखन तथा काव्य पाठ वाचन का आयोजन किया गया, जिसमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक तथा अनुसंधान सहायक, शोध छात्रों आदि ने बड़े-ही उत्साह के साथ भाग लिया। इसके अलावा उक्त पखवाड़े के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने हिंदी में हस्ताक्षर करके कार्यक्रम को सफल बनाया। इस समारोह के दौरान 20 सितंबर, 2012 को "टिप्पण एवं आलेखन" विषय पर एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला भी आयोजित की गई। इस कार्यशाला का संचालन श्री सरोज कुमार सिंह एवं डॉ. महेश कुमार ने किया तथा कुल 10 सहभागियों ने इसमें भाग लिया।

संस्थान के निदेशक डॉ. जे. वी. पाटील ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह तो सर्वविदित है कि भारत को 'विविधता में एकता' का देश कहा जाता है और इसकी एक प्रमुख कड़ी जनभाषा व राजभाषा हिंदी है जो इस समूचे देश को एकता के सूत्र में बांधे हुए है। उन्होंने बताया कि एक राष्ट्र की उन्नति में भाषा का अत्यधिक योगदान रहता है और हमें इस तथ्य का ध्यान रखकर ही हिंदी में कार्य करना आवश्यक है, चूंकि देश का एक बड़ा जन-समुदाय हिंदी भाषा का पर्याप्त ज्ञाता है।

कोलकाता डॉक लेबर बोर्ड, 20 बी, अब्दुल हमीद स्ट्रीट, कोलकाता-700069

बोर्ड ने राजभाषा अधिनियम/नियम का कार्यान्वयन करने के लिए सभी क्रिया-कलापों का प्रबंध जारी रखा। बोर्ड ने प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी दिवस तथा वार्षिक हिंदी सप्ताह दिनांक 10-9-2012 से 14-9-2012 तक हिंदी सप्ताह का पालन किया गया। हिंदी दिवस दिनांक 11-9-2012 को पालन किया गया, इसके अन्तर्गत एक विशेष हिंदी पारिभाषिक शब्दावली तैयार कर बोर्ड के अधिकारियों और कर्मचारियों को वितरित किया गया। दिनांक 13-9-2012 को एक हिंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बोर्ड के 13 कर्मचारियों के बीच उनके योग्यता के आधार पर अच्छे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड, कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम, असम

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड की अनुषंगी कछाड़ पेपर मिल, पंचग्राम में 14 सितंबर, 2012 को "हिंदी दिवस समारोह" का आयोजन प्रशासनिक भवन स्थित प्रशिक्षण केन्द्र में किया गया।

हिंदी प्रतियोगिताओं के 21 विजेताओं के बीच पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम मंचासीन अतिथियों मुख्य अधिशासी श्री प्रताप गोस्वामी एवं उप महाप्रबंधक (अभियंत्रण) श्री सन्तोष राय के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर निगम की "बच्चों के लिए हिंदी प्रोत्साहन योजना" के अंतर्गत आठ बच्चों को, जिन्होंने कक्षा-10 की बोर्ड परीक्षा में हिंदी विषय में 91 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया था, को मुख्य अधिशासी श्री गोस्वामी ने पुरस्कृत एवं सम्मानित किया।

मिल के मुख्य अधिशासी श्री प्रताप गोस्वामी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी को राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में सामने रखकर भारतीय राष्ट्र की कल्पना की गई थी। उसके साकार रूप में इसे केन्द्रीय सरकार की राजभाषा का स्थान दिया गया है। "हिंदी दिवस या राजभाषा माह" उसी की कड़ी के रूप में हर वर्ष हम मनाते हैं। कछाड़ पेपर मिल में हिंदी की गति अत्यंत प्रगतिशील रही है। यह सौभाग्य की बात है कि हमारे मिल के सभी कार्मिक हिंदी बोलते और समझते हैं। कागज उत्पादन के साथ-साथ हिंदी के मामले में भी हमारी उपलब्धि उल्लेखनीय रही है। हम इसी तरह आगे बढ़ते रहें, टीम वर्क के रूप में काम करते रहें, यही कामना है। इस समय राजभाषा हिंदी राष्ट्रीयता की सीमाओं को पार कर अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ले चुकी है। मीडिया की भाषा के रूप में यह संपर्क भाषा की तरह काम करने लगी है। निःसंदेह यह शुभ सूचक है। इस अवसर पर मेरा संदेश यही है कि आप राजभाषा हिंदी का सम्मान करने के साथ-साथ सरल हिंदी को व्यवहार में लाएं।

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड, 75 सी, पार्क स्ट्रीट, कोलकाता-700016

हिन्दुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लिमिटेड में पूरे सितंबर माह को 'राजभाषा हिंदी माह पालन' के रूप में मनाया गया । पहली सितंबर को निगम के अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक श्री एम. वी. नरसिंम्हा राव ने एच. एन. एल. में समारोह का विधिवत् उद्घाटन किया । अपने संदेश में उन्होंने कहा कि आज की सांस्कृतिक एवं सामाजिक विविधता सम्पूर्ण विश्व में अनूठी है और इस विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने में भारत संघ की राजभाषा हिंदी पूर्णत: समर्थ है । इस भाषा ने अपने दायित्व को अब तक बखूबी निभाया है और आगे भी इसमें सफल रहेगी । इसने देश की सामासिक संस्कृति का पोषण किया है । इसकी लिपि देवनागरी सबसे अधिक वैज्ञानिक है । फलत: पूरे देश में आमतौर पर प्रयोग की जाने वाली इस सरल, सुबोध, सुगम्य एवं जनप्रिय भाषा का सरकारी एवं दैनिक कामकाज में निरंतर बढ़ता प्रयोग इसकी लोकप्रियता का प्रतीक है ।

आकाशवाणी एवं दूरदर्शन दिसपुर गुवाहाटी

प्रसार भारती, अपर महानिदेशक (अभियांत्रिकी) का कार्यालय (पूर्वोत्तर), आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहाटी में दिनांक 14-9-2012 को हिंदी दिवस और 14-9-2012 से 27-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया ।

हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन श्री एन. ए. खान, अपर महानिदेशक (अभि.) द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया । अपने उद्घाटन भाषण में अपर महानिदेशक (अभि.) महोदय ने कार्यालय के सभी स्टाफ के सदस्यों से हिंदी में काम करने की अपील की । उन्होंने कहा कि आज विश्व भर में हिंदी सीखने और सिखाने पर जोर दिया जा रहा है । भारत सरकार के कर्मी होने के नाते हमारा भी यह दायित्व है कि राजभाषा के रूप में हिंदी को अपने कार्यालयीन कामकाज में प्रयुक्त करें ।

आकाशवाणी : धारवाड

आकाशवाणी धारवाड में दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा उत्साह के साथ मनाया गया । इस संदर्भ में पखवाड़ा भर हिंदी अनुवाद, हिंदी आशुभाषण, हिंदी निबंध, (मल्टी टास्कफोर्स कर्मचारियों के लिए) हिंदी अंताक्षरी, हिंदी चित्र आधारित कहानी लेखन, तथा हिंदी शब्द ज्ञान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया इनमें उत्साह के साथ कर्मचारियों ने भाग लिया ।

आकाशवाणी : विशाखापट्टणम

आकाशवाणी, विशाखापट्टणम में इस वर्ष भी दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े ही धूम-धाम के साथ मनाया गया । 14 सितंबर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह के साथ हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ हुआ । इस अवसर पर श्रीमती एस. सौभाग्य रानी, सहायक निदेशक (रा.भा.) (प.) ने हिंदी दिवस समारोह में उपस्थित सभी स्टाफ सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया तथा उन्हें 'हिंदी दिवस' की शुभकामनाएं दीं और दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक 'हिंदी पखवाड़ा' के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं की जानकारी दी ।

तदुपरांत केन्द्र की कार्यालयाध्यक्ष महोदया श्रीमती रा. हर्षलता, उप निदेशक (इंजी.) ने 'हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर राजभाषा संबंधी नियम एवं प्रावधानों के प्रति प्रत्येक सदस्य को जागरूक एवं सचेत रहने के साथ-साथ सभी से उन पर अमल करने का आग्रह किया । सभी को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने खुशी जाहिर की कि इस केन्द्र के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी के प्रति अत्यंत रुचि दिखाते हैं और अधिकतर कर्मचारी हिंदी में काम करने में गौरव महसूस करते हैं, यह उनके लिए गर्व की बात है ।

दूरदर्शन केंद्र, तिरुवनंतपुरम

दूरदर्शन केंद्र, तिरुवनंतपुरम में दिनांक 14 सितंबर, 2012 से 28 सितंबर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया । इस दौरान केन्द्र के मुख्य द्वार पर तथा प्रांगण में हिंदी पखवाड़ा, 2012 का बैनर लगाया गया । हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में सभी वर्ग व अनुभाग के कर्मचारियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया । हिंदी पखवाड़ा के दौरान केन्द्र के कार्यालयीन कामकाज अधिक से अधिक हिंदी में किया गया ।

अध्यक्षीय भाषण में निदेशक महोदय ने कहा कि इस केन्द्र में राजभाषा कार्यान्वयन प्रगति के पथ पर है और

दूरदर्शन महानिदेशालय से अनंतदर्शन को प्राप्त पुरस्कार एवं हिंदी वेबसाइट लाँचिंग इसके दृष्टांत हैं । उन्होंने केंद्र के सभी पदधारियों को आह्वान किया कि अधिक से अधिक काम हिंदी में करके राजभाषा कार्यान्वयन में तेजी लाने की कोशिश करें । श्री एस. रमेश, उप महानिदेशक (अभि.) ने अपने आशीर्वचन भाषण में कहा कि प्रभावी राजभाषा कार्यान्वयन में केन्द्र के हिंदी अनुभाग की अहम् भूमिका है और यह भूमिका अच्छी तरह निभाई जा रही है । मुख्य अतिथि, श्रीमती शोभा कोशी ने कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग में सरलता एवं सहजता लानी चाहिए । हिंदी के प्रचार प्रसार में दूरदर्शन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है । उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना हमारा दायित्व ही नहीं, अपितु हम सब के लिए गर्व का विषय भी है । उन्होंने हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए केन्द्र द्वारा किए जाने वाले प्रयासों की भूरी-भूरी प्रशंसा की ।

आकाशवाणी : कडपा

आकाशवाणी, कडपा केन्द्र में हिंदी पखवाड़ा 14 सितंबर से 28 सितंबर तक आकाशवाणी के प्रांगण में बड़ी उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया । इस समारोह के उपलक्ष्य में 14 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिनोत्सव का उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया ।

14-9-2012 से लेकर 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा के आयोजन के संदर्भ में पूरे 15 दिनों तक हिंदी साहित्य व भाषा संबंधी वार्ता का प्रसारण आकाशवाणी, कडपा केंद्र द्वारा किया गया । इस पखवाड़े के दौरान विविध प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

समापन समारोह में श्री बी. वी. रमण रो, उप महानिदेशक (इ.) व कार्यालय प्रमुख ने सभा की अध्यक्षता की । उन्होंने अपने भाषण में यह बताया कि हिंदी एक सरल, कोमल और मधुर भाषा है, हिंदी भारत देश की आत्मा है । इसे हमें इज्जत के साथ अपनाना चाहिए । भाषा देश की एकता और अखण्डता की प्रतीक है । भाषा से देश की सभ्यता और संस्कार विकास होती है । हिंदी भाषा करोड़ों लोगों को रोजगार खोजने में सहायता देती है । इसीलिए भारतवासी होने के नाते हम सब की यह जिम्मेदारी है कि हम हिंदी भाषा को अपनाए ।

दूरदर्शन केन्द्र : गान्तोक

दूरदर्शन केन्द्र गान्तोक में दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़े का सफलन आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-9-2012 को श्री बी. एस. कोलिया, वैज्ञानिक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, गान्तोक द्वारा पखवाड़े का विधिवत् शुभारम्भ किया गया । दिनांक 20-9-2012 से 24-9-2012 तक विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई, जिसमें प्रमुख थीं हिंदी पाठन, श्रुतिलेखन, हिंदी / अंग्रेजी अनुवाद, अंग्रेजी से हिंदी शब्दानुवाद तथा पत्र लेखन इत्यादि । इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के लगभग सभी अहिंदी भाषी कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

दिनांक 25-9-2012 को श्री दिनेश सिंह, हिंदी प्राध्यापक, भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण संस्थान, गान्तोक द्वारा हिंदी पखवाड़े के समापन अवसर पर निम्नलिखित विजेता प्रतियोगियों को प्रमाण-पत्र व नकद राशि वितरित किए गए ।

आकाशवाणी : अनंतपूर

आकाशवाणी अनंतपूर केन्द्र में हिंदी दिनोत्सव और हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 सितंबर से 4 अक्तूबर 2012 तक आकाशवाणी के प्रांगण में बड़ी उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया ।

4 अक्तूबर, 2012 को सभा की अध्यक्षता श्री के. अरुणप्रभाकर ने किया है । उन्होंने अपने भाषण में यह बताया कि हमारे संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान किए हैं । अपने संदेश में यह बताया कि हिंदी भाषा की महत्ता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है । भारतीय सभी भाषाओं के लिए संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा बहुत उपयोगी है । इसीलिए हिंदी में काम करने से देश की विकास और उन्नति होगी ।

सिंडीकेट बैंक, प्रधान कार्यालय, मणिपाल-576104

हिंदी दिवस समारोह कार्यक्रमों के आयोजन के सिलसिले में दिनांक 24-9-2012 को प्रधान कार्यालय/एस. आई. बी. एम. मणिपाल में कार्यरत कार्यपालकों के लिए हिंदी वाचन/वार्तालाप कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

इस कार्यक्रम में श्री अनिल कुमार अर्गल, महा प्रबंधक (सामान्य प्रशासन), श्री प्रदीप के. सक्सेना, महा प्रबंधक (निरीक्षण) तथा कुल 18 कार्यपालकों ने सहभागिता की। इस कार्यक्रम में व्याख्यान डॉ. श्याम किशोर पाण्डेय, सहायक महा प्रबंधक (राभा) ने दिया। व्याख्यान के दौरान भाषा के विविध पक्षों पर दोनों महा प्रबंधकों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में सहभागिता करते हुए श्री अनिल कुमार अर्गल, महा प्रबंधक (सामान्य प्रशासन) ने कहा कि भाषा को भाषा विज्ञान के आधार पर सिखाने का यह ढंग काफी अच्छा है। अपने उद्‌बोधन में श्री प्रदीप के सक्सेना, महा प्रबंधक (निरीक्षण) ने कहा कि हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी काफी वैज्ञानिक लिपि है। उन्होंने कार्यपालकों को कंप्यूटर के माध्यम से भी हिंदी में कार्य करने की सलाह दी। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी सहभागियों को भारतीय रिज़र्व बैंक द्‌वारा प्रकाशित 'बैंकिंग पारिभाषिक कोश' की एक एक प्रतियाँ प्रदान की गईं।

केनरा बैंक, राजभाषा अनुभाग, मानव संसाधन विभाग, प्रधान कार्यालय, 112 जे. सी. रोड, बेंगलूर-560002

प्रधान कार्यालय, बेंगलूर में दिनांक 1-9-2012 को अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री एस रामन के कर-कमलों से हिंदी पखवाड़ा का उद्‌घाटन किया गया। श्री एस. रामन ने दीपक रूपी हिंदी की अलख जगाई व घंटी बजाकर इसकी गूंज को चारों ओर फैलाने का संदेश दिया तथा राजभाषा हिंदी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जाहिर करते हुए हिंदी में हस्ताक्षर कर हिंदी पखवाड़े का उद्‌घाटन किया। 1 सितंबर से 14 सितंबर तक अलग-अलग विभागों के महाप्रबंधक व कर्मचारियों ने दीप प्रज्जवलित किया तथा हिंदी में हस्ताक्षर कर राजभाषा के प्रति प्रतिबद्धता जाहिर की।

प्रधान कार्यालय, बेंगलूर में दिनांक 17-9-2012 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया। श्री एस. रामन, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में बैंक के कर्मचारियों को हिंदी में अधिकाधिक काम करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित किया। बैंक द्वारा हिंदी दिवस समारोह में कर्नाटक मूल के हिंदी और कन्नड के सुप्रसिद्ध साहित्यकार का सम्मान किया जाता है। इस बार समारोह के दौरान श्री एम. के. गुरुराज राव का सम्मान किया गया।

'ख' क्षेत्र

भारत सरकार, इलेक्ट्रानिकी परीक्षण तथा विकास केन्द्र, बी-108, औद्योगिक क्षेत्र, फेज-8, मोहाली

भारत सरकार, इलेक्ट्रानिकी परीक्षण तथा विकास केन्द्र, मोहाली द्‌वारा हिंदी समारोह 2012 का आयोजन किया गया जिसमें हिंदी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड फोंट के माध्यम से टंकण, हिंदी शब्दज्ञान तथा हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया एवं इस वर्ष कुल 58 प्रतिभागियों को निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति सुश्री रविंदं साही के द्‌वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

निदेशक महोदया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि पिछले वर्ष कार्यालय की गुणवत्ता पुस्तिका एवं कार्यालय पद्धतियों का हिंदी अनुवाद उपलब्ध करवाया गया है तथा कम्प्यूटर में हिंदी में यूनिकोड माध्यम से टंकण प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। हिंदी टिप्पण व पत्राचार में काफी प्रगति हुई है। हमें अभी आगे और बढ़ना है। उन्होंने सभी से कम्प्यूटर में यूनिकोड फोंट के माध्यम से हिंदी में अपना दैनिक कार्य करने पर बल दिया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड-422101

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में दिनांक 14 सितंबर 12 से 28 सितंबर 2012 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इसमें सभी अनुभागों के कामगारों, कर्मचारियों और अधिकारियों ने भाग लिया। पखवाड़े के आरंभ में दिनांक 14 सितंबर, 2012 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक महाप्रबंधक की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें महाप्रबंधक ने उपस्थित सदस्य अधिकारियों को समुचित मार्गदर्शन करते हुए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने का आह्‌वान किया। पखवाड़े के दौरान माननीय गृह मंत्री, वित्त मंत्री जी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एस पी एम सी आई एल, महाप्रबंधक के संदेश सभी अधिकारियों एवं कामगारों की जानकारी के लिए परिचालित किए गए। मुद्रणालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उत्साहजनक वातावरण रहा और अधिकांश कर्मचारी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित हुए।

राष्ट्रीय व्यावसायिक स्वास्थ्य संस्थान, पो. बा. 2031, मेधाणी नगर, अहमदाबाद-380016

संस्थान में हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 6 सितंबर 2012 को अपराह्न 2.30 से 3.30 बजे तक हिंदी श्रुत लेखन प्रतियोगिता, दिनांक 7 सितंबर 2012 को सुबह 11.00 से 12.00 बजे तक हिंदी क्विज प्रतियोगिता तथा अपरान्ह 2.30 से 3.30 बजे तक हिंदी शब्द निर्माण प्रतियेगिता, दिनांक 10 सितंबर 2012 को सुबह 11.00 से 12.00 बजे तक "हिंदी निबंध प्रतियोगिता" व "हिंदी मौलिक कविता प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के हिंदी और हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । तत्पश्चात् दिनांक 14 सितंबर 2012 को 2.45 बजे "भाषा प्रयोग - नई सोच की आवश्यकता" नामक विषय पर एक रोचक व्याख्यान का आयोजन किया गया ।

आकाशवाणी : नागपुर

दिनांक 14 सितंबर 2012 को हिंदी दिवस मनाया गया तथा दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

इस समारोह के अध्यक्ष निदेशक (अभियांत्रिकी) श्री रमेश घरडे ने अपने अभिभाषण में कहा कि, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में किए जाने के निर्देश है । हमारे केन्द्र में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के पूर्णत: प्रयास किए जा रहे हैं तथा सभी अधिकारी एवं कर्मचारी मिसिलों पर हिंदी में लिख रहे हैं । शासकीय कार्य करते समय अंग्रेजी शब्दों के हिंदी पर्याय नहीं मालूम होने पर देवनागरी में वही शब्द लिखकर आगे बढ़ें यह रुकावट नहीं बल्कि भाषा का लचीलापन है कि सभी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करते हुए राजभाषा में कार्य करना आसान है बस हमें अपनी मानसिकता में परिवर्तन करने की आवश्यकता है ।

आकाशवाणी : राजकोट

आकाशवाणी राजकोट में दिनांक 14-9-12 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास से बनाया गया । पखवाड़े के दौरान विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-9-2012 को प्रात: 11.00 बजे हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में विशेष समारोह रखा गया एवं हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन भी इसी समय किया गया ।

दिनांक 28-9-12 को 15:30 बजे हिंदी पखवाड़ा-2012 का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह रखा गया था । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री एन. आर. सोनी, IRS आयकर आयुक्त, राजकोट कार्यालय अध्यक्ष डॉ. यज्ञेश दवे ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है तथा संस्कृत इसकी जननी है । यह संविधान द्वारा मान्य राजभाषा है तथा हमें अपने सरकारी काम में इसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए । यह हमारा नैतिक एवं संवैधानिक कर्तव्य भी है । इसलिए हमें ज्यादा से ज्यादा अपना कार्यालयीन काम हिंदी में करना चाहिए ।

आकाशवाणी : अहमदाबाद

आकाशवाणी, अहमदाबाद एवं विज्ञापन प्रसारण सेवा में 14 सितंबर को 'हिंदी दिवस' एवं उसी दिन से 'हिंदी पखवाड़ा' 'राजभाषा पर्व' के रूप में मनाया गया । श्रीमती मीनाक्षी सिंघवी उपनिदेशक (अभि.) ने अपने अध्यक्षीय संभाषण देते हुए बताया कि हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और अपने आप में एक समर्थ भाषा है, प्रकृति से यह उदार, ग्रहणशील, सहिष्णु और भारत की राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है । मुख्य अतिथि डॉ. चंद्रकांत महेता ने हिंदी के महत्व को समझाते हुए बताया कि हिंदी को मुख्य भाषा के रूप में स्थान दिया गया है । उसकी सहायता के लिए अंग्रेजी को रखा गया है, लेकिन अंग्रेजी उसका स्थान लेकर आगे निकल गई है, जो सर्वथा अनुचित है । हमें हिंदी को उसका स्थान दिलाना होगा । श्री एम. ल. व्यास, कार्यक्रम प्रमुख ने अपने संभाषण में कहा कि हिंदी एक सरल और सहज भाषा है जो सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित करने की उदारता रखती है । श्री एम. एम. शेख, उपनिदेशक (अभि.) ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हिंदी सरल भाषा है । सबको हिंदी में कार्य करना चाहिए ।

आकाशवाणी : अहमदनगर

14 फरवरी से 28 फरवरी 2012 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करके कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु

प्रेरित किया गया। हिंदी पखवाड़ा समारोह में कर्मचारियों को नकद पुरस्कार राशि व प्रमाणपत्र प्रदान करके गौरवान्वित किया गया। समापन समारोह के आरंभ में कार्यक्रम अधिकारी श्री लक्ष्मण देशपांडे ने अपने प्रास्तविक भाषण में आकाशवाणी अहमदनगर केंद्र की हिंदी गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

'क' क्षेत्र

कार्यालय पूर्व रेलवे, महाप्रबंधक (राजभाषा) हाजीपुर

पूर्व मध्य रेल, मुख्यालय/हाजीपुर में दि. 14-9-12 से 27-9-12 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़ा के दौरान राजभाषा से संबंधित अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। जैसे-विचार गोष्ठी, हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण आलेखन, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, हिंदी कार्यशाला, राजभाषा क्विज (कर्मचारियों एवं अधिकारियों के लिए), यूनिकोड आधारित हिंदी कंप्यूटर कार्यशाला, राजभाषा अधिकारियों व राजभाषा अधीक्षकों की विशेष बैठक, क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक, कवि गोष्ठी, राजभाषा प्रदर्शनी, नाटक, गीत-संगीत एवं पुरस्कार वितरण पखवाड़ा के दौरान विभिन्न अवसरों पर आयोजित कार्यक्रमों में मुख्यालय के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

मुख्यालय के अलावा अधीनस्थ पाँचों मंडलों-सोनपुर, समस्तीपुर, दानापुर, धनबाद एवं मुगलसराय तथा यांत्रिक कारखाना/समस्तीपुर और पी डी/मुगलसराय में भी राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कोयला खान भविष्य निधि, आयुक्त कार्यालय पुलिस लाइन, हीरापुर, धनबाद-826014

मुख्यालय, धनबाद में राजभाषा पखवाड़े का आयोजन दिनांक 4-9-2012 से 19-9-2012 तक किया गया। पखवाड़े का उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष अधोहस्ताक्षरी (संयुक्त आयुक्त) एवं उपस्थित अन्य अधिकारियों यथा क्षेत्रीय आयुक्त श्री एस. के. सिन्हा, सहायक आयुक्त. 1/प्रशा. श्री जयंत चौधरी, सहायक आयुक्त-1 श्री बिनोद सुंडी एवं सहायक निदेशक (हिंदी) श्री चंद्र कांत वर्मा के द्वारा ''दीप प्रज्ज्वलन'' के साथ हुआ। माँ सरस्वती की तस्वीर का माल्यार्पण एवं सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। उद्घाटन संबोधन में संयुक्त आयुक्त तथा उपस्थित अन्य अधिकारियों ने कार्यालयीन कार्य में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को संवैधानिक दायित्व बताते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से हिंदी में कार्य करने का आह्वान किया। इस अवसर पर कर्मचारियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

राजभाषा पखवाड़े के दौरान संगठन के कार्यालयीन कार्य में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

कर्मचारियों को पुरस्कार एवं प्रशस्ति प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया। इसके अलावा आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले कुल 31 प्रतिभागियों को भी प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रशस्ति प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया।

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय खान नियंत्रक कार्यालय, 318/बी, रोड नं. 3, अशोक नगर, रांची-2

रांची क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 14-9-2012 से दिनांक 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन श्री आर. पुरोहित, क्षेत्रीय खान नियंत्रक के दिशानिर्देश में किया गया। दिनांक 14-9-2012 को हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन हिंदी दिवस समारोह से शुरू हुआ। क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री आर. पुरोहित ने अपने उद्घाटन भाषण में कार्यालीन कार्य सरल हिंदी भाषा में करने का सुझाव दिए ताकि कार्य करने में परेशानी न हो। उन्होंने बताया कि हिंदी स्वयं सरलता तथा सहजता के बल पर सार्वभौम स्वीकार की ओर तीव्रता से अग्रसर है। उन्होंने कार्मिकों से राजभाषा हिंदी की अनदेखी न करने तथा अधिक कार्य हिंदी माध्यम से करने एवं अपने कार्यों से हिंदी को गौरवशाली बनाने की अपील की। समारोह में हिंदी माध्यम से कार्य में आने वाली कठिनाइयों तथा उसे दूर करने बाबत विषय पर विचार-विमर्श किया गया।

पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिनमें हिंदी निबंध, वाद-विवाद, श्रुतलेख, टिप्पण-प्रारूपण, कविता पाठ आदि प्रमुख हैं। क्षेत्रीय खान नियंत्रक के दिशा-निर्देशन में सभी प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों के सफल संचालन हेतु अलग-अलग संचालक बनाए गए।

दि. 28-9-12 को अपराह्न 4.00 बजे समापन/ पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय श्री आर. पुरोहित ने की । पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों के बीच पुरस्कार वितरण क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री आर. पुरोहित एवं उप खान नियंत्रक श्री ए. नंदी एवं ए. के. सिन्हा, हिंदी संपर्क अधिकारी के द्वारा किया गया । जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए ।

भारत मौसम विज्ञान विभाग, महानिदेशक का कार्यालय लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

यह समारोह 21 सितम्बर 2012 को मुख्यालय के दृष्टि सभागार में आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता मौसम विज्ञान के महानिदेशक डा. लक्ष्मण सिंह राठौड ने की । समारोह में सर्वप्रथम वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने अध्यक्ष महोदय तथा सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं सभागार में उपस्थित सभी कार्मिकों का स्वागत किया । इसके उपरांत अध्यक्ष महोदय डॉ. एल. आर. मीणा, वैज्ञानिक 'एफ' (आई.एस.एस.डी.), श्री ए. के. शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' (उपग्रह मौसम) और डॉ. ओ. पी. सिंह, वैज्ञानिक 'एफ' (प्रा. मौ. केंद्र, नई दिल्ली) द्वारा संयुक्त रुप से दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का शुभारम्भ किया गया ।

समारोह के आरंभ में बाल कलाकारों ने सरस्वती वंदना पर मनोहर नृत्य प्रस्तुत किया । सरस्वती वंदना के उपरांत श्री ए. के. शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' (उपग्रह मौसम अनुभाग) ने स्वागत भाषण दिया जिसमे विभाग में हिंदी की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया गया । हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री पी. चिदंबरम द्वारा भेजे गए संदेश को वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने सभागार में पढ़कर सुनाया और हिंदी दिवस की शुभकामनाएँ दी । इसके बाद विभागीय हिंदी पत्रिका 'मौसम-मंजूषा' और अखिल भारतीय विभागीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कृत निबंधो का पुस्तक के रूप में संकलन 'निबंध सागर' पुस्तक का विमोचन किया गया । हिंदी पखवाड़ा 2012 के दौरान आयोजित स्वरचित हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं श्री सत्यनारायण ठाकुर, सहायक मौसम विज्ञानी मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली श्रीमती अंजना मिन्हास, वैज्ञानिक सहायक प्रादेशिक मौसम केंद्र नई दिल्ली और श्री अशोक कुमार, वैज्ञानिक सहायक मौविउमनि (उवाउ) नई दिल्ली ने क्रमशः अपनी-अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं ।

तदुपरांत वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने श्रीमती सरिता जोशी, वरिष्ठ अनुवादक, श्रीमती एम. अनुराधा, वरिष्ठ अनुवादक और श्री बीरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ अनुवादक सांस्कृतिक कार्यक्रम में देशभक्ति गीत, भजन, नाटक (मुंशी प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर का नाटय रूपांतरण), हास्य व्यंग्य झलकी आदि प्रस्तुत किए गए । सांस्कृतिक कार्यक्रम के इस रंगारंग कार्यक्रम का अंत अनेकता में एकता को दर्शाते हुए गीत 'प्यार बांटते चलो' का सभी कलाकारों द्वारा सामूहिक मंचन के साथ किया गया ।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरांत वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने सूचित किया कि वर्ष 2011-2012 में हिंदी में सबसे अधिक पत्राचार मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक प्रादेशिक मौसम केंद्र नई दिल्ली ने किया है । अध्यक्ष महोदय द्वारा मौसम विज्ञान के उपमहानिदेशक प्रादेशिक मौसम केंद्र, नई दिल्ली को राजभाषा चलशील्ड प्रदान की गई । हिंदी पखवाड़ा 2012 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के विजेजाओं को नकद पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किए गए । अखिल भारतीय विभागीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रमाण पत्र दिए गए । सांस्कृतिक कार्यक्रम के कलाकारों को पुरस्कार प्रदान किए गए और अंत में प्रतियोगिताओं के मूल्यांकनकर्त्ताओं को स्मृति चिह्न भेंट किए गए ।

अध्यक्ष महोदय डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी पखवाड़ा/हिंदी दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य सरकारी कार्य में हिंदी को बढ़ावा देना है । यद्यपि हमारे विभाग में वैज्ञानिक और तकनीकी तरह का कार्य अधिक होता है लेकिन प्रतिदिन के कार्यालय के कार्य में हम सभी अधिकतर विचार विमर्श हिंदी में ही करते हैं । हमारे विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को फाइलों पर हिंदी में लिखने का प्रयास करना चाहिए । अध्यक्ष महोदय ने विभाग के सभी कार्मिकों को कार्यालय

का कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करने की सलाह दी तथा राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और अधिक प्रयास करने का अनुरोध किया एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना अमूल्य योगदान देने पर भी जोर दिया ।

अंत में वरिष्ठ हिंदी अधिकारी सुश्री रेवा शर्मा ने सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए समारोह के समापन की घोषणा की ।

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय, बिहार सर्किल, पटना

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल का कार्यालय, बिहार सर्किल, पटना में 14-9-2012 को हिंदी दिवस तथा उसी दिन से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा-2012 का उद्घाटन विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर डॉ. तरूण कुमार, पटना कॉलेज ने पारंपरिक ढंग से दीप प्रज्जवलित करके किया । इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार के संदेश का पाठ किया गया । विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर कुमार ने अपने संबोधन में हिंदी दिवस एवं हिंदी को राजभाषा के रूप में गौरव प्राप्त करने से संबंधित इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सभी को हिंदी में कार्य करने का आह्वान किया । इस अवसर पर श्री अनिल कुमार, निदेशक डाक सेवा (व्यवसाय विकास, प्रौद्योगिकी एवं विपणन) ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से कंप्यूटरों पर सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में आसानी से किया जा सकता है । उन्होंने कहा कि चाहे बच्चों के सीखने की क्षमता हो या बड़ों के गुणात्मक समझ की बात हो वह मातृभाषा में हमेशा बेहतर होती है । उन्होंने कहा कि हमें इस अवसर पर संकल्प लेना चाहिए कि हम कम से कम तीन चार काम ऐसे उठाएं जो हिंदी के विकास में सहायक हों । श्री एम. अब्दाली, निदेशक डाक सेवा (मुख्यालय) ने भी इस अवसर पर सरकारी कामकाज हिंदी में करने की अनिवार्यता पर प्रकाश डालते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने हेतु प्रेरित किया । कर्मचारियों और अधिकारियों में हिंदी के प्रति रुचि एवं जागरूकता बढ़ाने तथा अपना सरकारी कार्य हिंदी में करने की मानसिकता और वातावरण तैयार करने के लिए हिंदी पखवाड़ा-2012 के दौरान हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पणी/प्रारूप लेखन एवं तकनीकी शब्दावली, हिंदी क्विज, हिंदी अंतयाक्षरी, हिंदी वाद-विवाद आदि प्रतियोगिताएं आयोजित ही गई । इसके अलावा इय वर्ष इस कार्यालय के एम. टी. एस कर्मचारियों के लिए हिंदी में सुलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई । उक्त प्रतियोगिताओं में इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।

कर्मचारी चयन आयोग, कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग, ब्लाक 12 सी.जी.ओ. कंप्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली

आयोग (मुख्यालय) में दिनांक 14 सितम्बर, 2012 से 28 सितम्बर, 2012 के दौरान हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया ।

दिनांक 18 सितंबर, 2012 को हिंदी टंकण प्रतियोगिता एवं हिंदी आशुलिपि प्रतियोगिता, 19 सितंबर, 2012 को अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए अलग-अलग हिंदी निबंध प्रतियोगिता, 20 सितंबर, 2012 हिंदी टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता (गैर- हिंदी भाषियों और हिंदी भाषियों के लिए अलग-अलग प्रतियोगिता) 24 सितंबर, 2012 को कनिष्ठ स्टाफ के लिए श्रुतलेखन प्रतियोगिता, 25 सितंबर, 2012 को हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता तथा दिनांक 26 सितंबर 2012 को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं दिनांक 21 सितंबर, 2012 को "हिंदी टिप्पण एवं आलेखन" विषय पर एक हिंदी कार्यशाला भी आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में आयोग के कर्मचारियों और अधिकारियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य समारोह दिनांक 28 सितम्बर, 2012 को कर्मचारी चयन आयोग (मुख्यालय) के चतुर्थ तल पर-स्थित सम्मेलन कक्ष में अपराह्न 4.00 बजे आयोजित किया गया । इस अवसर पर आयोग (मुख्यालय) के सभी उच्च अधिकारी भी मौजूद थे । हिंदी पखवाड़े के सभी विजेताओं को पुरस्कार कर्मचारी चयन आयोग के अध्यक्ष श्री. एन. के. रधुपति के कर कमलों से दिए गए ।

एम एस एस ई विकास संस्थान ई-17,18 उद्योग नगर नैनी, इलाहाबाद-211009

हिंदी दिवस/सप्ताह का उद्घाटन समारोह दिनांक 14-9-2012 को प्रातः 11.30 बजे आयोजित किया गया । दिनांक 14-9-2012 को हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया ।

श्री शेष मणि शुक्ल, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने राजभाषा अधिनियम, 1963 और उसके अधीन बनाए गए राजभाषा नियम, 1976 के प्रावधानों तथा वार्षिक कार्यक्रम 2012-13 में निर्धारित किए गए लक्ष्यों पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। उन्होंने सप्ताह के दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों के विषय में भी जानकारी प्रदान की । इस अवसर पर संस्थान के निदेशक महोदय ने प्रधानमंत्री कार्यालय से प्राप्त संदेश का तथा नामित राजभाषा अधिकारी ने विकास आयुक्त (सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम) के संदेश का वाचन किया। इसी क्रम में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किए । अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में निदेशक महोदय ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे सप्ताह के दौरान अपना समस्त सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में ही निष्पादित करें । अंत में वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और इसी के साथ उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ ।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, राजीव गांधी चौक के पास शीतला मंदिर रोड, पोस्ट बॉक्स सं. 11 भंडारा 44194 (महाराष्ट्र)

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति भंडारा के तत्वधान में दिनांक 25-9-2012 को केन्द्रीय रेशम बोर्ड की भंडारा स्थित विभिन्न इकाइयों द्वारा हिंदी पखवाडे को आयोजन किया गया । हिंदी दिवस दिनांक 14-9-2012 के अवसर पर माननीय कपड़ा राज्य मन्त्रीजी, माननीया कपड़ा सचिव एवं माननीया सदस्य सचिव केन्द्रीय रेशम बोर्ड से प्राप्त संदेशों को सभी कर्मचारियों को पढ़कर सुनाया गया।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, भंडारा के प्रभारी डॉ. ए.के. बंसल, वैज्ञानिक-सी ने कहा कि, भाषा का कोई मजहब नहीं होता है, न ही कोई प्रान्त होता है । यह एक ऐसा भाव है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना विचार प्रेम, अपना कष्ट ही नहीं अपितु अपना आक्रोश भी दूसरे तक पहुंचाता है। यद्यपि मूक बधिर भी संकेतों के माध्यम से अपने विचारों का सप्रेक्षण कर पाते हैं परन्तु जो गर्मजोशी किसी भाषा द्वारा भावों को व्यक्त करने में आती है उसमें संकेत पीछे रह जाते हैं । इतिहास के झरोखे में हिंदी बहुत दूर तक नहीं जा पाती है, परन्तु इसकी सरलता ने तथा दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपने में आत्मसात करने की प्रवृत्ति ने, इसे लोकप्रिय भाषा होने का दर्जा दिया है और अब यह विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, हेहल, राँची

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, हेहल, राँची में हिंदी दिवस सह पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक किया गया । दिनांक 14-9- 2012 को हिंदी दिवस सह पखवाड़े का उद्घाटन किया गया तथा साथ ही हिंदी दिवस भी मनाया गया । पखवाड़े के दौरान दिनांक 22-9-2012 को हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रतियोगता का आयोजन किया गया ।

समापन समारोह दिनांक 28-9-2012 को किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. राम कुमार, वैज्ञानिक-सी, अनुसंधान प्रसार केन्द्र, गुमला ने हिंदी के विकास के लिए उठाए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने राजभाषा नियम/अधिनियम एवं धारा की भी जानकारी दी । उन्होंने अनुसंधान/तकनीकी एवं हिंदी में प्रकाशित पुस्तक रेशमवाणी, रेशमभारती में तकनीकी विषयों पर लेख हिंदी में होने पर बल दिए एवं अन्य कार्यों में भी अधिक से अधिक लक्ष्य प्राप्ति का आह्वान किया ।

क्षेत्रीय कार्यालय केंद्रीय रेशम बोर्ड 342-347, ए-विंग (द्वितीय तल) अगस्त क्रांति भवन भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली-110066

कार्यालय में हिंदी सप्ताह दिनांक 14-9-2012 से 20-9-2012 तक आयोजन करने हेतु किया गया । हिंदी सप्ताह के दौरान चार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया इन प्रतियोगिता, हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता, श्रुत लेख प्रतियोगिता और वाद-विवाद प्रतियोगिता शामिल थे ।

डॉ. बीरा शरतचंद्र, निदेशक (तक.) मुख्यालय बेंगलूर जो कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे उन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय, केरेबो नई दिल्ली के संबंध में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी साथ ही साथ भविष्य में भी राजभाषा कार्यान्वयन को मुस्तैदी से लागू करने की आशा व्यक्त की । श्री तिर्की ने क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के दौरान सरल भाषा तथा शब्दों के इस्तेमाल पर जोर दिया । इस अवसर पर सदस्य संयोजक के रूप में श्री शिव गोविंद, सहायक निदेशक (नि.) ने अपनी सहभागिता दी ।

भारत संचार निगम लिमिटेड

कार्यालय मुख्य महाप्रबंधक बीएसएनएल हरियाणा परिमण्डल, 107-महात्मा गाँधी अम्बाला छावनी-133001

श्री जी. के. उपाध्याय, मुख्य महाप्रबधंक दूरसंचार हरियाणा के संरक्षण एवं श्री अरुण कुमार, वरि. महाप्रबंधक (एच.आर.)एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति के नेतृत्व में दिनांक 14 सितम्बर 2012 से 28 सितम्बर 2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । 'हिंदी दिवस' पर मुख्य महाप्रबन्धक महोदय ने सभी से हिंदी को आंकड़ों के बंधन से मुक्त करके व्यावहारिक रूप से अपनाने के लिए प्रेरित किया ।

श्री जी.के. उपाध्याय ने आश्चर्य व्यक्त किया कि हिंदी हमारी स्वाभाविक भाषा है फिर इसे 'हिंदी पखवाड़े' तक ही क्यों सीमित रखा जा रहा है । इस अवसर पर हरियाणा दूरसंचार परिमण्डल की गृह पत्रिका संवाद के राजभाषा विशेषांक' का विमोचन किया गया।

कार्यालय में मूलरूप से हिंदी के पत्र व टिप्पण आलेखन का अभ्यास बढ़ाने के उद्देश्य से मूल हिंदी टिप्पण आलेखन एवं कम्प्यूटर पर हिंदी टाईप का अभ्यास करवाने के लिए 5 दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रदत्त राजभाषा शील्ड अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए प्रदर्शित की गई और कई प्रतियोगिताएं हिंदी पुस्तकालय में आयोजित की गई ताकि हिंदी पुस्तकों के प्रति भी कर्मचारियों की रूचि बढ़ सके। हिंदी पखवाड़े का पुरस्कार वितरण समारोह बीएसएनएल दिवस 1 अक्तूबर, 2012 को आयोजित किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे विजेताओं को मुख्य महाप्रबन्धक श्री जी.के. उपाध्याय एवं प्रधान महाप्रबन्धक (वित्त) श्री मोहिन्दर सिंह, द्वारा उचित पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान श्रोतागण के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

सी एस आई आर भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के डॉ. लवराज स्मृति प्रेक्षागृह में विभिन्न प्रतियोगिताओं व अन्य व आयोजनों से परिपूर्ण 'हिंदी माह'-2012 का समापन प्रसिद्ध समालोचक प्रो रतन कुमार पांडेय, मुबई के मुख्य अतिथित्व में आयोजित एक भव्य सामरोह के साथ हुआ ।

प्रो. पांडये ने प्रवाहपूर्ण विचारों को अभिव्यक्ति देते हुए कहा कि हमें हिंदी पर शोक करने की आवश्यकता नहीं है । हम एक स्वतंत्र व संप्रभु लोकतंत्र के रूप 64 वर्ष राजभाषा के साथ बिता चुके हैं । यह दुःख की बात है कि हम हिंदी को कुछ विशेष दिनों तक ही समिति रखते हैं । तुर्की द्वारा अपने स्वतंत्र होने के बाद अपनी भाषा को अपनाए जाने का उदाहरण देते हुए प्रो. पांडेय ने हिंदी की राजभाषा के रूप में संवैधानिक स्थिति और इस संबंध में दक्षिण भारत में हिंदी विरोधी आंदोलन की चर्चा करते हुए आश्चर्य-मिश्रित दुख प्रकट किया कि अपनी क्षेत्रीय भाषा अर्थात तमिल को बचाए जाने की अपेक्षा वहां गुलाम बनाने वाली विदेशी भाषा अर्थात अंग्रजी को ही बचाने का आंदोलन हुआ । इस स्थिति में अंग्रेजी आज राजरानी बनी है तो हिंदी नौकरानी हिंदी अंग्रेजी की 'स्टेपनी' बनी है । यह समझा ही नहीं गया कि हमारे देश के नायकों ने विभिन्न भाषा-भाषी क्षेत्रों के होते के होते हुए भी हिंदी का ही संपर्क भाषा, राजभाषा या राजभाषा के रूप में चयन किया था, तो आखिर क्यों? मुख्य अतिथि ने कहा कि उदारीकरण का सूत्रपात होने के बाद देश में आए विदेशी टी वी चैनलों ने भी प्रारंभिक वर्षों के तुरंत बाद यहां की आवश्यकता समझते हुए यह जान लिया था कि भारत में हिंदी ही चल सकते है जिस अंग्रेजी को हम भारतीय अपना सिरमौर समझते हैं, वही अंग्रेजी इंग्लैंड में भी 100 वर्षों के संघर्ष के बाद ही राजभाषा का दर्जा पा सकी थी । हिंदी को भी समय लग सकता है, पर

वह आएगी अवश्य। प्रो. पांडये ने राजभाषा की महत्ता पर और भी अधिक प्रकाश डालते हुए कहा कि अपने काल में संस्कृत के होते हुए भी बुद्ध व महावीर ने अपनी बात जन-जन तक पहुंचाने के लिए पाली और प्राकृत का प्रयोग किया जो जनता की भाषाएं थी। उनके ग्रंथ इसी भाषा में लिखे गए। गोस्वामी तुलसीदास ने संस्कृत का विद्वान होते हुए भी 'रामचरित्रमानस' को जनता की भाषा में लिखा और वही 500 वर्षों बाद भी उसकी लोकप्रियता का आधार है। प्रो. पांडेय ने संस्थान के वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि अंग्रेजी की अपेक्षा अपनी भाषा को अपनाते हुए वैज्ञानिक जो साहित्य देंगे, वह जनता का बड़ा हित करने वाला है, यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि भाषा मात्र संवाद की नहीं, संस्कृति की भी संवाहक होती है, जिसमें हृदय, आस्था, श्रद्धा आध्यात्मिक व दार्शनिक चिंतन जुड़े होते हैं। चूंकि समय बदलने के साथ भाषा बदल रही हैं, उसके प्रश्न भी बदल रहें हैं, तो उसके उत्तर भी बदलने होंगे।

समारोह का संचालन करते हुए मुख्य अतिथि का परिचय डॉ दिनेश चमोला, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी ने कहा कि हिंदी माह श्राद्ध के प्रतीक न होकर श्रद्धा का प्रतीक है, संकल्पों का प्रतीक है। प्रत्येक नया माह में विगत के शेष महत्वपूर्ण कार्यों के संपन्न करने के संकल्पों का माह है लोक भाषा की विरासत की धनी हिंदी में ज्ञान-विज्ञान को अभिव्यक्ति देकर हमें राष्ट्रीय महत्व के इस कार्य को स्वाभिमान पूर्वक संपन्न कर अपनी व्यापक व राष्ट्रीय सोच का परिचय देना चाहिए।

मुख्य अतिथि ने हिंदी माह के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया।

हिन्दुस्तान इन्सैक्टिसाइड्स लिमिटेड प्रधान कार्यालय स्कोप कंप्लेक्स कोट-6 लोधी रोड, नई दिल्ली -110003

कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2012 से 28 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़े का उद्घाटन दिनांक 14 सितम्बर, 2012 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय के कर-कमलों से किया गया। इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने एक अपील भी जारी की, जिसमें उन्होंने इस कार्यालय में हिंदी का कार्य करने के लिए सभी उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करते हुए सहज तथा सरल भाषा में अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए कहा। इस अवसर पर निदेशक(विपणन) महोदय द्वारा माननीय गृह मंत्री जी का संदेश पढ़कर सुनाया गया। इस पखवाड़े के उद्घाटन के अवसर पर दिल्ली विश्वद्यिालय के वरिष्ठ रीडर डा. पूरणचन्द टण्डन को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने राजभाषा नीति का संक्षिप्त ब्यौरा देते हुए कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने पर बल दिया तथा उन्होंने कहा कि सरकार की नीति है कि हिंदी को सद्भावना, प्रेरणा तथा प्रोत्साहन से लागू किया जाए। इसके साथ-साथ इन्होंने बताया कि जिस तरह से हम अन्य सरकारी नियमों का पालन करते हैं, उसी प्रकार से राजभाषा हिंदी से संबंधित सभी नियमों/अधिनियमों का पालन करना भी सुनिश्चत करना चाहिए।

हिंदी अकादमी दिल्ली के उपाध्यक्ष डॉ. विमलेश कान्ति वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में पखवाड़े के दौरान आयोजित किए गए कार्यक्रमों तथा कंपनी में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की स्थिति जानकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा उन्होंने राजभाषा अधिनियम, 1963, नियम 1976 की जानकारी देने के साथ-साथ विपणन के क्षेत्र में हिंदी की उपयोगिता तथा विदेशों में हिंदी की स्थिति के बारे में जानकारी दी इसके पश्चात् हिंदी पखवाड़े के दौरान सफलता प्राप्त तथा पूरे वर्ष हिंदी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन करने वाले सभी कार्मिकों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मुख्या अतिथि, निदेशक (विपणन), निदेशक (वित्त) महोदय के कर-कमलों से वस्तु रूप में पुरस्कार/प्रोत्साहन वितरित किए गए।

इसके पश्चात् अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय का संभाषण हुआ। महोदय ने अपने संभाषण में सभी कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने लिए प्रेरित करने के लिए कहा कि कार्यायल के सभी कम्प्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा उपलब्ध हैं, सभी फार्म तथा मानक मसौदे द्विभाषा में उपलब्ध हैं, इनका प्रयोग करके अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करके राजभाषा से संबंधित/अधिनियमों/लक्ष्यों को पूर्णत: प्राप्त करें, यह हमारा नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व है। अध्यक्ष महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त सभी कार्मिकों को बधाई दी।

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय-1 दसवां तल, हंसालय बिल्डिंग 15, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली-110001

प्रधान कार्यालय द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुरूप क्षेत्रीय कार्यालय-1, नई दिल्ली में दिनांक 14-9-2012 से 29-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इसी अनुक्रम में दिनांक 14-9-2012 को क्षेत्रीय कार्यालय में एक आम सभा बुलाई गई, जिसमें कार्यालय के प्रभारी, उप-महाप्रबंधक श्री राजन ने राजभाषा हिंदी के प्रयोग के संबंध में सभी कार्मिकों को पखवाड़ा अवधि के दौरान और वर्ष के शेष सभी दिनों में कार्यालय का अधिक-से-अधिक काम करने लिए कहा। उन्होंने हिंदी की विश्वस्तरीय उपस्थिति का जिक्र करते हुए हिंदी को एक दूसरे के साथ जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी कहा ।

इस सभा में राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री आर.एस.खींची ने कहा कि जिस तरह से बोलचाल में हम हिंदी का प्रयोग करते हैं उसी तरह सरल व सहज हिंदी में लिखकर हम अपने कार्यालय का कार्य करें। इसके साथ-साथ उन्होंने सभी कार्मिकों को हिंदी पखवाड़े के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय के राजभाषा कक्ष द्वारा आयोजित की जाने वाली प्रयोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने का आह्वान किया। सभी को श्री नीलेशमाथुर एवं श्री वी.के.गर्ग क्षेत्रीय प्रबंधकों ने भी संबोधित किया ।

इस अवसर पर हिंदी के प्रति कार्मिकों में जागरूकता तथा उसके निरन्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने अत्यन्त मनोयोग से अपनी सहभगिता दर्ज़ की। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई हिंदी प्रयोगिताओं के प्रतिभागियों को कार्यालय परिसर में आयोजित किए गए हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। पखवाड़ा अवधि के दौरान कार्मिकों ने विभिन्न कार्यालयी कार्यों में हिंदी का अधिक-से-अधिक प्रयोग किया ।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़े के दौरान सम्पन्न हुई राजभाषा संबंधी गतिविधियों को मूर्त रूप देने के लिए यशवर्द्धन, राजभाषा अधिकारी की सक्रिय भूमिका रही ।

दूरदर्शन केंद्र, मुजफ्फरपुर

केन्द्र में दिनांक 14-9-2012 से 28-9-2012 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया । केंद्राध्यक्ष श्री आर. एम. मिश्र ने हिंदी दिवस की बधाई देते हुए कहा कि हिंदी में काम करना हम सबका कर्त्तव्य है । जिस तरह से कार्मिकों ने इस पखवाड़े के दौरान उत्साह दिखाया है वो पूरे साल दिखाना चाहिए ।

आकाशवाणी, पटना

14-9-2012 से 28-9-2012 तक की अवधि को हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया गया। पखवाड़ा का शुभारंभ "संघ की राजभाषा नीति एवं हिंदी के प्रयोग में आने वाली कठिनाइयों का निराकरण" विषय पर आयोजित हिंदी कार्यशाला से हुआ इस कार्यशाला में 20 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया । कार्यशाला के व्याख्याता थे हिंदी के पूर्व प्राध्यापक डॉ. शशि शेखर तिवारी । इस अवसर पर उपमहानिदेशक (अभियांत्रिकी) श्री एस.के. सिन्हा ने हिंदी कार्यशाला की उपयोगिता पर प्रकाश डाला सहायक निदेशक (राजभाषा) डॉ. जगदीश लाल ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कार्यालयीन कामकाज को हिंदी में करने में आ रही दिक्कतों एवं परेशानियों को दूर करना तथा झिझक मिटाना है ।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान राजभाषा हिंदी में कार्य करने की मानसिकता और वातावरण तैयार करने के उद्देश्य से कतिपय प्रतिस्पर्धात्मक प्रतियोगिताएं यथा हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, चित्र आकलन लेखन प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध प्रतियोगिता (मल्टी टास्कफोर्स कर्मचारियों हेतु), हिंदी प्रश्न-मंच,तथा आशु. भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया

हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन के क्रम में 28 सितंबर, 2012 को कार्यालय के क्लब भवन

में हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया ।

आकाशवाणी, बीकानेर

आकाशवाणी बीकानेर केन्द्र पर 14 सितम्बर, 2012(हिंदी दिवस) से 28 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़ा 2012 बड़े ही उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया । इस अवधि में राजभाषापरक अनेक गतिविधियों का आयोजन कर केन्द्र के माहौल को संपूर्ण हिंदीमय बनाने का प्रयास किया गया ।

हिंदी पखवाड़े के अंतिम दिवस (28 सितम्बर) पर आयोजित समापन मे हिंदी कार्यशाला तथा पुरस्कार वितरण आयोजित किया गया । हिंदी कार्यशाला श्री दिनेश चन्द्र ने कहा कि हमें भाषा की गुलामी से मुक्त होना है तो हिंदी को जन-जन की भाषा बनाना होगा वैश्विक हिंदी पर चर्चा करते हुए राजकीय डूंगर महाविद्यालय के हिंदी विभाग की वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. शालिनी मूलचंदानी ने कहा कि भूमण्डलीकरण ने हिंदी को वैशिक बना दिया है । वैश्वीकरण के कारण हिंदी में आई अशुद्धियों को बदलना हमारा प्रथम दायित्व होना चाहिए । चूंकि हिंदी हमारे सपनों की भाषा है इसलिए हिंदी में शब्दों का टोटा नहीं है ।

आकाशवाणी, इंदौर

14 सितम्बर, 2012 को हिंदी दिवस समारोह एवं 14 से 28 सितम्बर, 2012 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन केन्द्राध्यक्ष के मार्गनिर्देशन में किया गया । केन्द्राध्यक्ष श्री सुधीर सोधिया ने कहा कि राजभाषा हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है और कार्यालयीन कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार में आकाशवाणी के योगदान की चर्चा की और कहा कि आज न केवल देश के उत्तरी राज्यों में, बल्कि पूर्वोत्तर के राज्यों में भी आकाशवाणी के माध्यम से हिंदी गीतों और समाचारों को सुनकर जन-साधारण में हिंदी के प्रति लगाव है, जोकि अत्यंत गर्व की बात है । इसीलिए हिंदीभाषी राज्यों में हमें हिंदी को पूर्ण रूप से अपनाना चाहिए । केन्द्र में हिंदी में हो रहे अत्यधिक (लगभग 97 प्रतिशत) पत्राचार के बारे में आपने अधिकारियों और कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे आज के दिन शत-प्रतिशत कामकाज हिंदी में करने सम्बन्धी लक्ष्य प्राप्ति का संकल्प लें । उन्होंने यह भी कहा कि जब हमारे सामने द्विभाषी प्रपत्र उपलब्ध हो तो हमें उसे भरने में हिंदी को प्राथमिकता देना चाहिए ।

बैंक आफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, नई दिल्ली अंचल, जीवन भारती, लेवल-5, टावर-1, 124 कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001

अंचल में 'हिंदी माह' का आयोजन किया। पूरे माह के दौरान आंचलिक कार्यालय एवं अंचल की समस्त शाखाओं में बैनर प्रदर्शित किए गए । हिंदी माह' के शुभारम्भ के दौरान दिनांक 18-8-2012 को दिल्ली स्थित शाखाओं के सहायक महाप्रबंधकों/मुख्य प्रबंधकों हेतु राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का विषय था : सूचना का अधिकार। कार्यक्रम में श्री प्रदीप कुमार शर्मा, अवर सचिव, संसदीय राजभाषा समिति मुख्य अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित थे । उन्होंने भारत सरकार की अपेक्षाओं एवं नावोन्मेषी योजनाओं से अवगत कराते हुए राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रेरित किया । इस कार्यक्रम में श्री वी. आनन्द, सहायक महाप्रबंधक (विधि) ने सूचना के अधिकार विषय पर विस्तार से जानकारी दी । कार्यक्रम/संगोष्ठी के उपरांत स्टाफ सदस्यों के बीच "हिंदी पत्र लेखन एवं टिप्पण प्रयोगिता" का आयोजन भी किया गया ।

राजभाषा पखवाड़े से हम चले,
मास, वर्ष से होते हुए,
राजभाषा जीवन की मंजिल तक चलें ।

संगोष्ठी/सम्मेलन

मध्य तथा पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन संपन्न

दिनांक : 1 फरवरी, 2013

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा अहमदाबाद में आयोजित मध्य तथा पश्चिम क्षेत्र का एक दिवसीय राजभाषा संयुक्त सम्मेलन आज संपन्न हुआ । इस सम्मेलन में 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में कार्यरत सभी केन्द्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के प्रमुख, राजभाषा से जुड़े विभिन्न प्राधिकारी सहभागी हुए ।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के संयुक्त सचिव श्री डी. के. पाण्डेय ने की । सम्मेलन के मुख्य अतिथि इन्डियन इन्स्टीटयूट ऑफ टिचर्स एज्युकेशन, गांधीनगर के कुलपति डॉ. कमलेश जोशीपुरा थे । विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक के क्षेत्रीय निदेशक श्री सुदर्शन सेन उपस्थित थे । विशिष्ट अतिथि श्री सेन ने अपने वक्तव्य में हिंदी के बारे में कहा कि "यह भाषा देश भर के लोगों को जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है ।" कुलपति डॉ. कमलेश जोशीपुरा ने अपने संबोधन में कहा कि "देश के कुछ क्षेत्रों में हिंदी का इतिहास में जो विरोध हुआ था वह आज लगभग समाप्त हो गया है और सामाजिक व्यवहार में उसके आज अच्छे परिणाम दिख रहे है ।" डॉ. जोशीपुरा ने राज्य सरकारों के विभिन्न आस्थापनाओं में भी हिंदी का प्रयोग होने चाहिए, ऐसी आशा व्यक्त की ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री डी. के पाण्डेय ने अध्यक्षीय समापन में कर्मचारियों के लिए हिंदी कंप्यूटर प्रोग्राम तथा प्रशिक्षण के महत्त्व को विशद किया ।

कार्यक्रम का प्रास्ताविक तथा उपलब्धियों के बारे मे राजभाषा विभाग के पश्चिम क्षेत्र के उपनिदेशक डॉ. विनोद कुमार शर्मा तथा मध्य क्षेत्र के सहायक निदेशक सुश्री साधना त्रिपाठी ने जानकारी दी । इस उद्‌घाटन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथियों के कर कमलों द्वारा 'भाषा स्पंदन' सम्मेलन स्मारिका का विमोचन भी किया गया । साथ ही 'बैंक नराकास अहमदाबाद की वेबसाईट का शुभारंभ किया गया । इस अवसर पर मंच पर अहमदाबाद के मुख्य आयकर आयुक्त श्री दिलीप शिवपुरी, देना बैंक के अध्यक्ष एवं महाप्रबंधक श्री सुरेश एन. पटेल, नराकास (बैंक) भोपाल के श्री उमेश सिंग तथा एन. आय. ओ. एच. अहमदाबाद के प्रमुख श्री. पी. के. नाग उपस्थित थे ।

इस सम्मेलन में मध्य तथा पश्चिम क्षेत्र के वर्ष 2011-12 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्रमुख अतिथियों के द्वारा प्रदान किए गए । उनमें मध्य क्षेत्र से कार्यालय ग्रुप से सोयाबीन अनुसंधान निदेशालय, इंदौर (प्रथम), केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, आयुक्तालय, जयपुर (द्वितीय), केन्द्रीय विद्युत अनुसंधान संस्थान, भोपाल (तृतीय) । सरकारी उपक्रम से भारतीय जीवन बीमा निगम, कार्यालय भोपाल (प्रथम), भारतीय जीवन बीमा निगम, मण्डल कार्यालय, उदयपुर (द्वितीय), भारतीय कपास निगम लिमिटेड, भीलवाड़ा (तृतीय) बैंक ग्रुप से बैंक ऑफ बडौदा, क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर (प्रथम), सेन्ट्रल बैंक ऑफ इन्डिया, आंचलिक कार्यालय, भोपाल (द्वितीय), पंजाब नैशनल बैंक, मंडल कार्यालय, भोपाल (तृतीय), नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से जयपुर (बैंक) (प्रथम), भोपाल (बैंक) (द्वितीय), रायपुर (बैंक) (तृतीय),

पश्चिम क्षेत्र के 'ख' क्षेत्र से कार्यालय ग्रुप से फ्रंटियर, मुख्यालय सीमा सुरक्षा बल, गांधीनगर (प्रथम), केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण, पश्चिम क्षेत्रीय विद्युत समिति, मुंबई (द्वितीय), अनुसंधान तथा विकास स्थापन (इंजी), पुणे (तृतीय), उपक्रम से भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय, औरंगाबाद (प्रथम), पावर ग्रिड कोर्पोरेशन ऑफ इन्डिया लिमिटेड, पश्चिम क्षेत्र मुख्यालय, नागपुर (द्वितीय), भारत संचार निगम लिमिटेड, मुबंई (तृतीय), बैंक से बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, (महाराष्ट्र एवं गोवा), पुणे (प्रथम), यूनियन बैंक ऑफ इन्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद (द्वितीय), बैंक ऑफ बड़ौदा, गुजरात अंचल

अहमदाबाद (तृतीय), नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से बड़ौदा (बैंक) संयोजक : बैंक ऑफ बड़ौदा, (प्रथम),मुंबई (बैंक) संयोजक : बैंक ऑफ महाराष्ट्र (द्वितीय), अहमदाबाद (बैंक), संयोजक : देना बैंक (तृतीय),

'ग' क्षेत्र से कार्यालय ग्रुप से आकाशवाणी, पणजी गोवा (प्रथम), कर्मचारी राज्य बीमा निगम, पणजी गोवा (द्वितीय), उपक्रम से भारतीय जीवन बीमा निगम लिमिटेड, मण्डल कार्यालय, गोवा (प्रथम), भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा (द्वितीय), बैंक से यूनियन बैंक ऑफ इन्डिया, क्षेत्रीय कार्यालय, पणजी गोवा (प्रथम), सिंडिकेट बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा (द्वितीय), भारतीय स्टेट बैंक, प्रशासनिक कार्यालय, पणजी गोवा (तृतीय), नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से उत्तर गोवा (का.) (प्रथम), दक्षिण गोवा (का.) (द्वितीय), मंडगांव (का.) (तृतीय) इन सभी का समावेश है । सम्मेलन के दूसरे सत्र में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया गया । सम्मेलन में अहमदाबाद दूरदर्शन के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम उपस्थित प्रतिनिधियों का मन मोह लिया ।

कार्यक्रम का सूत्र संचालन डॉ. नरेश मोहन ने किया और कार्यक्रम का समापन तथा आभार प्रदर्शन मुख्य अधिकारी (राजभाषा) श्री राजीव वार्ष्णेय ने किया ।

इस सम्मेलन में महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा, मध्य प्रदेश, राज्यस्थान, छत्तीससगढ़, राज्यों तथा संघशासित क्षेत्र दमण, दीव और दादर व नगर हवेली में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के प्रतिनिधियों ने सहभाग लिया है ।

दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक : 22 फरवरी, 2013 को बेंगलूर में केंद्रीय गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जालहल्ली के कुवेंपु कला क्षेत्र प्रेक्षागृह; बीईएल में शुक्रवार को दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम राज्यों के लिए राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद राजभाषा विभाग के सचिव अरूण कुमार जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता भी की। अपने अभिभाषण में उन्होंने कहा कि भाषा की सरलता से उसकी लोकप्रियता को बढ़ाना भी सरल हो जाता है। उन्होंने कहा, 'सरल हिंदी के प्रयोग से उसकी लोकप्रियता को और बढ़ाया जा सकता हैं। उन्होंने पत्र पत्रिकाओं में भी सरल हिंदी के प्रयोग पर जोर दिया । उन्होंने कहा कि हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने के लिए विभाग द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, साथ ही विभाग द्वारा वर्ष-भर में इस प्रकार चार सम्मेलनों का आयोजन कर हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित भी किया जाता है। इससे उन्हें प्रोत्साहन मिलता है और वे दूसरों के लिए भी प्रेरणा के स्त्रोत बनते हैं। उन्होंने कहा , विभाग द्वारा हिंदी की प्रगति के लिए सही दिशा में कार्य किया जा रहा है, जो सराहनीय है।' उन्होंने सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की जरूरत पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'देश के प्रत्येक नागरिक को सरकारी कार्यालय में किसी न किसी कार्य हेतु जाने की जरूरत होती है, ऐसे में यदि वहां हिंदी का ज्यादातर प्रयोग किया जाए तो यह उसकी प्रगति में काफी सहायक होगा।' उन्होंने अच्छे लेखकों को जनता एवं विभाग, दोनों की ओर से समान प्रोत्साहन देने की जरूरत बताई ।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक देशवासियों को एकसूत्र में पिरोने के लिए एक समान भाषा होना बेहद जरूरी है और हिंदी से बेहतर कोई भाषा नहीं हो सकती । क्षेत्रीय भाषाओं को भी बढ़ावा दें, लेकिन संपर्क भाषा एक ही रहनी चाहिए इस संदर्भ में हिंदी लंबे अर्से से अहम भूमिका निभाती आ रही है ।

अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि विभिन्न क्षेत्रों के सरकारी उपक्रमों में लगातार हिंदी का प्रयोग बढ़ता जा रहा । लेकिन कार्यान्वयन में सरलता नहीं बरती जा रही है। यह जरूरी है कि कार्य संपादन में गूढ़ हिंदी के स्थान पर बोलचाल की हिंदी का ही प्रयोग किया जाए । इसका समाधान करने के लिए सरकारी उपक्रमों में प्रशिक्षण दिया जाए । निरन्तर प्रयोग के माध्यम से ही वे सरल हिंदी शब्दकोष की तरफ बढ़ेंगे ।

बेंगलूरू के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के अध्यक्ष मलय चटर्जी ने कहा कि हिंदी एक

ऐसी भाषा बन चुकी है, जिसमें उर्दू, फारसी और अरबी के भी कई शब्दों का समावेश हो गया है । आज दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों की तादाद बढ़ती जा रही है । यही कारण है कि हिंदी विश्व पटल पर महत्वपूर्ण बन गई है । अपना व्यापार बढ़ाने के लिए कई चीनी व्यवसायी भी हिंदी बोल रहे हैं।

अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के बाद दक्षिण क्षेत्र के राजभाषा विभाग के निदेशक हरिन्द्र कुमार द्वारा स्वागत भाषण दिया गया । इसके बाद अपने संबोधन में दक्षिण क्षेत्र के राजभाषा विभाग के उपनिदेशक अजय कुमार श्रीवास्तव ने विभाग द्वारा हिंदी की प्रगति के लिए किए जा रहे हैं । कार्यों की सराहना की । उन्होंने कहा सभी कार्यालयों में राजभाषा से ही संचार की आवश्यकता है तथा कार्यालयों में राजभाषा की स्थिति को समझने के लिए समय-समय पर उचित निरीक्षण भी अनिवार्य है । इसके बाद दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के राजभाषा विभाग के सहायक निदेशक विजय कुमार ने भी अपने भाषण में बाकी देशों की तरह भारत में भी राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर जोर दिया । उन्होंने बताया कि आज विश्व में किसी भी भाषा के मुकाबले हिंदी जानने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है ।

कार्यक्रम में दक्षिण एवं दक्षिण क्षेत्र के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वालों के लिए पुरस्कार वितरित किए गए । दक्षिण क्षेत्र के कार्यालयों में हैदराबाद का केंद्रीय बारानी कृषि अनुसंधान संस्थान प्रथम स्थान पर रहा, जबकि बैंकों में बेंगलूर के सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय कार्यालय ने एवं उपक्रमों में बेंगलूर के ही पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया ने बाजी मारी । दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के कार्यालयों में तिरूवनंतपुरम का कर्मचारी भविष्य निधि संगठन का क्षेत्रीय कार्यालय अव्वल रहा, जबकि बैंकों में एरनाकुलम के यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय कार्यालय ने एवं उपक्रमों में कोट्टायम के भारत संचार निगम लिमिटेड के प्रधान महाप्रबंधक दूरसंचार के कार्यालय ने प्रथम स्थान हासिल किया । दक्षिण क्षेत्र के अंतर्गत नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति में बेंगलूरू (उपक्रम) जबकि दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में कोचीन (बैंक) प्रथम स्थान पर रहा । कार्यक्रम में तकनीक एवं प्रौद्योगिकी द्वारा राजभाषा के प्रयोग से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां भी दी गई । कार्यक्रम के अंत में उडुपी से आए कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसमें 'यक्षगान' की प्रस्तुति ने दर्शकों की काफी तालियां बटोरी ।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तत्वावधान में बेंगलौर में पहला राजभाषा सम्मेलन

स्वस्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2012-13 के दौरान सरकारी कार्य में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखा है । इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए, मंत्रालय ने अपने नियंत्रणाधीन सभी कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग के लिए अनुकूल माहौल निर्माण के उद्देश्य से वर्तमान वर्ष से राजभाषा सम्मेलन आयोजित करने की एक नई पहल शुरू की है । ऐसे सम्मेलनों का प्रयोजन मंत्रालय की देखरेख में इसके अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कामकाज को सही दिशा में आगे ले जाने के अलावा, राजभाषा नीति और नीति से जुड़े तमाम महत्वपूर्ण मद्दों की जानकारी प्रदान करना है । यह जानकारी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण और कार्यशाला में गहन अभ्यास के जरिए प्रदान की जाएगी ।

राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान-निम्हांस, बैंगलूर में दिनांक 26 दिसम्बर, 2012 को इस योजना का शुभारंभ किया गया । 26-27 दिसम्बर को इस दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन में तमिल के मूर्धन्य हिंदी विद्वान और साहित्यकार श्री नागेश्वर सुंदरम, जो मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी हैं, मुख्य अतिथि थे । निम्हांस के कार्यकारी निदेशक एवं न्यूरो एनेस्थेसिया विभाग के प्रमुख प्रो. जी. एस. महेश्वरराव ने कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की । कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (राजभाषा), स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने किया ।

सम्मेलन में मंत्रालय के अधीन विभिन्न कार्यालयों से पधारे प्रतिनिधियों समेत 100 से अधिक प्रतिभागियों ने पूरी तन्मयता और मनोयोग से भाग लिया । सम्मेलन के पहले दिन तीन सत्रों के दौरान विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया गया । श्री राम निवास शुक्ल, उप-निदेशक (राजभाषा)

ने 'राजभाषा के प्रयोग में समस्याएं और समाधान' विषय पर अपने सारगर्भित और विद्वतापूर्ण विचार व्यक्त किए । श्री शुक्ल ने राजभाषा नीति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और भाषा के सौंदर्य की व्याख्या की जबकि दूसरे सत्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार में दक्षिण भारत के विद्वानों का योगदान तथा उनके प्रयोग को गति देने के लिए सुझाव' विषय पर दक्षिण भारत के हिंदी विद्वान श्री एन. सुंदरम ने अपने अनुभवों को प्रतिभागियों के सामने रखा । उन्होंने अनुवाद संबंधी समस्याओं का भी विस्तार से उल्लेख किया । तीसरे और अंतिम सत्र में श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने 'हिंदी का मानक स्वरूप एवं वर्तनी' संबंधी विषय पर प्रोजेक्टर और पावर पॉइंट स्लाइडों के माध्यम से अपने विषय को प्रतिभागियों के सामने रखा । विषय इतना रोचक और ज्ञानवर्धक था कि समस्त प्रतिभागियों ने प्रश्नोत्तर के माध्यम से इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।

सम्मेलन के दूसरे दिन श्री मनोज आबूसरिया उप-निदेशक (राजभाषा) और श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा दो सत्रों में कम्प्यूटर पर यूनिकोड के माध्यम से अंग्रेजी के की-बोर्ड पर ऑफ-लाइन तथा ऑन-लाइन हिंदी टाइपिंग का गहन प्रशिक्षण दिया गया तथा प्रशिक्षार्थियों से उसका अभ्यास करवाया गया । इस सत्र के दौरान बताया गया कि कैसे हिंदी टाइपिंग न जानने वाले अधिकारी/कर्मचारी भी अंग्रेजी की बोर्ड के माध्यम से हिंदी टाइपिंग कर सकते हैं और इसे सीखने के लिए आधा घंटे से ज्यादा समय की जरूरत नहीं होती । यह बात साबित भी हो गई जब प्रतिभागियों ने स्वयं मंच पर आकर हिंदी टाइपिंग की ।

राजभाषा सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता निम्हांस के निदेशक-सह कुलपति प्रोफेसर पी. सतीशचंद्र ने की । इस अवसर पर सम्मेलन के आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान देने एवं कई सत्रों में विद्वतापूर्ण व्याख्यान देने तथा प्रतिभागियों को प्रशिक्षण देने के लिए मंत्रालय से पधारे श्री राम निवास शुक्ल, उप-निदेशक (राजभाषा), श्री मनोज आबूसरिया उप-निदेशक (राजभाषा) और श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (राजभाषा) को स्मृति चिह्न और शॉल भेंट करके सम्मानित किया । उन्होंने प्रतिभागियों को भी प्रमाणपत्र प्रदान किए । इस मौके पर अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि ऐसा सम्मेलन निम्हांस के इतिहास में पहली बार आयोजित हुआ है । दोनों ही दिन प्रतिभागियों का इतनी बड़ी संख्या में इसमें शामिल होना इस सम्मेलन की सफलता का प्रमाण है ।

सम्मेलन में सभी कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन का जायजा लेने के लिए मंत्रालय की ओर से किए गए निरीक्षणों के आधार पर अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान, मैसूर में अनुवादक के रूप में कार्यरत डॉ. एच.पी. उमा सरस्वती को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट एवं असाधारण योगदान के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

एन एम डी सी लिमिटेड, खनिज भवन, कैसल हिल्स भोपाल

अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार

एनएमडीसी में राजभाषा हिंदी का प्रयोग कार्यालयीन कार्यों के साथ-साथ तकनीकी क्षेत्रों में भी बढ़े, इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर दि. 26-9-2012 को प्रातः 9.30 बजे '' खनन उद्योग और नई खनन नीति'' ''समय प्रगति के लिए आधारभूत संरचना अर्थात् विद्युत, परिवहन, संयंत्र , संचार, सिविल, स्वास्थ्य, खनन, कल्याण सुविधाओं आदि के संदर्भ में विकास'' विषयों पर ''अखिल भारतीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार'' का आयोजन किया गया, जिसमें भारत के विभिन्न उपक्रमों यथा आईबीएम, नागपुर मेकॉन, रांची भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता तथा भारत सरकार टकसाल, हैदराबाद तथा एनएमडीसी लिमिटेड की सभी परियोजनाओं के अधिकारी सम्मिलित होकर पावर पाइंट प्रजेंटेशन'' के माध्यम से अपने आलेख प्रस्तुत किए और उन पर चर्चा-परिचर्या हुई । वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती डी. लावण्य लवली ने अपनी प्रस्तावना के दौरान कहा कि तकनीकी विषयों में भी राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस तरह के सेमिनारों का आयोजन किया जाता है । उन्होंने इस संबंध में आगे बोलते हुए यह शेयर प्रस्तुत किया ''मंजिल उसी को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है । पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है ।'' एनएम डीसी के हिंदी अधिकारीगण का सपना है कर्मठता के साथ कार्य करते हुए एनएमडीसी के लिए कुछ कर दिखाने का । श्री रवीन्द्र सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि इस सेमिनार के लिए कुल 38 आलेख प्राप्त हुए, जिनमें से चयन समिति द्वारा 23 आलेखों का चयन किया गया । एनएमडीसी हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में अनवरत प्रयास कर रही है । उन्होंने सभी

आलेखदाताओं को बधाई दी । तत्पश्चात् निदेशक (उत्पादन) श्री सुबिमल बोस ने भी उपस्थितों को संबोधित किया । उसके पश्चात् कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री एन.के नन्दा ने कहा कि हर देश की एक भाषा होनी चाहिए । इस तरह के सेमिनारों के आयोजन के पश्चात इनके निष्कर्षों पर कारगर कदम उठाने होंगे । एनएमडीसी द्वारा अब तक 51 सेमिनारों का आयोजन किया गया है । इनमें से प्रमुख आलेखों का एक संकलन बनाया जा सकता है । तकनीकी विषयों पर आलेख लिखने से हिंदी के प्रति जो झिझक है, वह दूर हो जाती है और तकनीकी शब्दों से परिचित होने में सहायता मिलती है ।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक (म.प्र.)

मानवीकी तथा समाज विज्ञान के शैक्षिक विषयों में तकनीकी शब्दावली अनुप्रयोग एवं चुनौतियां

हिंदी विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक अनूपपुर (म.प्र.) एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) भारत सरकार, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 27-28 सितंबर 2012 को "मानविकी/समाज विज्ञान के शैक्षिक विषयों में तकनीकी शब्दावली अनुप्रयोग एवं चुनौतियां' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन विश्वविद्यालय के सभागार में किया गया ।

संगोष्ठी में इस विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति माननीय प्रो. चन्द्रदेव सिंह ने अपने आतिथ्य उद्बोधन में कहा कि इस तरह के आयोजन निश्चित रूप से हिंदी भाषा को मजबूती, समृद्धता एवं एकरूपता प्रदान करेंगे । श्री सिंह ने आयोग से जनजातीय भाषा के विकासपूर्ण निश्चित योजना पर कार्य आरंभ करने का अनुरोध किया । विश्वविद्यालय ने देश के भाषाविद् तथा जनजातीय समाज के विकासर्थ प्रतिबद्ध सेवी संगठनों की उच्चस्तरीय बैठक में प्राप्त सुझावों पर कार्य करते हुए विश्वविद्यालय में जनजातीय भाषा के साफ्टवेयर (गोण्डी, बैगा एवं कोल भाषा) पर अतिशीघ्र कार्य प्रारंभ करने के लक्ष्य से भी अवगत कराया ।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के डीन प्रो. व्योमकोश त्रिपाठी ने की । सत्र के दौरान मानविकी तथा मानव विज्ञान विषय में तकनीकी शब्दावली पर प्राध्यापकों ने अपने विचार व्यक्त किए । श्री त्रिपाठी ने आतिथ्य उद्बोधन में कहा कि यह संगोष्ठी निश्चित रूप से तकनीकी शब्दावली पर उपयोगी और सामयिक रहेगी ।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. हौसिला प्रसाद ने की एवं सहायक प्राध्यापकों ने भूगोल, मनोविज्ञान, संग्रहालय विज्ञान की तकनीकी शब्दावली पर सुझाव दिए । प्रो. हौसिला प्रसाद ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इस अंचल में अनेक शब्द हैं जिन्हें भूगोल के तकनीकी शब्दावली में शामिल करने की आवश्यकता है । दूसरे सत्र के अगले चरण में विश्वविद्यालय के डीन प्रो. तीर्थेश्वर सिंह की अध्यक्षता एवं डॉ. रंजू हासिनी साहू, तथा डॉ. सुनीता खत्री मध्य प्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति एवं हिंदी भवन पत्रिका "अक्षरा" सहा संपादक की विशेषज्ञता में वक्ताओं ने विधि, पर्यावरण, मानविकी, दर्शनशास्त्र की तकनीकी शब्दावली पर अपनी बात रखी ।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. केसरी लाल वर्मा, भाषा विज्ञान अध्ययन शाला, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.) ने की । कार्यक्रम के विशेषज्ञ श्री गौरी शंकर रैना एवं डॉ. सुधीर शर्मा थे । मानविकी, समाज शास्त्र, शिक्षा, भूगोल, वाणिज्य, प्रबंधन, पत्रकारिता, जनजातीय कला के तकनीकी शब्दावली पर प्राध्यापकों ने अपने विचार प्रस्तुत किए । केसरी लाल, वर्मा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में माना कि आयोग दूरगामी क्षेत्रों में पहुंच कर अपनी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी का सफल निर्वाह कर रहा है । समापन सत्र श्री केसरी लाल वर्मा के आतिथ्य एवं श्री उमाकांत, खुबालकर, सहायक निदेश, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग नई-दिल्ली की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । इस प्रकार तकनीकी शब्दावली आयोग नई-दिल्ली के सहयोग से विविध विषयों की तकनीकी शब्दों पर सारगर्भित संगोष्ठी सफल रही ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, हरिद्वार रोड, मोहकमपुर देहरादून

13वां राजभाषा हिंदी विशिष्ट व्याख्यान

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में आयोजित किए जाने वाले हिंदी कार्यक्रमों की चर्चा करते हुए प्रो. दुर्गा

प्रसाद गुप्त, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली ने संस्थान में हिंदी के प्रति विद्यमान प्रेम की सराहना की । प्रो. गुप्त ने अन्य भाषाओं की तुलना में हिंदी की अपेक्षया कम उम्र के होते हुए भी इसकी श्रेष्ठ उपलब्धियों की बात कही । इसके बावजूद हम पर औपनिवेशिक अतीत की छाया होने के कारण हिंदी की वर्तमान शोचनीय स्थिति है । 60 करोड़ से अधिक लोगों की इस भाषा के अनेक रूप हैं । यह भाषा भारत की भाषिक और सांस्कृतिक विविधता की प्रतीक है । हिंदी किसी एक विशेष राज्य अथवा जाति की भाषा नहीं है । अपने उदार चरित्र के कारण हिंदी विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य एवं भारतीय भाषाओं के साहित्य की अभिव्यक्ति बनी है । किंतु राजनीति के कारण हिंदी जैसी भाषा का विरोध होता है । भाषा संस्कृति की वाहक है और इसे विस्मृत करने के कारण संस्कृति के विभिन्न वाहक जैसे नृत्य, रंगमंच आदि हिंदी प्रदेश से लुप्त हो रहे हैं । हम दूसरों की भाषा, संस्कृति, खान-पान, पहनावे को अपने देश की भाषा आदि से श्रेष्ठतर मानते हैं । प्रो. गुप्त ने आश्चर्य प्रकट किसा कि भारत को छोड़कर विश्व में अन्य कहीं भी प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा से इतर भाषाओं में नहीं दी जाती । कठिन शब्दावली का आरोप हिंदी पर ही लगता है, अंग्रेजी पर नहीं । प्रो.गुप्त ने सरकारी व अन्य संस्थानों द्वारा किए जाने वाले भाषायी प्रयत्नों की आलोचना एवं रचनात्मक सहयोग के अभाव को एक विडंबना बताया । यद्यपि अनुवाद की चुनौतियां तो रहेंगी ही । हम बहुत-सारी गुलामियों में जी रहे हैं, जिनका प्रारंभ भाषा से होता है । हमें अपनी भाषा में ज्ञान-विज्ञान लिखना व सीखना चाहिए तथा सृजनात्मकता को अपनाना चाहिए, नहीं तो एक राष्ट्र के रूप में हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाएगा । अपने व्याख्यान के अंत में हिंदी के रोजगार की भाषा बनने संबंधी एक प्रश्न के उत्तर में प्रो. गुप्त ने हिंदी को षड्यंत्र से मुक्त करते हुए उसका अधिकार दिए जाने की आवश्यकता पर बल दिया ।

इससे पूर्व डा. दिनेश चमोला, प्रभारी राजभाषा अनुभाग ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया और कहा कि हिंदी बाजार, एकता व अखंडता की भाषा है । अन्य सभी भाषाएं भी ज्ञान की सरिताएं हैं । पर अपनी भाषा का सम्मान आवश्यक है । मीडिया भी सफलता के लिए हिंदी का माध्यम अपना रहा है । हिंदी में विज्ञान भी मूल रूप से लिखा जाना चाहिए । हमारे वैज्ञानिक अनुसंधानों व विकसित प्रौद्योगिकियों का महत्व तभी है जब उससे जन सामान्य लाभान्वित हों । इसके लिए बहुत आवश्यक है कि हम विशेष रूप से हिंदी में तथा सामान्यत: भारतीय भाषाओं में अपनी अभिव्यक्ति को स्वर दें ।

मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्री विजय कुमार कौशिक, प्रशासन नियंत्रक ने आशा व्यक्त की कि इस व्याख्यान से संस्थान में एक नई चेतना का उदय होगा । अंतत: श्री सुरेन्द्र कुमार, प्रशासन अधिकारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया । ■

यदि हम लोगों ने तन, मन, धन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत स्वाधीन होगा और उसकी राष्ट्रभाषा होगी हिंदी ।

–नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

प्रतियोगिता/पुरस्कार

नराकास चेन्नै

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय)/चेन्नै के तत्वावधान में दि. 15-11-12 को नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । CSIR-SERC Complex के विज्ञान आडिटोरियम में आयोजित इस प्रतियोगिता में सदस्य कार्यालय की पांच टीमों ने नाटकों का मंचन किया । दक्षिण के विख्यात कलाकार श्री उदय भानु एवं बांबे कण्णन इस प्रतियोगिता के निर्णायक रहे ।

दक्षिण रेलवे के मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री एस. के. सूद ने शाम को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह की अध्यक्षता की ।

CSIR-SERC के निदेशका डॉ नागेश आर. अय्यर, समारोह के मुख्य अतिथि रहे । समारोह के दौरान तीन टीम पुरस्कार एवं 8 व्यक्तिगत पुरस्कार वितरित किए गए ।

श्रीमती महेश्वरी रंगनाथन सदस्य-सचिव/नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/दक्षिण रेलवे ने कार्यक्रम का संचालन किया और श्री ए. एल. प्रभाकर, वरिष्ठ ईडीपीएम एवं उप मुख्य राजभाषा अधिकारी/दक्षिण रेलवे ने धन्यवाद ज्ञापन दिया । राष्ट्रगान के साथ समारोह समाप्त हुआ ।

एन.एम.डी.सी. लिमिटेड को नराकास (उपक्रम) का राजभाषा पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), हैदराबाद-सिकंदराबाद की ओर से आज दिनांक 17 अक्तूबर, 2012 को मिधानी की मेजबानी में स्वागत ग्रैण्ड होटल, एलबी नगर, हैदराबाद में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) की 36वीं अर्धवार्षिक बैठक एवं वार्षिक समारोह में एनएमडीसपी लिमिटेड, कार्पोरेट कार्यालय, हैदराबाद ने वर्ष 2011-12 के दौरान राजभाषा के प्रयोग और कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए द्वितीय पुरस्कार स्वरूप राजभाषा शील्ड प्राप्त की ।

इस समारोह के अध्यक्ष भारत डायनामिक्स लिमिटेड के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक श्री एस.एन. मंथा, मेजर जनरल श्री संजीव लुम्बा, निदेशक (कार्मिक), ईसीआईएल, डॉ. दिनेश लेखी, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), मिधानी के कर-कमलों से एनएमडीसी के महाप्रबंधक (उत्पादन एवं समन्वयन) श्री जी.एस.एस. यादव और वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती डी. लावण्य लवली ने उक्त राजभाषा पुरस्कार ग्रहण किया ।

वार्षिक समारोह में अपने वक्तव्य में एनएमडीसी लिमिटेड के महाप्रबंधक (उत्पादन एवं समन्वयन) श्री जी.एस.एस. यादव ने एनएमडीसी में हो रही हिंदी की प्रगति के बारे में उल्लेख करते हुए कहा कि तकनीकी शब्दावली का और विकास किया जाना चाहिए ।

पावर ग्रिड कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया जम्मू पुरस्कृत

केन्द्र सरकार की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन व बढ़ावा देने के कार्य में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए क्षेत्रीय मुख्यालय, जम्मू को निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया :—

(1) 23 मार्च, 2012 को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्रथम पुरस्कार की शील्ड व प्रशस्ति पत्र से पुरस्कृत किया गया । उल्लेखनीय है कि राजभाषा विभाग द्वारा हमें छः वर्षों से पुरस्कारों व प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया जा रहा है ।

(2) 12 अक्तूबर, 2012 को भारतीय राजभाषा विकास संस्थान, देहरादून द्वारा राजभाषा श्री सम्मान एवं राजभाषा शिल्पी सम्मान की शील्डों व प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया ।

(3) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू द्वारा 28 सितम्बर, 2012 को प्रथम पुरस्कार की शील्ड एवं प्रमाण पत्रों द्वारा सम्मानित किया गया ।

(4) दिनांक 18 दिसम्बर, 2012 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू द्वारा पुनः हमें प्रथम पुरस्कार की शील्ड व प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया ।

नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर पुरस्कृत

दिनांक 27 फरवरी, 2013 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर के तत्वावधान में जयपुर स्थित सभी बैंकों का संयुक्त 'वार्षिक राजभाषा समारोह' इंद्रलोक सभागार, जयपुर में वृहद स्तर पर आयोजित किया गया, समारोह की मुख्य अतिथि राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, भोपाल की प्रभारी, डॉ. साधना त्रिपाठी रहीं तथा अध्यक्षता टॉलिक के अध्यक्ष कार्यालय बैंक ऑफ बड़ौदा के अंचल प्रमुख श्री एन के जैन ने की । नाबार्ड, जयपुर के मुख्य महाप्रबंधक, श्री जिजि माम्मेन इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। साथ ही, क्षेत्रीय कार्यालय के महाप्रबंधक, श्री एस एस सिंह तथा राजभाषा का कार्य सँभाल रहे उप महाप्रबंधक, श्री आर ए मिश्रा तथा सहायक महाप्रबंधक, श्री आलोक गीताई भी इस अवसर पर उपस्थित रहे । उक्त समारोह के संयोजन तथा छमाही पत्रिका 'बैंक ज्योति' के संपादन का दायित्व नाबार्ड, जयपुर को सौंपा गया था ।

इस अवसर पर नगर में राजभाषा कार्यान्वयन के कार्य में उत्कृष्ठ योगदान देने हेतु नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर को 'विशेष पुरस्कार' की शील्ड देकर सम्मानित किया गया । नाबार्ड की ओर से यह पुरस्कार श्री आलोक गीताई, सहायक महाप्रबंधक ने प्राप्त किया । इसके अलावा, बैंक नराकास, जयपुर के तत्वावधान में विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित संयुक्त हिंदी प्रतियोगिताओं में विजेता रहे राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय के 07 अधिकारियों को पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनके नाम हैं-अनिल यादव, यू के गोयल, पुनीत नागर, संजीव कुमार, अर्चना सिंह, प्रियंका सैनी, भारती गुजराल, सांस्कृतिक कार्यक्रम में नाबार्ड, जयपुर के 06 अधिकारियों -दीपा गुप्ता, शिल्पी जैन, मंजुला वाधवा, अनिल यादव रविन्द्र मोरे तथा हेमंत लेम्भे ने 'समूह गान' प्रस्तुत किया । वार्षिक समारोह का संचालन नाबार्ड, राजस्थान क्षेत्रीय कार्यालय की प्रबंधक-राजस्थान श्रीमती मंजुला वाधवा तथा बैंक ऑफ महाराष्ट्र, जयपुर की प्रबंधक-राजस्थान, श्रीमती शानो द्विवेदी ने मिलकर किया ।

कोयला खान भविष्य निधि संगठन, मुख्यालय धनबाद

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी प्रोत्साहन योजना से संबंधित अनुदेशों का पालन किया जा रहा है । इसी अनुपालन के क्रम में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्तमान वित्तीय वर्ष 2010-11 में सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में टिप्पण व आलेखन के लिए मुख्यालय के कुल चार कर्मचारियों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया । तथा वित्तीय वर्ष 2011-12 में कुल नौ कर्मचारियों को नकद राशि से पुरस्कृत किया गया । कोयला खान भविष्य निधि संगठन धनबाद की गृह पत्रिका ''कल्याणी'' वार्षिकांक-2011 का प्रकाशन एवं वितरण किया गया । इसकी प्रतियां कोयला मंत्रालय, सी एम पी एफ से संबद्ध क्षेत्रीय कार्यालयों, कोल इंडिया लिमिटेड एवं सीएमपीडीआई के सी.एम.डी., धनबाद स्थित विभिन्न बैंकों, कार्यालयों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सचिव कार्यालयों को भी वितरित किया गया ।

अप्रैल, 2012 में राजभाषा संस्थान, नई दिल्ली द्वारा आयोजित विशेष हिंदी कार्यशाला एवं संगोष्ठी जो कि सोलन, हिमाचल प्रदेश में हुआ । इसमें कोयला खान भविष्य निधि संगठन की ''गृह पत्रिका'' कल्याणी, वार्षिकांक 2010 को हिंदी में छपी उत्कृष्ट ''गृ पत्रिका'' हेतु ''कार्यालय दर्पण'' शील्ड प्रदान किया गया तथा नवम्बर, 2012 में कार्यालय में हिंदी के प्रयोग के लिए उल्लेखनीय योगदान हेतु ''कार्यालय दीप'' शील्ड प्रदान किया गया । इन पुरस्कारों को उक्त कार्यशाला के दौरान श्री चंद्र कांत वर्मा, सहायक निदेशक (हिंदी) ने सोलन हिमाचल प्रदेश में प्राप्त किया साथ ही आलेख प्रस्तुति में श्री चंद्र कांत वर्मा, सहायक निदेशक (हिंदी) को व्यक्तिगत द्वितीय पुरस्कार एवं श्री तपेश्वर कुमार, आशुलिपिक को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

धनबाद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा छमाही बैठक में इस संगठन के हिंदी तिमाही प्रगति प्रतिवेदन की समीक्षा के पश्चात् हिंदी कार्य की प्रगति एवं प्रतिशतता में हो रही निरंतर वृद्धि हेतु अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, धनबाद द्वारा प्रशंसनीय पत्र प्राप्त हुआ ।

कोयला खान भविष्य निधि संगठन की राजभाषा हिंदी प्रगति से संबंधित तिमाही प्रगति प्रतिवेदन के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए वर्ष 2009-10 हेतु इस कार्यालय को धनबाद नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से ''तृतीय पुरस्कार'' के रूप में शील्ड प्राप्त हुआ ।

प्रशिक्षण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली के दिनांक 8 मार्च, 2013 के पत्र सं. 15/2/2013 उ.नि. (परीक्षा)/1404

विषय :- हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा जुलाई, 2013 के लिए आवेदन-पत्रों तथा समय-सारणी के प्रेषण के संबंध में ।

महोदय,

हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के अंतर्गत केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों, निकायों आदि के कर्मचारियों के लिए हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाते हैं । इसके अंतर्गत आयोजित होने वाली हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि परीक्षा जुलाई 2013 के लिए आवेदन-पत्र (परीक्षा फार्म) इस कार्यालय में प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30-03-2013 है ।

2. आवेदन-पत्र क्षेत्रीय उप निदेशक/सर्वकार्यभारी अधिकारी, हिंदी शिक्षण योजना के माध्यम से ही भेजे जाएँ । कृपया अपने क्षेत्र के सभी कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों निकायों आदि को भी अवगत करवाने की व्यवस्था करें ।

3. क्षेत्रीय उप निदेशक/सर्वकार्यभारी अधिकारी, हिंदी शिक्षण योजना का कार्यालय जहाँ पर नहीं हैं, वहाँ आवेदन-पत्र कार्यालय के सक्षम अधिकारी/प्रशासनिक अधिकारी के माध्यम से भेजें । इन आवेदन-पत्रों में 2 या 3 निकटस्थ शहरों के नामों का उल्लेख अवश्य करें, जहाँ से आवेदक परीक्षा में सम्मिलित होना चाहते हैं अन्यथा परीक्षा स्कंध द्वारा आबंटित केंद्रों पर परीक्षा में शामिल होना होगा ।

4. जिन शहरों के कार्यालयों से टंकण/आशुलिपि परीक्षा के लिए कम से कम 10 आवेदन-पत्र, पर्याप्त मशीनों की उपलब्धता (मैनुअल/कंप्यूटर) के साथ प्राप्त होंगे, वहीं परीक्षा केंद्र बनाने पर विचार किया जाएगा । इसलिए मशीनों का उल्लेख करना आवश्यक है । आवेदन-पत्र परीक्षार्थियों द्वारा विधिवत भरे जाएँ । आवेदन-पत्रों के साथ नॉमिनल रोल की दो-दो प्रतियाँ टंकण, आशुलिपि तथा पूरक परीक्षा के लिए अलग-अलग तैयार करके भेजी जाएँ ।

5. उपक्रम/निगम/निकायों आदि के कार्यालय अध्यक्षों से अनुरोध है कि अपने सभी प्रशिक्षार्थियों के लिए एक पाठ्यक्रम हेतु एक समेकित बैंक ड्राफ्ट प्रस्तुत करें और ड्राफ्ट का पूर्ण विवरण प्रशिक्षार्थियों के नाम के सामने नॉमिनल रोल एवं फार्म में अवश्य उल्लेख करें ।

6. जुलाई 2013 की हिंदी टंकण/आशुलिपि परीक्षा, जो परीक्षार्थी मैनुअल या कंप्यूटर पर देंगे, उनके प्रमाण-पत्रों पर भी मैनुअल/कंप्यूटर का उल्लेख किया जाएगा, इसलिए आपसे अनुरोध है कि परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्रों पर भी मैनुअल/कंप्यूटर का लाल स्याही से उल्लेख अवश्य करें तथा उनके आवेदन-पत्र व नॉमिनल रोल भी तदनुसार अलग-अलग तैयार करें ।

7. कृपया इस पर विशेष ध्यान दें कि परीक्षा केंद्र का नाम, केंद्र अधीक्षक का नाम, मशीनों की कुल संख्या दिए गए प्रोफार्मा में भरकर आवेदन-पत्रों तथा प्रेषण पत्र के साथ ही दिनांक 30-03-2013 तक अवश्य भेज दें ताकि परीक्षा केंद्र बनाने में सुविधा हो तथा तदनुसार बैच बनाए जा सकें ।

परीक्षा केंद्र का नाम, पूरा डाक का पता पिन कोड सहित	केंद्र अधीक्षक का पूरा नाम, कार्यालय का पूरा डाक पता फोन नं. सहित	परीक्षार्थियों की संख्या टंकण/ आशुलिपि मैनुअल/कंप्यूटर	मशीनों की संख्या मैनुअल/कंप्यूटर
1	2	3	4

जहां हिंदी शिक्षण योजना के परीक्षा केंद्र हैं, वहाँ 8 कि. मी. से कम दूरी होने पर दूसरा परीक्षा केंद्र नहीं बनाया जाएगा ।

8. परीक्षा संचालन के लिए जहाँ तक संभव हो सके परीक्षा केंद्र अधीक्षक (मुख्य पर्यवेक्षक) हिंदी शिक्षण योजना के बाहर, किसी राजपत्रित अधिकारी को ही बनाया जाए, क्योंकि हिंदी शिक्षण योजना के अधिकारियों, प्राध्यापकों तथा लिपिक वर्गीय स्टॉफ को परीक्षाओं में पर्यवेक्षण कार्य करने का पारिश्रमिक/मानदेय नहीं दिया जाएगा । हिंदी आशुलिपि परीक्षा में योजना के सहायक निदेशक (टंकण/आशुलिपि) को केवल डिक्टेशन देने का कार्य दिया जा सकता है ।

9. हिंदी टंकण परीक्षा जुलाई 2013 में एक प्रश्न-पत्र में अनुत्तीर्ण/अनुपस्थित परीक्षार्थी को केवल जनवरी 2014 की परीक्षा में पूरक परीक्षार्थी के रूप में बैठने की अनुमति होगी । ऐसे परीक्षार्थियों को भी अपना आवेदन-पत्र समय से इस कार्यालय में भिजवाना होगा । आवेदन-पत्र पर अपना जुलाई 2013 का पुराना अनुक्रमांक, सत्र और पूरक जिस प्रश्न-पत्र में परीक्षा देनी है, का लाल स्याही से उल्लेख होना चाहिए अन्यथा आवेदन-पत्र रद्द माना जाएगा । जिन्होंने जनवरी 2013 की परीक्षाओं में मैनुअल टाइपराइटर तथा कंप्यूटर पर टंकण परीक्षा दी थी उन्हें उसी साधन द्वारा ही पूरक परीक्षा भी देनी पड़ेगी । जैसे मैनुअल टाइपराइटर में प्रधान परीक्षा देने वालों को उसी में पूरक परीक्षा भी देनी होगी ।

10. जिन परीक्षार्थियों के पास उनके मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा जारी फोटो परिचय-पत्र नहीं है, उन परीक्षार्थियों को हिंदी टंकण/आशलिपि परीक्षा के प्रवेश पत्रों पर फोटो लगाना अनिवार्य होगा ।

कृपया आवेदन-पत्रों को भेजने से पहले उनकी भली प्रकार जांच अवश्य करें जैसे परीक्षार्थी का नाम, पिता/पति का नाम, कार्यालय का पता, मैनुअल टाइपराइटर व कंप्यूटर पर परीक्षा देंगे आदि का उल्लेख साफ-साफ किया जाए, ताकि परीक्षा परिणाम व प्रमाण-पत्रों में होने वाली त्रुटियों से बचा जा सके ।

जुलाई, 2013 सत्र की हिंदी टंकण एवं आशुलिपि परीक्षा का कार्यक्रम निम्न प्रकार से है :-

हिंदी टाइपराइटर परीक्षा की समय-सारणी तथा पूरक-1

परीक्षा की तारीख	दिन	बैच	समय
11-7-2013	गुरुवार	I	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
11-7-2013	गुरुवार	II	सायं 02.00 से 04.00 बजे तक
12-7-2013	शुक्रवार	III	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक

परीक्षा की तारीख	दिन	बैच	समय
12-7-2013	शुक्रवार	IV	सायं 02.00 से 04.00 बजे तक
15-7-2013	सोमवार	V	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
15-7-2013	सोमवार	VI	सायं 02.00 से 04.00 बजे तक
16-7-2013	मंगलवार	VII	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
16-7-2013	मंगलवार	VIII	साय: 02.00 से 04.00 बजे तक
17-7-2013	बुधवार	IX	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
17-7-2013	बुधवार	X	साय: 02.00 से 04.00 बजे तक

हिंदी आशुलिपि परीक्षा की समय-सारणी

परीक्षा की तारीख	दिन	बैच	समय
18-7-2013	गुरुवार	I	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
18-7-2013	गुरुवार	I	सायं 02.00 से 04.00 बजे तक
19-7-2013	शुक्रवार	II	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
19-7-2013	शुक्रवार	II	सायं: 02.00 से 04.00 बजे तक
22-7-2013	सोमवार	III	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
22-7-2013	सोमवार	III	सायं: 02.00 से 04.00 बजे तक
23-7-2013	मंगलवार	IV	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
23-7-2013	मंगलवार	IV	सायं: 02.00 से 04.00 बजे तक

टंकण (पूरक-II)

परीक्षा की तारीख	दिन	बैच	समय
24-7-2013	बुधवार	XI	प्रात: 10.00 से 12.00 बजे तक
24-7-2013	बुधवार	XII	सायं 11.00 से 11.30 बजे तक

कार्यालय ज्ञापन

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली का दिनांक 28 मार्च, 2013 का
का.ज्ञा 12015/09/2012-रा.भा. (तक.)

विषय : राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट/वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट राजभाषा विभाग को ऑनलाइन प्रेषित करना ।

कृपया राजभाषा विभाग के का.ज्ञा. सं. 11011/9/2011-रा.भा./अनुसंधान, दिनांक 14 नवंबर, 2011 तथा का.ज्ञा. सं. 20003/3/2011-का.ज्ञा.(का-2), दिनांक 27 फरवरी, 2012 का अवलोकन करें जिसके द्वारा भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों आदि को वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट का संशोधित प्रोफार्मा भेजा गया था । पिछले कुछ समय से राजभाषा विभाग द्वारा यह महसूस किया जा रहा था कि डाक से भेजी जाने वाली उक्त रिपोर्टें राजभाषा विभाग को समय से न मिलने के कारण इनकी समीक्षा करके राजभाषा हिंदी नीति के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु आवश्यक कार्रवाई समय पर सुनिश्चित कराना संभव नहीं हो पाता था ।

2. राजभाषा अधिनियम एवं राजभाषा नियम में दिए गए राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी निदेशों का सम्यक अनुपालन करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु उक्त तिमाही प्रगति रिपोर्टें/वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्टें ऑनलाइन मंगवाने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा एक वैब आधारित सॉफ्टवेयर सिस्टम तैयार करवाया गया है । यह राजभाषा विभाग की वैबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर 'सूचना प्रबंधन प्रणाली' लिंक पर उपलब्ध है ।

3. तिमाही प्रगति रिपोर्टें तथा वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्टें ऑनलाइन भेजने के लिए प्रत्येक मंत्रालय, विभाग, संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालय, बैंक, उपक्रम एवं उनके अधीन कार्यालय तथा सांविधिक निकायों को दो प्रयोगकर्त्ता बनाने होंगे, एक राजभाषा अधिकारी/नोडल अधिकारी के लिए तथा दूसरा उस कार्यालय के प्रशासनिक अध्यक्ष (Administration Head) के लिए । प्रयोगकर्त्ता बनाने के लिए राजभाषा विभाग की वैब साइट पर सर्व प्रथम अपना ऑलनाइन पंजीकरण (On line Registration) करना होगा । राजभाषा विभाग में सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर द्वारा पंजीकरण के अनुमोदन के बाद ही रिपोर्टें ऑनलाइन भेजी जा सकेंगी । राजभाषा अधिकारी/नोडल अधिकारी अपना लॉग-इन तथा पासवर्ड भरकर अपने कार्यालय की तिमाही प्रगति रिपोर्ट/वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट भरेंगे । कार्यालय के प्रशासनिक अध्यक्ष (Administration Head) रिपोर्ट में दी गई सूचना को सत्यापित कर राजभाषा विभाग (मुख्यालय) अथवा संबंधित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय को आगे की कार्रवाई हेतु अग्रेषित करेंगे । सॉफ्टवेयर सिस्टम के प्रयोग संबंधी विस्तृत दिशानिर्देश राजभाषा विभाग की वैबसाइट पर उपलब्ध हैं ।

4. भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/बैंको/उपक्रमों/संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों आदि से अनुरोध है कि राजभाषा विभाग को भेजी जाने वाली तिमाही रिपोर्टें तत्काल प्रभाव से केवल ऑनलाइन ही भेंजे । वित्तीय वर्ष 2012-13 की पिछली रिपोर्टें अर्थात् जून, सितंबर और दिसंबर 2012 को समाप्त होने वाली तिमाही की रिपोर्टें भी विधिवत ऑनलाइन भरकर राजभाषा विभाग को भिजवा दें ।

5. राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय अपने क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/उपक्रमों व बैंकों इत्यादि के लिए उपरोक्त नई सूचना प्रबंधन प्रणाली के प्रयोग के लिए समन्वय का कार्य करेंगे ।

6. रिपोर्टों के ऑनलाइन प्रेषण में कोई कठिनाई होने पर अधोहस्ताक्षरी अथवा वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (एनआईसी) श्री केवल कृष्ण से फोन नं.-23438178 पर सम्पर्क किया जा सकता है ।

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली का दिनांक 7 दिसंबर, 2012 का का.ज्ञा. 11014/18/2012-रा.भा. (प)

विषय : सरकारी कार्यालयों के पुस्तकालयों में हिंदी पुस्तकों की खरीद ।

राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष हिंदी की स्तरीय पुस्तकों की सूची तैयार की जाती है, ताकि केन्द्र सरकार के कार्यालय/ बैंक/उपक्रम आदि अपने पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों की खरीद कर सकें । इसी क्रम में "चयनित हिंदी पुस्तकों की सूची-2012" तैयार कर ली गई है, जो राजभाषा विभाग के पोर्टल rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है । कृपया, सूची पोर्टल से डाउन लोड कर लें । इसकी प्रिंटेड प्रतियां विभाग द्वारा कार्यालयों को अलग से उपलब्ध नहीं कराई जाएंगी ।

2. सभी मंत्रालय/विभाग कृपया राजभाषा विभाग द्वारा जारी पुस्तक सूची में से अपने-अपने पुस्तकालयों तथा अपने संबंध/अधीनस्थ कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि के लिए हिंदी पुस्तकों की खरीद हेतु निदेश जारी करें

पाठकों के पत्र

'राजभाषा भारती' के जनवरी-मार्च-2012 के अंक पत्रिका के मुखपृष्ठ एवं अंतिम पृष्ठ बहुत सुंदर एवं आकर्षक हैं। इस अंक में छपे छायाचित्रों से आपके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी मिलती है तो प्रकाशित सामग्री बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

इस पत्रिका में कृष्ण कुमार यादव के 'भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी के बढते कदम' और राज बहादुर गुप्ता द्वारा लिखित 'भविष्य के लिए जल की बचत', पठनीय हैं। साथ ही अन्य लेख भी पठनीय एवं ज्ञान से परिपूर्ण है।

पत्रिका के सुंदर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक बधाई।

—डॉ. सुदर्शन आयंगार

कुलनायक

गुजरात विद्यापीठ, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380014

'राजभाषा भारती' अंक 133 (जनवरी-मार्च-2012) अंक में संकलित सामग्री उच्च कोटि की है और सूचनात्मक जानकारी से युक्त है। 'हिंदी के अनन्य सेवक-फादर कामिल बुल्के' लेख के माध्यम से एक विदेशी विद्वान द्वारा राम भक्त बनने, रामकथा को अपने शोध का विषय बनाने एवं तदनंतर हिंदी जगत को अंग्रेजी शब्दकोष का अमूल्य उपहार दिए जाने संबंधी भावनात्मक जानकारी मिली। 'प्रयोजनमूलक हिंदी : मीडिया और विज्ञापन' लेख के माध्यम से हिंदी के प्रयोजनमूलक रूप की विस्तृत जानकारी मिली। धर्म, संस्कृति स्थापत्यकला और वास्तुकला के संदर्भ में बौद्ध धर्म द्वारा किए गए योगदान के संबंध में 'भारतीय कला एवं बौद्ध धर्म की देन' लेख के माध्यम से अमूल्य ज्ञान प्राप्त हुआ। 'भूमण्डलीयकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम', 'भविष्य के लिए जल की बचत' तथा 'असम के तुलसी : शंकरदेव' लेख उल्लेखनीय हैं।

उक्त अंक के माध्यम से देश भर में विभिन्न केन्द्रीय कार्यालयों, मंत्रालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठानों द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशालाओं, हिंदी पखवाड़े तथा हिंदी बैठकों की भी जानकारी प्राप्त हुई जिसके लिए आपको कोटि-कोटि धन्यवाद।

'राजभाषा भारती' के उक्त अंक में समाहित सामग्री तथा उसके सुन्दर प्रस्तुतिकरण के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई।

—राजन

उप महाप्रबंधक

दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय : 1, 10वां तल, हंसालय बिल्डिंग, 15, बाराखम्बा रोड, नई दिल्ली-110001

राजभाषा विभाग के त्रैमासिक पत्रिका 'राजभाषा भारती' के 133 (जनवरी-मार्च-2012) में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए आपके द्वारा उठाए गए कदम राजभाषा अधिकारियों को प्रेरणादायक सिद्ध हुए हैं। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री अत्यंत रोचक एवं प्रभावोत्पक हैं। सम्पादक मण्डल का कार्य सराहनीय है।

—नागेश आर. अय्यर

निदेशक

सी.एस.आई.आर. केंपस, तरमणी, चेन्नै-600113

'राजभाषा भारती' अंक 133 (जनवरी-मार्च-2012) पत्रिका में विभिन्न राज्यों में उत्साहपूर्वक सम्पन्न किए गए पखवाड़े एवं कार्यशालाओं के दौरान की चित्र समाचार की झलकियों को बहुत ही सुन्दर रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिसके लिए संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका में डॉ. बैजनाथ प्रसाद एवं प्रो. जौहरा अफज़ल द्वारा लिखे गए क्रमश: लेख 'राजभाषा का विकास' एवं 'राजभाषा और भारतीयता', उक्त लेखों के माध्यम से बहुत ही ज्ञानवर्धक जानकारी दी गई हैं, जोकि कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाने में काफी योगदान प्रदान करते हैं । पत्रिका में अन्य सभी लेख, रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रयोग को आगे बढ़ाने की दिशा में सहायक हैं ।

—मनोहर लाल
कार्यालय अधीक्षक (राभा)
इरकॉन इंटरनेशनल लि. कार्यालय : सी-4, डिस्ट्रिक्ट सेंटर, साकेत, नई दिल्ली-110017

आपके द्वारा प्रेषित अप्रैल-जून तक की 'राजभाषा भारती' प्राप्त हुई धन्यवाद । हम हिंदी साहित्य वाले कभी-कभी निराश हो जाते हैं । हमारी भाषा हिंदी होते हुए भी इस देश में—यहां तक कि हिंदी प्रदेश में भी अंग्रेजी का बोल बाला है । बाजार में जाओ तो दुकानों के नाम अंग्रेजी में ही लिखे हुए मिलते हैं । अंग्रेजी सिखाने के (बोलने और लिखने) दोनों तरह के न जाने कितने विद्यालय खुल गए हैं परन्तु अच्छी हिंदी सिखाने.वाला एक भी विद्यालय नहीं पाया । यह सब क्या है ? आपका प्रयत्न अच्छा है । संपूर्ण देश में हिंदी दिवस मना कर आपने एक नई जागरूकता पैदा की है उसी का परिणाम है कि आंकड़ों में हिंदी बोलने वाले सर्वाधिक हैं । हिंदी के प्रति जो ममता और लगाव होना चाहिए वह नहीं दिखाई देता । हमारी यही पीड़ा है । इसका निराकरण आपको ही करना है । भाषा प्रचार को इतना विस्तार दिया जाए कि चमत्कार हो जाए । हिंदी के प्रति प्रेम देश प्रेम को बढ़ावा देता है जब कि अंग्रेजी के प्रति प्रेम अथवा उसका व्यवहार हमें अन्य कुछ देशों से जोड़ता तो है पर अपनी जमीन से तोड़ता भी है ।

—डॉ. सरोजनी कुलश्रेष्ठ
विदुषी एवं साहित्यकार, सी-56, सैक्टर-40 नौएडा-201303 (यू.पी.)

'राजभाषा भारती' अंक 133 (जनवरी-मार्च-2012) में डॉ. पंचाल द्वारा लिखित फादर कामिल बुल्के पर लिखे लेख को पढ़ कर बहुत ही अच्छा लगा । फादर बुल्के का हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में अद्वितीय योगदान है । आने वाली पीढ़ी इसे सदा याद रखेगी । हिंदी के लिए सम्पूर्ण जीवन समर्पित करने वाले इस महान आत्मा के कोटि-कोटि प्रणाम ।

—विजय कुमार तनेजा
27, बी, पूसा रोड नई दिल्ली-110005

'राजभाषा भारती' अंक 133 पत्रिका मे समाहित 'राजभाषा का विकास', 'प्रयोजनमूलक हिंदी', 'भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम', 'हिंदी के अनन्य सेवक-फादर कामिल बुल्के', 'असम के तुलसी-शंकरदेव' तथ 'भारतीय संस्कृति एवं कला को बौद्ध धर्म की देन' साथ ही 'भविष्य के लिए जल की बचत' इ. साहित्य सामग्री पठनीय, रोचक, संग्रहणीय एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेषत: 'हिंदी के अनन्य सेवक-फादर कामिल बुल्के' निंविवाद रूप से सराहनीय है । इसमें कोई दो राय नहीं की यह पत्रिका अद्वितीय कार्य कर रही है । इस पत्रिका का कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण इ. उत्कृष्ट तो है साथ ही मुख पृष्ठ पर भारत वर्ष एवं अशोक चक्र भी मन प्रसन्न कारक है । अंतिम पृष्ठ भी प्रेरणादायक है । आशा करता हूं कि इसी तरह प्रबुद्ध लेखकों की कलम से अमृतकण की वर्षा होती रहे ।

—दे. ना. बड़ो
अपर निदेशक
केंद्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड (श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
उत्तर अंबाझरी मार्ग, मुख्यालय, नागपुर-440 033

'राजभाषा भारती' का अंक 133 में "चिंतन" के पहले ही लेख "राजभाषा का विकास" में निस्संदेह इस मार्मिक प्रसंग को उठाया गया है कि हिंदी व्यावहारिक रूप में राजभाषा के तौर पर कार्यान्वित नहीं हो पाई है । लेखकार डॉ. बैजनाथ प्रसाद जी ने इसके लिए राह भी सुझाई है । इस सारगर्भित लेख के लिए साधुवाद । अन्य लेख भी अच्छे बन पड़े हैं । फादर कामिल बुल्के के बारे में अधिक जानकारी मिली । "असम के तुलसी-शंकरदेव" लेख से भी हिंदी इतर साहित्य की झलक मिली । राजभाषा संबंधी विधिक जानकारियां हिंदी के विकास के लिए सभी ओर चल रहे प्रयासों से अवगत कराती हैं । संपूर्ण पत्रिका पठनीय है ।

—डॉ. माधुरी गुप्ता

उप निदेशक (रा.भा.)

स्वापक नियंत्रण ब्यूरो पश्चिमी खंड 1, विं सं. 5, रामाकृष्णापुरम, नई दिल्ली-66

"राजभाषा भारती" का अंक 133 पत्रिका में संकलित लेख स्तरीय और उपयोगी सूचनाओं से पूर्ण हैं जिससे राजभाषा हिंदी के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है । "हिंदी के अनन्य सेवक-फादर कामिल बुल्के" तथा "हिंदी एवं तमिल भाषा की समानता एवं असमानता" शीर्षक लेख अच्छे हैं । आपके कुशल संपादन में पत्रिका अपना स्तर बनाए हुए है, यह प्रशंसनीय है ।

—डॉ. पन्ना प्रसाद

संयुक्त निदेशक (रा.भा.)

मुख्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110002

"राजभाषा भारती" का अंक 133 पत्रिका राजभाषा हिंदी में चल रही गतिविधियों की जानकारी और विभिन्न विषयों पर लेख काफी ज्ञानप्रद और रूचिकर हैं ।

पत्रिका के समग्र विकास के लिए शुभकामनाएं ।

—रेवा शर्मा

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, भारत मौसम विज्ञान विभाग

मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय मौसम भवन लोदी रोड, नई दिल्ली-110003

राजभाषा भारती अंक 133 (जनवरी-मार्च-2012) पत्रिका में समावेश सभी लेख एवं सामग्री ज्ञानवर्धक है । चिंतन के अंतर्गत श्री कृष्ण कुमार यादव का लेख 'भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम' और साहित्यिकी के अंतर्गत डॉ. परमानंद पांचाल का लेख 'हिंदी के अनन्य सेवक-फादर कामिल बुल्के' से अच्छी जानकारी प्राप्त हुई है । संस्कृति के अंतर्गत डॉ. माया दुबे से जहां 'भारतीय संस्कृति एवं कला को बौद्ध धर्म की देन' से भारतीय संस्कृति से परिचय हुआ वहीं पर्यावरण कॉलम के अंतर्गत 'भविष्य के लिए जल की बचत' संबंधी श्री राज बहादुर गुप्ता के लेख ने जल के महत्व पर प्रकाश डाला गया है । 'राजभाषा भारती' एक ऐसा माध्यम है जो राजभाषा हिंदी से संबंधी विभिन्न गतिविधियों की जानकारी पिछले 34 वर्षों से देती आ रही है । इसके लिए राजभाषा भारती बधाई की पात्र है ।

—राकेश मां "निशीथ"

निजी सचिव, पत्र सूचना कार्यालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001

पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । मुद्रण भी प्रशंसनीय है एवं इसमें प्रकाशित रचनाएं स्तरीय एवं संग्रहणीय हैं । इसमें प्रकाशित रचना 'राजभाषा और भारतीयता', 'राजभाषा का विकास' एवं 'असम के तुलसी: शंकरदेव' का समावेश पत्रिका को पठनीय बनाने में सार्थक सिद्ध हुआ है ।

पत्रिका के प्रकाशन से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों एवं संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

—जुगल किशोर
हिंदी अधिकारी
आयुध निर्माणी बोर्ड, "आयुध भवन" 10-ए, शहीद खुदीराम बोस रोड, कोलकाता-700 001

"राजभाषा भारती" का 133वां अंक भारत के नक्शे से सजा आवरण पृष्ठ, "हिंदी लिखें, हिंदी पढ़ें, आम आदमी से जुड़ें । राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय स्वाभिमान, हिंदी का करें सम्मान ।" पंक्तियों द्वारा वास्तव में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति हमारा रुझान खींचने हेतु हृदय पर दस्तक देता है । आपके प्रभावपूर्ण संपादकीय सहित, पत्रिका में संकलित सम्पूर्ण सामग्री पठनीय एवं वैविध्यपूर्ण है ।

"हिंदी के अनन्य सेवक-फादर कामिल बुल्के" तथा "असम के तुलसी: शंकरदेव" का जीवन एवं हिंदी को उनका योगदान हम सब के लिए प्रेरणा के स्त्रोत हैं । जहां एक ओर "चिंतन" में आपने विभिन्न विद्वानों के राजभाषा संबंधी लेखों को पत्रिका में स्थान दिया वहीं दूसरी ओर डॉ माया दुबे के लेख "भारतीय संस्कृति एवं कला को बौद्ध धर्म की देन" तथा राज बहादुर गुप्ता द्वारा लिखित "भविष्य के लिए जल की बचत" लेखों को पत्रिका में तरहीज देकर भारत की संस्कृति तथा पर्यावरण के प्रति आपने अपनी निष्ठा को दर्शाया है ।

—एल. वी. रवीन्द्र कुमार
उप महाप्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद अंचल कार्यालय,
पो.बॉ. नं. 48, सुपर मार्केट, गुलबर्गा-585 101-कर्नाटक

"राजभाषा भारती" का 133वां अंक का संचयन तथा संयोजन प्रशंसनीय है । राजभाषा हिंदी के उत्थान, प्रचार-प्रसार की उच्चकोटि की स्तरीय राष्ट्रीय पत्रिका है । राजभाषा सम्बन्धी गतिविधियों की भरपूर, विस्तृत फलक पर जानकारी इसमें समाहित है । इससे राजभाषा-राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति सम्मान, लगाव तथा सीखने की ललक एवं प्रेरणा मिलेगी । 'चिंतन' तथा 'साहित्यिकी' स्तंभ की रचनाएं विचारोत्तेजक, गंभीर तथा ज्ञानवर्द्धक हैं । संपादकीय प्रेरक और चिंतन परक है । निश्चय ही इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा के प्रति सेवा, प्रेम तथा सृजन की प्रेरणा मिलेगी ।

—ओम प्रकाश पाण्डेय
गेटबाजार (एन.जे.पी.) गुरूभाई होटल के पास
पो.-भक्तिनगर, सिलीगुड़ी पिन-734007 (पं. बंगाल)

विभाग की त्रैमासिक पत्रिका "राजभाषा भारती" के अंक 133 वाँ में राजभाषा के विकास पर अत्यधिक बल दिया गया है । पत्रिका के प्रत्येक अंक में सभी लेख संपूर्ण जनमानस को प्रेरित करता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास तीन बातों पर निर्भर करता है जिसका पहली सीढी-"राजभाषा भारती" के 133वें अंक में स्थापित है, इतना ही नहीं पत्रिका के अंदर प्रकाशित सभी रचनाएं अत्यंत ही रोचक और ज्ञानवर्धक है । सरकारी स्तर से कार्यालयों में इसके प्रयोग को बढ़ाने के लिए हम सबों को सदैव प्रयासरत रहना होगा ।

आपके कुशल संपादन एवं बहुमुल्य प्रकाशन के लिए बधाईयों के साथ-साथ ढेरों सारी हार्दिक शुभकामनाएं ।

—पी. के. सेन गुप्ता,
सचिव (प्रभारी)
कलकत्ता डाक लेबर बोर्ड 20 बी, अब्दुल हमीद स्ट्रीट, कोलकता-700 069

"राजभाषा भारती" के अंक 133 पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं, लेख ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं । उत्कृष्ट रचनाओं एवं राजभाषा संबंधी गतिविधियों की सूचनाओं के सफल संकलन और संपादन के लिए पूरे संपादक मंडल को हमारी हार्दिक बधाई एवं नववर्ष की शुभकामनाएं ।

—जे. टी. राधाकृष्णा
विमानपत्तन निदेशक
मंगलूर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बजपे-पि.ओ.-574 142

राजभाषा भारती अंक 132 पत्रिका में आपने विविध विषयों पर चयनित काफी उपयोगी और पठनीय सामग्री का समावेश किया है, जोकि सराहनीय है । इस रचनात्मक कार्य के लिए संपादक मण्डल बधाई का पात्र है । इस पत्रिका के माध्यम से विभागीय प्रतिभाओं को प्रोत्साहन मिलेगा और इससे कार्यालय से राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अनुकूल वातावरण भी बनेगा ।

—टी.वी. चांदोरकर
प्रभारी सहायक निदेशक (राजभाषा)
कृते उप निदेशक (अभियांत्रिकी) आकाशवाणी, इन्दौर (म.प्र.)

पत्रिका में निहित सभी रचनाएं एवं लेख सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक हैं । श्री कृष्ण कुमार यादव की लेख 'भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी के बढ़ते कदम' बहुत ही पठनीय और ज्ञानवर्द्धक हैं ।

सभी रचनाकारों एवं संपादक-मण्डल की पत्रिका के श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए बधाई और पत्रिका की बहुमुखी विकास एवं उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं ।

—सूर्यभान गौतम
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
कृते एयरपोर्ट निदेशक चेन्नै एयरपोर्ट, चेन्नै-27

सेवा से सेवानिवृत्ति

बहुत आसां नहीं थी डगर ये, मगर नाम लेकर मैं उनका चलता गया ।
थिरके थे पैर, कांपे थे हाथ, मगर काम फिर भी मैं करता गया ।
कभी यहां से वहां, कभी इधर से उधर टोकरा जिम्मेदारी का शराफ़त से उठाता गया ।

लिपिक से एस.ओ. फिर एस. ओ. से अंडर सैक्रेटरी
सफर लंबा था, मगर पकड़ हिम्मत की डोर मैं आगे बढ़ता गया ।
मेरी कामयाबियां मेरी नज़दीकियां बन गईं और मैं मंजिल पर मंजिल चढ़ता गया ।

कभी गुड, कभी वैरी गुड और कभी आउट स्टैंडिंग
जिस पद, जिस विभाग में रहा, मिसाल बन काम अपना मैं करता गया ।
सरदार और हिंदी क्या मेल, कुछ लोग ऐसा समझते हैं दोस्तों
मगर नोट हिंदी में लिख इस कहावत को मैं झुठलाता गया ।

धर्म नाम, काम सब धर्म यही मान कर्म मैं अपना करता गया ।
जीवन की पावन धारा में पता नहीं कहां कहां से मैं गुजरता गया ।
आज सोचता हूं कि अब मैं क्या हो गया हूं, सेवानिवृत्ति एक अहम
पहलू है दोस्तों, पाके पी.पी.ओ. आज मैं सीनियर सिटीजन हो गया हूं ।

—स. धर्म सिंह
अवर सचिव (सेवानिवृत्ति) (31-03-2013)
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली

MGIPRRND 1855/HA/2013—5,000

दिनांक 22 फरवरी, 2013 को बेंगलूर में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन में आशीर्वचन देते हुए सचिव राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय श्री अरुण कुमार जैन जी ।

दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का राजभाषा सम्मेलन में पुरस्कार प्रदान कराते हुए सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय श्री अरुण कुमार जैन जी ।

प.सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

वार्षिक कार्यक्रम 2013-14 के बिंदु विशेष

- यह जरूरी है कि संसदीय राजभाषा समिति की रिपोर्ट के आठ खंडों पर जारी किए गए राष्ट्रपति के आदेशों का मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों द्वारा अनुपालन किया जाए।
- कंप्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ाया जाए।
- संबंधित विभाग वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य हिंदी में छपवाकर उसे जनसाधारण के उपयोग हेतु उपलब्ध करवाने के लिए आवश्यक उपाय करें।
- हिंदी, हिंदी टंकण/आशुलिपि संबंधी प्रशिक्षण कार्य में तीव्रता लाएं ताकि तत्संबंधी लक्ष्यों को निर्धारित समय-सीमा में प्राप्त किया जा सके।
- राजभाषा कार्य से संबंधित अधिकारियों को विभाग के समस्त कार्यकलापों से परिचित कराया जाना आवश्यक है, जिससे कि वे अपने दायित्व अच्छी तरह निभा पाएं।
- मंत्रालय/विभाग/कार्यालय अपने विषयों से संबंधित संगोष्ठियां हिंदी माध्यम में आयोजित करें।
- प्रशिक्षण हेतु अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी नामित किए जाएं तथा संबंधित अधिकारियों द्वारा व राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों (उ.स/नि./सं.स.) द्वारा केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों का राजभाषाई निरीक्षण किया जाए।
- मंत्रालय/विभाग अपने यहां हिंदी सलाहकार समितियों का गठन/पुनर्गठन अविलम्ब करते हुए उनकी बैठक नियमित आधार पर सुनिश्चित करें। बैठक में लिए गए निर्णय का पूरी तरह अनुपालन किया जाए।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों (नराकास) की बैठकों का नियमित आधार पर आयोजन किया जाए तथा इनमें राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी (उ.स./नि./सं.स.) भी समय-समय पर भाग लें।
- संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु राजभाषा संबंधी अनुदेशों का अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए। जानबूझकर राजभाषा संबंधी आदेशों की अवहेलना के लिए मंत्रालय/विभाग अनुशासनात्मक कार्रवाई करने पर विचार कर सकते हैं।
- तिमाही प्रगति रिपोर्ट और वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट प्राप्त करने हेतु राजभाषा विभाग ने एक वेब आधारित ऑनलाइन सिस्टम विकसित करवाया है। केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों/ उपक्रमों/बैंकों से अपेक्षित है कि आगे से सभी रिपोर्ट राजभाषा विभाग को उपरोक्त ऑनलाइन सिस्टम के माध्यम से ही भेजें। यह सिस्टम विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.nic.in पर उपलब्ध है।

राजभाषा विभाग सभी केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं केंद्रीय उपक्रमों से, समस्त कार्यपालिका को राजभाषा प्रयोग सम्बन्धी सौंपे गये संवैधानिक और सांविधिक दायित्वों के निष्पादन में, और वर्ष 2013-14 के वार्षिक कार्यक्रम में उल्लिखित लक्ष्यों की पूर्ति की दिशा में अभीष्ट व स्वैच्छिक समर्थन की आशा और अपेक्षा करता है।

मार्च, 2013

गृह राज्य मंत्री (एस.)
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), एनडीसीसी-II भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित।